Sri Pratap College
SRINAGAR
LIBRARY

Class No.
Book No.
Accession No.

इन्तजार

१११[illegible]

[illegible] Pratap Coll[illegible]

नरेन्द्र शर्मा

Sh. Ghulam Mohamed & Sons
Booksellers & Publishers
MAISUMA BAZAR.
SRINAGAR.

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७

प्रकाशक :
सन्मार्ग प्रकाशन
१६-यू० बी०, बंग्लो रोड
दिल्ली-७.

30222

मूल्य :
पांच रुपये

Library
Pratap College
SRINAGAR

मुद्रक :
शुक्ला प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
हरिहर प्रेस, दिल्ली-६

: १ :

"और पीओ।"

"खूब पीओ।"

"पीओ और जीओ।"

"इसी का नाम जीवन है।"

"है पीने की चीज इसे बार-बार पी। हजार बार पी, पीता जा रोता जा···रोता जा और पीता जा, इसके हर घूंट में जीवन की सांस धड़कती है। हर जाम पर नया जीवन नाचता है, यह भी एक संसार है, इस संसार में खो जा।"

"यह शराब नहीं, अमृत है अमृत···! लोग भी कितने पागल हैं जो इस अमृत को जहर कहते हैं। यह संसार भी बिलकुल पागल है जो जीवन को मौत कहता है, इस संसार को क्या पता है कि जब किसी इन्सान को तन्हाइयां डसने लगती हैं, एकांत में उसका दम घुटने लगता है, जब उससे हर खुशी रुठ जाती है, जब कोई सहारा उसे नहीं मिलता, तब वह पागल हो उठता है। इस पागलपन को दूर करने के लिये यही शराब इसको सहारा देती है···।"

"शराब तो दुनियां की नजरों में जहर है!"

"मैं क्या हूं?"

"यह मैं नहीं जानता, दुनिया भी नहीं जानती। बस शराब, और कोई नहीं जानता। इतनी बड़ी दुनिया में मेरा है ही कौन? यही एक शराब जिसे लोग जहर कहते हैं। मैं इसे जहर क्यों कहने लगा भला?"

वह स्वयं ही बड़बड़ता रहा और स्वयं ही शराब पीता रहा। अधजली सिगरेट अब भी उसके हाथों में सुलग रही थी। वह धीरे-धीरे शराब का घूंट हलक से नीचे उतारता और अधजली सिगरेट में कश लगाता।

वह अपने कमरे में बैठा शराब से दिल बहला रहा था, नौकर बाहर अपने-अपने काम में लगे हुए थे। काम भी क्या था इन नौकरों के पास केवल भाग दौड़, इधर-से-उधर, उधर-से-इधर, यही वे सारा दिन करते थे।

बड़े आदमी बड़ी कोठी, कारें, यह सब क्या है?

कोई नहीं जानता, यह केवल शराब जानती है। इस सूनी कोठी की जिंदगी है, शराब के साथ ही······।

दरवाजे पर खड़े निहाल चाचा ने उसका काल्पनिक ताना-बाना तोड़ दिया। निहाल चाचा जो इस कोठी का सबसे पुराना नौकर है, जो उसे सबसे अधिक प्यार भी करता है।

"छोटे सरकार!"

"हाँ निहाल चाचा।"

"म···म···म···"

"तुम कुछ कहना चाहते हो निहाल चाचा!"

"हाँ छोटे सरकार।"

"फिर कह डालो।"

"छोटे सरकार, सच पूछो तो मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूँ।"

"फिर कह डालो न सोच क्या रहे हो?"

"अभी नहीं···छोटे सरकार, अभी नहीं···अभी समय का इन्तजार करो।"

…"इन्तज़ार…इन्तजार…न जाने तुम्हारा यह इन्तजार कब समाप्त होगा ?"

"हो जायेगा छोटे सरकार, अवश्य हो जायेगा।"

"न भी होगा तो कौन-सी दुनिया समाप्त होगी। हम ही समाप्त होंगे, फिर भी यह इन्तजार…आशा…इन्हीं के इर्द-गिर्द तो यह दुनिया घूमती है। अच्छा बताओ डैडी आ गये।"

"अभी नहीं।"

"वह क्यों आने लगे, उन्हें इस घर की क्या चिंता है।"

"चिंता तो बहुत है छोटे सरकार।"

"झूठ…बिलकुल झूठ, तुम भी झूठ बोलते हो, डैडी भी झूठ बोलते हैं। इस घर का हर व्यक्ति झूठ बोलता है। सच्ची है तो केवल यह शराब, जो हर झूठ को छुपा लेती है। हर गुनाह पर पर्दा डाल देती है।" यह कहकर शराब का गिलास उसने होठों में लगा लिया।

"छोटे सरकार अब बस करो बहुत पी चुके।"

"अभी कहां निहाल चाचा, अभी तो मैंने पीनी शुरू की है, अभी डैडी आयेंगे, उनके साथ कोई सुन्दर-सी लड़की होगी। वह उसके साथ डांस करेंगे, शराब पिएंगे। डैडी को कारोबार से फुरसत नहीं। जब वह कभी फुरसत पाते हैं तो लड़कियों के साथ चल देते हैं। क्लब जाते हैं, डांस करते हैं, डैडी बड़े आदमी हैं न, बड़े आदमियों की बातों को कौन समझ सकता है।"

"छोटे सरकार! आप इन बातों के बारे में क्यों सोचते हैं ?"

"इसलिये कि मेरे बारे में कोई नहीं सोचता।"

"आपको यहां किस चीज की कमी है ?"

"सच्चे प्यार की, जिसके लिये मैं बचपन से भटक रहा हूं, और शायद जीवन भर भटकता रहूंगा। खैर छोड़ो, इन बातों को निहाल चाचा, तुम आजकी बात करो क्योंकि महाकवि कालीदास ने कहा है।

"जीवन केवल आज का नाम है।"

"जो आने वाले कल को सुन्दर बनाता है।"

"नई सुबह को हजार बार प्रणाम करो, क्योंकि यह तुम्हारे लिये नहा जीवन लाई है।"

"यही है अपने देश के महाकवि कालीदास।" वह दीवार पर लगी तस्वीर की ओर इशारा करता है।

"छोटे सरकार, आप छोटी-सी उम्र में इतने बड़े आदमियों की बातें करते हैं, परन्तु स्वयं······"

"मैं स्वयं क्या हूं—? तुम यही कहना चाहते हो न।"

"हां छोटे सरकार।"

"मुझे यही सिखाया गया है, इस घर में यही होता आ रहा है, निहाल चाचा तुम जानते हो, शहनशाह अकबर के दो बड़े लड़के बहुत छोटी आयु में ही स्वर्गवास हो गये। क्यों···", वह स्वयं ही प्रश्न करता है।

"केवल इसलिए कि उन्होंने दस वर्ष की आयु में ही शराब पीनी शुरू कर दी थी। शराब जो इन्सानी बुद्धि को भ्रष्ट करती है। शराब के पश्चात् आदमी को वह···अकबर जैसे महान् शासक के महलों में आम था। भोग-विलास ने ही इन शाहजादों को मौत की गोद में फेंका।"

"निहाल चाचा यहां भी यही कुछ हो रहा है? अन्तर केवल इतना है कि वह एक महाराजा का महल था। यह एक करोड़पति का, और मुझे लगता है मेरा अन्त भी वही होगा जो अकबर महान् के दो लड़कों का हुआ है।

"छोटे सरकार···यह आप क्या कह रहे हैं, निहाल चाचा आगे बढ़कर उसके मुंह पर हाथ रख देता है।"

"मैं ठीक कहता हूं।"

"भगवान ऐसा न करे।"

"भगवान कुछ भी नहीं करता, यह केवल इन्सान की अपराधी आत्मा की उपज है कि वह अपने गुनाहों को भगवान की आड़ में छुपाना चाहता है, नहीं तो भगवान इन बातों को कहाँ सहन करता।"

"बड़े सरकार आ गये···बड़े सरकार आ गये···?" कोठी के चारों ओर नौकर भाग रहे हैं।

"डैडी के साथ आज भी एक सुन्दर-सी लड़की है। यह उनका दैनिक कार्य है। इसे भला वह कैसे भूल सकते थे।"

उसने डैडी और लड़की को देखकर क्रोध के मारे अपने दोनों होंठ सुकेड़ लिए।

खूब, बहुत खूब इस घर का हर अन्दाज निराला है। इसकी हर बात अनोखी है। मम्मी कहीं···डैडी कहीं···जब वह बालक था तो इन चीजों के बारे में नहीं समझता था। अब वह इन सब बातों को समझने लगा है। वह फूलों को मसलते हुये नहीं देख सकता। कलियों को कुचलते नहीं देख सकता। उसके अन्दर एक आग-सी लगती है। जब आग तेज हो जाती है तो वह पुस्तकों का सहारा लेता···जब पुस्तकें भी सहारा नहीं दे सकतीं तो शराब···शराब···।

दूसरा प्रेम का नाटक जारी है···।

सहसा एक चीख उसके कानों से टकराती है, चीख···कैसी चीख··· मजबूरियों की···जवानी की···।

उसने महसूस किया जैसे कालीदास भी इस चीख को सुनकर रो पड़ा हो···।

वह जल्दी से उठा और बाहर निकल गया।

: २ :

पत्थर और तारकोल की सड़क पर उसके कदम तेजी से उठ रहे हैं। वह एक कार के नीचे आते-आते बचा।

"ईडियट कहीं का।" कार के अन्दर बैठी किसी औरत की यह अंग्रेजी गाली उसके कानों से टकराती है।

उसके अन्दर के किसी कोने से कोई सोया हुआ देशभक्त जैसे बोलने लगा हो।

"हम भारतीय विदेशी शासन के विरुद्ध कितने वर्षों तक लड़ते रहे। इसके लिए कितने लोग शहीद हुए। कितने जेलों में गये, कितनों ने लाठियाँ खाईं। यह तो एक लम्बी तारीख है, आज आजादी के इतने वर्षों के पश्चात् हमें अपने देश की भाषा बोलते हुए शर्म आती है, फिर कार वालों को तो हर पैदल चलने वाला इन्सान ईडियट ही नजर आता है।"

वह अपने आप पर हँस देता है, क्योंकि वह जानता है कि इन कारों के पीछे कितनी कहानियाँ छुपी पड़ी हैं। अभी-अभी उसने एक मासूम और भोली-भाली लड़की की चीख सुनी थी। वह भी तो इन कारों का ही कर्म था।

उसके कदम और तेज हो जाते हैं, एक सुनसान-सी सड़क पर वह गुजर रहा है, जिसके एक किनारे पर बैठी भिखारिन जिसका रंग आब-नूसी लकड़ी की भांति काला है, अपना सीना खोले काली-कलूटी छातियों से बच्चे को दूध पिला रही है, वह एक पल के लिए वहां रुक जाता है, और वृक्ष की ओट में खड़ा हो उस दूध पीते बालक की ओर देख रहा है, जिसके मुंह में माँ की दूध भरी छाती है, जिससे चुसर-चुसर कर दूध पी रहा है। दूसरा हाथ दूसरी ओर की छाती पर रखा है।

छातियां नहीं यह ममता है। वह स्वयं ही बोल उठता है—"नः ना …जो औरत अपने बच्चे पर निछावर करती है, यह मां है मां! भारतीय मां, जिसे पश्चिम वाले नहीं समझेंगे।"

वह फिर आगे चल देता है।

वही होटल है।

वह जल्दी से अन्दर दाखिल हो जाते हैं।

कुछ लोग इसे इस हालत में देखकर घुटने लगते हैं, क्योंकि उसके कपड़े बेढंगे हैं, बाल उलझे हुये हैं। ऐसे कपड़े पहनकर लोग इतने बड़े होटल में नहीं आते, यह बात वह भी भली-भांति जानता है। वह यह भी जानता है उसे इस समय कितनी नजरें घूर रही होंगी। वह बुझे हुये दिल से हँस देता है। मनुष्य के ऐसे विचार पर, जो सदा दूसरे को अपने से घटिया समझने का यत्न करता है। इस युग में अब इन्सान का कोई मूल्य ही नहीं रहा। कपड़ों का मूल्य है। कारों का मूल्य है। धन की इज्जत है। सोने का मूल्य है।

बहुत सारी औरतों ने उसे देखकर अपने होंठ सुकोड़ लिये, क्योंकि इन औरतों के कपड़े बड़े सुन्दर हैं। इनके चेहरे की सुन्दरता पाउडर की कृपा से जीवित है, इनके होंठों की लाली बाजार से खरीदी हुई है। इनमें से बहुत-सी औरतों को वह जानता है। यह वे औरतें हैं जो पैसे से प्यार करती हैं। अपने पति से अधिक प्यार इन्हें सुन्दर कपड़ों, पाउडर,

क्रीम, लिपस्टिक से है। इन चीजों से ही इनकी सुन्दरता जीवित रहती है।

एक बैरा उसके निकट आता है। वह उसे नमस्ते करने के पश्चात् एक कैबिन की ओर में ले जाता है। कुछ लोगों की घृणा उसका आदर देखकर और भी बढ़ जाती है।

वह कैबिन में जाकर एक सोफे में धँस जाता है। होटल का बैरा जानता है वह क्या चाहता है। उसकी आँखों में एक चमक पैदा होती है, होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट। अंधेरे के इस राही को रोशनी की जरूरत है। वह रोशनी कहाँ मिलेगी ?

बैरा शराब की आधी बोतल मेज पर रखता है।

यह रोशनी है, अंधेरे में भटकने वाला इन्सान रोशनी को देखकर मुस्करा उठता है, रोशनी के साथ सोडा, गिलास। रोशनी का मुँह खोला जाता है, रोशनी की किरणें अंधेरे में फैल जाती हैं, वे किरणें जिन्हें लोग शराब कहते हैं।

बैरा, रोशनी को गिलास में डालता है, फिर उसमें सोडा मिलाता है, सोडा मिलाने से गिलास में से छों···छों···करती फुंकार-सी निकलती है, जैसे उसमें उबाल आ गया हो। फिर बर्फ के टुकड़े उस रोशनी में घुल जाते हैं। रोशनी एक बार फिर बोल उठती है, जैसे कह रही हो "इस दुनिया को अंधेरा पसंद है। क्योंकि अंधेरे में हर गुनाह होता है।"

रोशनी अन्दर जाती है। आत्मा का अंधेरा कुछ कम होता है, एक के पश्चात् दूसरा जाम तैयार हो जाता है। वह भी इसी तरह अन्दर चला जाता है। अंधेरा कुछ और कम हो गया है। अब उसकी साँस पहले की भाँति नहीं घुट रही है,रोशनी···रोशनी···रोशनी···शान्ति··· शान्ति···अब रोशनी पहले से तेज हो गई थी।

"महेश बाबू !"

"हूँ।" वह बहुत लापरवाही से उत्तर देता है।

"आज आप बहुत उदास-उदास लग रहे हैं।"

"मैं उदासियों की गोद में पलकर ही जवान हुआ हूं।" इसके साथ ही रोशनी का एक गिलास और अन्दर चला जाता है।

"आप उदासी दूर भी तो कर सकते हैं।"

"जितना मैं इस उदासी को दूर करने का यत्न करता हूं, उतना ही वह मेरे निकट आती जाती है, फिर मुझे किसी की सहानुभूति नहीं चाहिए।"

"सहानुभूति और प्यार दोनों अलग चीजें हैं।"

"यदि अलग न भी हों तो मुझे क्या अन्तर पड़ेगा, क्योंकि मुझे प्यार का कुछ पता ही नहीं कि क्या होता है।"

"कई चीजों का पता नहीं होता मगर बाद में लग जाता है।"

"मुझे जिन्दगी में अंधेरे के सिवा किसी चीज का कुछ पता नहीं। वह अंधेरा जब सीमा से बढ़ जाता है तो मैं रोशनी की तलाश में निकल पड़ता हूं।"

"रोशनी तो आग में भी है।" बैरा बोलता है।

"आग इन्सान को जला देती है। इसके विपरीत रोशनी की तलाश में इन्सान जलता रहता है।"

"आज मैं आपको जलने नहीं दूंगा।"

"फिर वही हमदर्दी।"

"यह हमदर्दी नहीं, प्यार है।"

"प्यार...प्यार...यह सब बकवास है। प्यार पहले इन्सान को मां-बाप करते हैं। वही पवित्र प्यार मुझे नहीं मिला तो शेष प्यार को मैं क्या समझूं।"

"उससे आगे एक प्यार और भी है।"

"नहीं—नहीं...मुझे किसी प्यार की जरूरत नहीं।"

"महेश बाबू !...दुनिया का हर प्यार झूठा नहीं होता।"

"वह प्यार मेरे डैडी के भाग में आया है।"

"डैडी प्यार खरीदते हैं, आपको मिलेगा।"

"आखिर आज तुम चाहते क्या हो ?"

"कुछ नहीं केवल आपकी खुशी।"

"खुशी, वह भी मेरे लिए, क्या इतनी बड़ी दुनिया में कोई ऐसा है, जो अपनी खुशियाँ मेरे हवाले कर दे ?"

"आप स्वयं ही तो कहा करते हैं, जिन्दगी केवल आज का नाम है"

"हाँ इसीलिए तो शराब पीनी आरम्भ कर दी है, यह रोशनी है, यह चिनगारी है। यह धोखा नहीं देती।"

"इसके अलावा भी एक जिन्दगी है महेश बाबू।"

"मुझे उसकी तलाश ही नहीं।"

"वह आपकी तलाश कर रही है।"

"झूठ है, धोखा है।"

"परीक्षा करके देख लीजिए।"

"मैं परीक्षा करना ही नहीं चाहता।"

"कोई आपके लिए सुलग रहा है।"

"कोई अब सुलग रहा है, मैं तो सदियों से दिये की भाँति सुलग रहा हूँ।"

"मैं दिये का तेल हूँ।" कैबिन में एक हलचल-सी मचती है। कोई सुन्दर शक्ल अन्दर आती है, जैसे बादलों का सीना चीर कर चाँद निकल आया हो। 'इवनिंग इन पैरिस' की खुशबू सारे कैबिन में फैल जाती है।

रोशनी...सदियों के अंधेरे के पश्चात् यह रोशनी कहाँ से आ गई। उसकी आँखें चकाचौंध हो जाती हैं। वह एक ही नजर से उसे देख सका। क्योंकि उसके शरीर से निगाहें फिसल रहीं थीं।

बैरा चुप करके चला जाता है।

अब रोशनी उसके सामने बैठ जाती है, रोशनी बहुत तेज है, वह

कभी शराब की बोतल को देखता, कभी खाली जाम को घूरता है। रोशनी ने समझ लिया। उसने बोतल उठाकर उसका जाम भर दिया। सोडा डाल दिया। सुन्दर हाथों से बर्फ के टुकड़े।

"नहीं······नहीं······आप कष्ट न करें।" वह पुकार उठा।

"कष्ट नहीं, यह तो खुशी की बात है।" कोमल अधर डोल उठे जैसे फूल की दो पंखुड़ियां हिलने लगी हों।

"यह सहानुभूति······किसलिए······क्यों ? उसके अन्तर का मानव विद्रोह कर उठा। उसने सामने बैठी रोशनी की ओर निहारा, जिसकी सफेद साड़ी चमक रही थी। बालों की एक मोटी लट माथे पर आ गिरी थी······मोटी-मोटी काली आंखों में काजल की सलाइयां······सुन्दर मुखड़ा······गुलाब की पंखुड़ी जैसे होंठ·········रसीले, रस से भरे।

वह देख रहा है। उसे भी प्रतीत हो रहा है कि उसका दिल अपने आप धड़क रहा है। शरीर के कण-कण से आग निकल रही है, जैसे सारे शरीर में चींटियां-सी रेंग रही हों।

"पी लीजिए।" हसीन गीत ने कहा।

वह उसकी झील समान आंखों में डूब गया। जाम अब भी उसके हाथों में कांप रहा था, वह होंठो तक नहीं गया।

रोशनी······नयी रोशनी। वह उसे घूर रही थी। वह अन्दर-अन्दर सुलगने लगा। ईवनिंग-इन-पेरिस और माईकाफैक्टर की सुगन्ध उसके नथनों में बराबर घुस रही थी। उसका कोमल चेहरा······लम्बी पलकें······झुकी नाक······रसीले अधर······फूटता यौवन······नीचे सीने के दो तीखे उभार······अर्ध नग्न पेट······जिसके ऊपर हल्के-हल्के भूरे रंग के बाल मानो नई घास फूटती हो।

उसने घबरा कर आंखें मूंद लीं···शराब का गिलास उसके होंठों से लग गया।

यह रोशनी ! नहीं औरत······औरत नहीं लड़की है। लड़की भी नहीं······सुन्दरी है······इन्द्र बाला है। यौवन और सुन्दरता के संगम का नाम लड़की होता है। परन्तु लड़कियाँ तो इससे पहले भी उसने देखी हैं। हमेशा उसने नफ़रत से होंठ सिकोड़े हैं। परन्तु यह सब क्या है। वह इस लड़की के सम्मुख गुम-सुम क्यों बैठा है। क्यों नहीं कहता "निकल जाओ। उठ जाओ मेरे सामने से। मैं खरीददार नहीं हूँ।"

सहसा उसके कानों में एक चीख सुनाई पड़ी। यह मजबूर और बेसहारा लड़की की चीख थी। उसने नफरत से अपने दोनों होंठ सिकोड़ लिये। फिर सामने बैठी रोशनी की ओर देखा।

"आप क्यों आई हैं ?" दिल पर पत्थर रख कर उसने प्रश्न किया।

"दिल चाह गया।"

"दिल ! यह दिल क्या होता है ?"

'जो धड़कता है।"

"दिल तो हर एक सीने में धड़कता है।"

"तभी तो मैंने आपको देखा।" उसने अपने मदभरे नयन उसकी आँखों में गाड़ दिये।

"आप गलत जगह आ गई हैं।" वह जैसे उकता गया।

"मैं गलत जगह नहीं आई। आप गलत सोच रहे हैं।"

"मैंने कभी सोचा ही नहीं।" उसने अपनी व्याकुलता छुपाने का प्रयास किया।

"बहुत बातें कही नहीं जातीं। केवल चहरे से पता लग जाता है।"

"मैं इन सब बातों से दूर हूँ।"

"मैं इन सब बातों में नहीं जाती। मेरा नाम नीलम है। मुझे प्यार से नीलू कहते हैं।" ईवनिंग-इन-पैरिस की सुगन्ध फिर उसके नथनों में घुस गई।

"मैंने आपको नहीं बुलाया।" उसके साथ ही उसे प्रतीत हुआ कि

वह खिंच रहा है।

"आप अँधेरे के मुसाफिर हैं। मैं रोशनी हूँ। अँधेरे के मुसाफिर रोशनी को बुलाया नहीं करते, उसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं।" उसकी साड़ी का पल्लू सीने से ढलक गया। उसका उभरा सीना बारीक ब्लाउज में से झाँक रहा था।

"रोशनी नहीं मुझे अँधेरा पसन्द है।"

"झूठ ? यदि आपको अँधेरा प्रिय होता तो शराब की रोशनी में अपने जीवन के अँधेरे के दर्पण को प्रतिबिम्बित करने का यत्न न करते।"

"संसार ने मुझे यह जहर दिया है जो मैं अमूल्य समझ कर पी लेता हूँ, हालांकि यह सबसे अधिक विषैला है। परन्तु दिल बहलाने के लिए मैं इसे रोशनी कहता हूँ। अमृत कहता हूँ। मनुष्य आदि से ही धोखा खा रहा है। धोखा न खाय तो वह जी नहीं सकता।"

"जब आप इस विष को अमृत समझ कर धोखा खा सकते हैं, तो मैं इससे बुरा विष नहीं हूँ।"

"परन्तु मैं एक जहर को छोड़कर दूसरे जहर का तजुर्बा नहीं करना चाहता।"

"यह तजुर्बा नहीं, जरूरत है।"

"मुझे इसकी जरूरत नहीं।"

"यह झूठ है।"

"वह कैसे ?"

"आपके नेत्रों की व्यग्रता बता रही है।" रोशनी करवट बदलती है। उसके सीने से साड़ी फिर ढलक गई। उसकी दृष्टि सीने के उभरे भाग पर जाकर रुकी। वह ब्लाउज में से आधा खुला दीख रहा था।

हाय ! यह क्या। वह पिघलता जा रहा है। उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही है। उसके हाथ उस उभरे भाग को मसलने के लिए

व्याकुल हो रहे हैं। वह उसकी आँखों में देखता है। वहाँ तो जन्म जात नशा टपकता है। उसके होंठों के पट धीरे-धीरे काँप रहे हैं। उसे लग रहा था मानो मेरे होंठ उस रोशनी के होंठों से मिलने को आतुर हो रहे हैं।

पहली बार, जीवन में यह सब कुछ पहली बार हो रहा है। वह तो किसी लड़की की ओर देखना पसन्द नहीं करता था। किसी लड़की से बात करने में भी उसे शर्म लगती थी। वह कालीदास का पुजारी था। किताबों का कीड़ा।

परन्तु यह नीलम है।...नीलम नहीं कोई जादू है। उसे धार्मिक किताबों की यह बात याद आ गई कि जब भगवान को किसी ऋषि-मुनि की तपस्या में खतरा पैदा हो जाता था, तब उसकी तपस्या को तोड़ने के लिए वह किसी अप्सरा को भेजता था और वह अप्सरा अपने यौवन के जादू से तपस्या भंग कर देती थी।

"तो क्या नीलम उसकी तपस्या को भंग करने आई है?" वह अपने से ही प्रश्न कर बैठा।

"आप क्या सोच रहे हैं?" यह नीलम की आवाज थी। उसने अपनी मृगनयनी आँखें फिर उसकी आँखों में गाड़ दीं और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

वह महसूस कर रहा है मानो संगमरमर की मूर्ति का हाथ उसके हाथ से छेड़छाड़ कर रहा है। नीलम अपनी लम्बी और पतली-पतली उँगलियों को उसके हाथ के चारों ओर नचा रही है।

नीलम की उँगलियाँ कितनी सुन्दर हैं मानो किसी चित्र की उँगली हों या चित्रकार ने अपने हाथों से कोई सुन्दर वस्तु तराशी हो। उनके होंठों की हँसी देखी तो उसे प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्डो का बनाया चित्र 'मोनालीसा' याद आ गया।

"मोनालीसा।"

"नीलम।"

वह दोनों की परछाईयों में खो-सा गया। उसे इन दोनों में कोई भेद दीख न पड़ता था। यदि नीलम मोनालीसा नहीं तो लियोनार्ड ने जरूर नीलम जैसी लड़की को देख कर चित्र बनाया होगा। नीलम बहार का पहला झोंका है···फूलों की सुगंध है···चांद की शीतल किरणों का प्रकाश है···नीलम रोशनी है···रोशनी। ज़ीवन के अंधेरे से निकल वह एकदम रोशनी में आ गया।

वह नीलम से बहुत कुछ कहना चाहता था पर उसका गला हर बार भर जाता था। दिल की आवाज गले में रुक क्यों जाती है। आज तक उसे जितनी भी लड़कियां मिलीं वह सबको धुतकारता आया। परन्तु नीलम को न तो वह धुतकार सकता है और न ही प्यार कर सकता है। बोतल में पड़ी शराब अब भी उसका मुंह चिढ़ा रही थी। वह उसे पी क्यों नहीं रहा? इतने समय में तो एक बोतल और आ जानी थी।

"आप शराब पीयेंगे।" नीलम के होंठ फिर धीरे-धीरे खुले।

"नहीं।"

"क्यों?" एक प्रश्न उभरा।

"बीरसिंह तो कहता था आप सारी रात पीते हैं।"

"तुम्हारा मतलब उस बेरे से है।"

"हां," उसने अपनी काली जुल्फों को बड़े अन्दाज से पीछे झटका दिया।

"वह ठीक कहता है। परन्तु न जाने क्यों मैं आज शराब पीना भूल गया हूं।"

वह मुसकरा दी। मोनालीसा मुसकरा रही थी···या नीलम! परन्तु उसे उसकी हंसी बड़ी प्यारी लग रही थी। उसे प्रतीत हुआ कि नीलम के हाथ उसके हाथो को अब जकड़े हुए हैं। उसका अर्ध नग्न सीना अब भी उसके अन्दर तूफान पैदा कर रहा था।

"चलो बाहर चलें, यहां तो बहुत घुटन है।"

उसने हाथ पकड़ कर उसे उठाया। और उसके हाथ में कितना आकर्षण था कि वह बराबर खिंचता जा रहा है। उसका दिल चाहता है कि नीलम को अपने दोनों हाथों में भरे और अपने सीने से लगा ले। उसके रसीलें होंठों पर होंठ रखकर जवानी का अमृत एक सांस में पी जाय तो ये दूर के सारे फ़ासले मिट जायें।

नीलम अब उसके बहुत करीब आ गई। बहुत करीब। उसके रसीले होंठ अब उससे दूर नहीं रहे। उसका उभरा हुआ सीना अब उसके हाथों से दूर नहीं। जवानी की अग्नि और भड़क उठी।

"रोशनी···रोशनी···सच्ची रोशनी।"

उसके हाथ बेक़ाबू से हो गये। उसने नीलम को अपने हाथों में भर कर सीने से लगा लिया।

"यहां नहीं।" नीलम छुई-मुई-सी होकर बोली और उसका हाथ पकड़ कर बाहर चली गई।

: ३ :

उसने अनुभव किया कि आज कार न लाकर उसने गलती की। यह ठीक है, वह इन संसारी बातों से बहुत दूर निकल चुका था। कार होते हुए भी उसे पैदल चलने में आनन्द आता था। कार में बैठकर तो उसे ऐसे लगता था जैसे सारी दुनिया से अलग हो गया है, अथवा वह एक कैदी है जो कार में बन्द है। कार से बाहर खुली हवा में चलने में कितना आनन्द आता है, यह पैदल चलने वाले लोग नहीं समझ सकते। यह तो कोई कार से नीचे उतरकर पैदल चलने वाला व्यक्ति ही समझ सकता है।

नीलम होटल से बाहर आई, बहारों की मलका, फूलों की रानी, चाँद की चांदनी, नीलम जो एक लड़की है, जो सुन्दर है, जो यौवन है, जिसमें प्यार है, इसके शरीर से 'इवनिंग इन पैरस' की सुगन्ध आ रही है। चौदवीं का एक चांद आकाश पर सुलग रहा है, नीलम के सुन्दर शरीर पर जब चाँद की शीतल किरणें पड़ीं तो वह भी सुन्दर ही लगी है, ऐसे लगता है जैसे चांद की सुन्दरता उसने चुरा ली हो।

वह होटल के बड़े गेट से बाहर निकला। आज उसके होठों पर वह उदासी नहीं, उसके साथ-साथ नीलम चल रही थी। धीरे-धीरे, जैसे

कोई परी आकाश से धरती पर आ गई हो। वह दरवाजे के बाहर एक विचित्र-सा सीन देखकर चौंक उठा, उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आया। उसने घबराकर आँखें खोलीं तो वही दृश्य फिर सामने आ गया।

हाय ! यह तो उसकी मम्मी है···यह किसी अन्य पुरुष के सीने से लगी हुई जोर-जोर से हँस रही है।

उसके अन्दर का सोया हुआ इन्सान जैसे निद्रा से जाग उठा हो। उसे सहसा वह चीख याद आ गई जो उसके कानों में गूंज उठी थी। वह दर्द भरी चीख फिर से जाग उठी थी। साथ ही अपने डैडी की फीकी हँसी भी सुनी। यह कैसा बदला है, यह विवाहिता औरत ! यह पतिव्रता स्त्री, जिसकी माँग का सिन्दूर किसी पराए की बाहों में मुसकरा रहा है। यह क्या तमाशा है ? औरत का यह कौन-सा रूप है ? कहीं यह प्रकृति का प्रतिशोध तो नहीं ? जिसे इन्सान समझ न सका हो।

वह अपने सीने पर पत्थर रख कर जल्दी से एक ओर को निकल गया। नीलम उसकी इस बात को नहीं समझ सकी। वह हैरान अवश्य हुई यह देखकर कि आखिर उसे एकदम से क्या हो गया ?

"आप बहुत तेज चलते हैं।" नीलम के होंट हिले।

"हाँ ! यहाँ आग लग रही है।"

"आग !" उसने अश्चय से पूछा।

"हाँ बहुत बड़ी आग—यहाँ से जल्दी चलो नीलम। कहीं किसी ऐसी जगह पर जहाँ ठंडक हो। यह आग इन्सान को न जलाये।"

"नीलम उसकी बात को नहीं समझ पाई। उसे क्या पता कि उसके मन में ज्वालामुखी सुलग रहा है।"

नीलम ने अपनी कार निकाली। छोटी-सी सुन्दर कार जो उसकी भाँति ही सुन्दर थी। वह दुबककर उसकी बगल में बैठ गया। नीलम के सुन्दर हाथ बड़े अन्दाज से कार के स्टेरिंग को घुमा रहे थे। नहीं-नहीं ...र हाथ इस काम के लिये नहीं बने, वह स्वयं ही बड़बड़ा उठा,

ओर साथ ही स्टेरिंग पकड़ कर कार को रोक लिया।

"क्यों—!" मद भरे नयन उठे, साथ ही पलकों के बोझल साये हिलते नजर आए।

"कार मैं चलाऊँगा।" उसने नीलम को एक ओर कर दिया।

"मेरा इतना ख्याल!"

'हर सुन्दर चीज का इतना ही ख्याल रखना पड़ता है।"

"मैं सुन्दर हूँ?" औरत अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो जाती है। अपनी प्रशसा की भूख हर औरत को होती है, यदि उसका चाहने वाला प्रशंसा करे तो इससे अच्छी बात उसके लिये और क्या होगी।

"हाँ, आप सुन्दर हैं।"

"उस शराब से भी अधिक।" वह व्यंग्य कसती है।

'वह शराब भी सुन्दर है, परन्तु आप उस शराब से अधिक सुन्दर हो।'

"आप नहीं तुम।" वह उसे समझाती है।

कार धीरे-धीरे चल रही थी, नीलम उसकी बगल में बैठी उसे रास्ता बता रही थी। वह बाजी हार गया था। नीलम जीत गई थी। नीलम की जो सुन्दरता है, जो यौवन है, जो एक गीत है, नीलम के पास सौंदर्य के खजाने हैं, नीलम कभी उदास नहीं होती। यह तो दूसरों की उदासी दूर करती है, नीलम रोशनी है रोशनी! यह रोशनी उसे जीवन में पहली बार मिली है।

नीलम बिल्कुल उसके समीप बैठी थी, वह उसके अंक में गिर गई, जैसे कोई सुन्दर फूल टहनी से गिर कर उसकी झोली में गिर गया हो। उस फूल की भीनी-भीनी खुशबू बराबर उसके नयनों में घुस रही थी। उसके हाथ बेकाबू हो रहे थे। गाड़ी का स्टेरिंग अपने आप डोल रहा था। गाड़ी हिचकोले खा रही थी, डगमगा रही थी।

"गाड़ी रोको।" नीलम चीखी।

"चलती गाड़ी रोका नहीं करते नीलम!"

"नहीं-नहीं गाड़ी रोको···खतरा है, बेकाबू होती जा रही है।" वह घबरा गई।

"मैं इस समय स्वयं बेकाबू हूँ।"

"यह गाड़ी है महेश इस समय की जरा-सी भूल भी हमें मौत के निकट ले जाएगी।"

"मौत···हा···हा···हा···मौत···"वह बेतहाशा हंसने लगा, इस हँसी को सुनकर वह स्वयं हैरान हो गया। जीवन में प्रथम बार वह इतना खुल कर हँसा था।

"ग्राप हंस रहे हैं।"

"हँस रहा हूँ, इस दुनिया के बारे में सोचकर जिसे यह दुनिया मौत कहती है, वास्तव में वही जिंदगी है। जिसे हम जिंदगी कहते हैं वह मौत है।" वह फिर हंसने लगा।

नीलम ग्राश्चर्य से उसके मुंह की ग्रोर देख रही थी, उसकी सुलगती नजरों में डर था···मौत का डर। महेश की बातों का डर।

"नीलम ! यह जिंदगी एक सपना है ग्रन्तर केवल इतना है, कुछ लोग ग्रच्छे स्वप्न देखते हैं, वह खुश रहते हैं। जो लोग बुरे स्वप्न देखते हैं, वे घबरा जाते हैं, डर जाते हैं। इस जीवन में कभी शांति नहीं ग्रा सकती। शांति यदि मनुष्य को चाहिए तो वह मौत में ही मिल सकती है। मौत ही मनुष्य को शांत करती है। शायद तुम्हें याद होगा नीलम ! इस शांति की खोज में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तप करते रहे, मगर वास्तविक सुख उन्हें मृत्यु के पश्चात ही मिला।"

ग्रब इस धरती के बारे में सोचो। विशेषकर इस दिल्ली की धरती के बारे में। कितनी सदियां बीत गईं इस शहर को बसे हुए। कितनी लड़ाइयां हुई हैं इस धरती में। उन लड़ाइयों को सामने रखकर सोचें। जहां हमारी कार चल रही है, इसके नीचे हजारों-लाखों का खून दबा पड़ा है। वह बेचारे लड़ते-लड़ते मारे गये, जिन्हें हम शहीद कहते हैं। ग्रब एक बात बताग्रो क्या मरने वाले इन्सान नहीं थे ?"

"थे।" वह जल्दी से उत्तर देती है।

"यदि वह इन्सान थे तो उनके सीने में हजारों इच्छाओं ने जन्म लिया होगा, उनके माँ-बाप ने उनके भविष्य के लिये क्या कुछ नहीं सोचा होगा। परन्तु उनको इस जीवन के बदले में मिला क्या ? यही मौत—मौत···केवल मौत···इस मौत को पाकर वह सदा के लिये समाप्त हो गये। उन्हें इतने अच्छे जीवन के बदले में मिला क्या ?"

"चुप हो जाओ···महेश ! भगवान के लिये चुप हो जाओ। कैसी बातें कर रहे हो ?"

"ऐसी बातें जिनसे सब लोग डरते हैं, परन्तु मैं नहीं डरता।"

"अच्छा-अच्छा, गाड़ी रोको। घर आ गया।"

एक कोठी के आगे उसने गाड़ी खड़ी कर दी।

नीलम ने घंटी का बटन दबाया।

अन्दर से एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला। नीलम को देखकर वह थोड़ा मुस्कराई, और फिर जल्द ही लोप हो गई है। वह सोफे में धंस गया और बहुत ध्यानपूर्वक हर चीज को देखता रहा।

नीलम का कमरा बड़ा ही साफ-सुथरा था। कमरे के एक कोने में रेडियोग्राम रखा था। दीवारों पर नई-नई फाइल पेंटिंग लगी हुई थीं। इन तस्वीरों में सबसे बड़ी तस्वीर अजन्ता की गुफाओं की थी, जिसमें एक आदमी स्त्री के सीने को अपने हाथों में······

और तब ?

वह कई सदियां पीछे को भाग जाता है। यह तस्वीर आज की नहीं, कई सौ वर्ष पहले की है, उस समय में चित्रकार आदमी और औरत की तस्वीरें बनाते थे। प्रेम उस समय भी प्रधान था। औरत आदमी की सब से बड़ी आवश्यकता थी। यह पत्थर-युग की तस्वीर है। आज भी वह स्त्री और पुरुष की कहानी अपने होंठों से सुना रही है। यह तस्वीर पुरानी होते हुये भी नई-नई सी लग रही है।

नीलम ने यह तस्वीर अपने घर में क्यों लगा रखी है। ऐसी तस्वीर एक जवान लड़की के कमरे में क्यों ? इसका क्या अर्थ है ? नीलम··· वह कुछ सोचते-सोचते रुक जाता है। क्योंकि नीलम मुस्कराती हुई आकर उसके करीब ही बैठ जाती है।

वह तस्वीर से नजरें हटकर नीलम की ओर देखता है। वह भी एक औरत है। सामने एक पुरुष से लिपटी हुई भी एक औरत है। वह पत्थर युग की औरत है, यह विज्ञान युग की। उस समय भी किसी चित्रकार ने किसी ऐसी ही औरत को देखा होगा, केवल कल्पना के सहारे तो ऐसी औरत नहीं बन सकती। औरत की जरूरत आज से नहीं युगों से चली आ रही है। नीलम के कमरे में लगा चित्र मुंह से बोल रहा है। मैं तुम्हारे लिये हूं तुम मेरे लिये हो। नीलम एक लड़की है।

नीलम स्वयं बड़ी सुन्दर है। उसका घर भी बड़ा ही सुन्दर है। उसने घर को बड़े ढंग से सजा रखा है।

नीलम···नीलम जो एक औरत है—लड़की है, वह औरत जिससे आज तक वह घृणा करता है। वह तो अंधेरे का साथी है। रोशनी उसे जीवन में कभी मिली ही नहीं, परन्तु यह नीलम तो अंधेरा नहीं, यह तो रोशनी है। आज दुनिया एकदम से बदल गई, अंधेरा अपने आप दम तोड़ गया।

नीलम इन्द्र के अखाड़े की परी है जो उतरकर धरती पर आ गई है। वह नीलम की ओर खिंच रहा है। मगर क्यों ? आखिर उसका नीलम के साथ रिश्ता क्या है ? यही पल-दो-पल का···क्या इतने थोड़े समय में ही इंसान एक दूसरे का हो सकता है।

वह अपने से ही प्रश्न कर बैठता है परन्तु इसके अन्दर का इन्सान जो पता नहीं कितनी देरी का सोया हुआ है, करवटें बदलते हुये बड़ी लापरवाही से कहता है—

"जिंदगी केवल आज का नाम है।"

उसने अनुभव किया कि महाकवि कालीदास की आत्मा फिर से वापस आ गई है। सामने दीवार पर लगी सदियों पुरानी तस्वीर मानो अपने आप सांस लेने लगी हो; मर्द के हाथ औरत के नंगे सीने पर हिल रहे थे। पुरुष औरत से प्यार कर रहा है। उसका हृदय एकदम से व्याकुल हो उठा है। उसने अनुभव किया कि मैं अन्दर-अन्दर पिघल रहा हूँ।

"महेश"—एक सुरीली आवाज उसने सुनी और सोफे से उठकर संभलने लगा···नीलम···सुन्दर नीलम···उसके सुर्ख होंठ···शायरों वाले बाल कंधे पर बिखरे हुये हैं। उसका उभरा हुआ सीना तना हुआ है। उसकी मधुभरी आँखें पूरे शबाब पर हैं। उसके संदली शरीर से जवानी की भीनी-भीनी खुशबू आ रही है।

उसकी नजरें फिर अजन्ता की तस्वीर में खो जाती हैं, वह तस्वीर बेजान है, यदि लोग बेजान चीजों से दिल बहला सकते हैं तो वे दोनों तो जीवित हैं।

औरत और मर्द···दोनों ही एक दूसरे की जरूरत के लिये पैदा किये गये हैं। यह तो प्रकृति का नियम है, इस नियम को तोड़ने वाले नास्तिक कहलाते हैं।

नहीं—नहीं—वह—नास्तिक नहीं है, भगवान के बनाये वसूलों को वह नहीं तोड़ेगा। नीलम भी जवान है, वह भी जवान है। हर जवानी को दूसरी जवानी की जरूरत है। आरम्भ से लेकर यही होता आ रहा है, दुनिया की सारी कहानी औरत और मर्द है।

उसके हाथ हिलते हैं, उसने उसे अपनी दोनों बाहों में भर लिया। वह छुई-मुई-सी सोफे पर गिर पड़ी। उसकी मदमाती आँखें चमक रही थीं। उसके लाल अधर धीरे-धीरे कँपकँपा रहे थे।

वह उस पर झुक गया, सदियों से सुलगती आग ने ज्वाला का रूप धारण कर लिया। उसके प्यासे होंठ नीलम के होंठ से जीवन का अमृत पीने लगे।

"परन्तु दिल की आग इससे ठंडी नहीं हुई और बढ़ गई ?"

इन्सानी शरीर पर यह कपड़े कैसे ! खूबसूरत चीजों को इस तरह ढांप कर क्यों रखा जाता है। यह पर्दे कैसे—यह दीवारें अभी तक दूर क्यों नहीं हुईं ?

नीलम ने अपनी कोमल बाहें उसके गले में डाल दीं। वह कुछ बोलना चाहती है परन्तु होठों के बजाय आंखें बोल रही हैं। पुकार-पुकार कर कह रही हैं, यह दीवारें हटा दो।

फिर दीवारें हट जाती हैं।

यह नीलम है, आकाश से उतरी हुई परी, अथवा सुलगते हुए शोले, अंगारे। उसका शरीर संगमरमर की भांति है, उस पर नजरें नहीं टिक सकतीं।

औरत···मर्द···लड़की···इस स्त्री को भगवान् ने इतना सुन्दर क्यों बनाया ? इसके शरीर का हर उभरा हुआ भाग अपने अन्दर कितना आकर्षण रखता है। उस प्यासे पुरुष की सदियों पुरानी प्यास भड़क उठी थी। नीलम का शरीर और उसका शरीर आपस में मिल जाना चाहते थे। यह फासले मिटते गये। वह नीलम के शरीर के निकट-से-निकट होता गया।

फिर रंगीन रोशनी में आग लग गई।

जब उसे होश आया तो नीलम बड़ी शांति से चित्त लेटी हुई थी। तूफान थम चुका था। आग बुझ चुकी थी, राख बाकी थी। वह दूर कुर्सी पर उदास होकर बैठ गया।

नीलम ने धीरे से करवट बदली और मुस्कराकर उसकी ओर देखा उसने शर्म से आंखें नीची कर लीं और अपनी भूल पर पछताने लगा।

"आप मुझ से दूर हो गये।" नीलम ने उसे पुकरा, और अपने वस्त्र ठीक करने लगी।

"नीलम मुझे क्षमा करना। मैं इन्सान नहीं शैतान बन गया था।

मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। मैंने तुम्हारी आत्मा पर न मिटने वाले दाग छोड़ दिये हैं। न जाने भगवान् मुझे क्षमा करेगा कि नहीं परन्तु तुम..."

"तुम कैसी बातें कर रहे हो महेश।"

"अपनी भूल की बातें।"

"यह भूल नहीं महेश जवानी के खेल हैं। यह वह गीत है जो प्रकृति के साज पर गाये गये। भगवान ने इन्सान को जीवित रहने के लिये यही एक साज दिया है। वह साज जिसका हर स्वर सुहाना है, जिसकी तान में एक निराला आकर्षण है।"

"इसका अर्थ है, तुमने मुझे क्षमा कर दिया नीलम—।"

"क्षमा कैसी! इधर आओ, मेरे निकट। इतनी दूर क्यों चले गये हो। क्या मैं इतनी बुरी हूँ महेश?"

"नहीं तुम बहुत अच्छी हो नीलम! बहुत अच्छी, बल्कि मैं ही बुरा हूँ।"

"महेश तुम बहुत अच्छे हो, इतने अच्छे कि मेरे पास वह शब्द नहीं जिनका मैं तुम्हारी अच्छाई के लिए प्रयोग कर सकूँ। आओ मेरे समीप आओ, इतनी दूर मत जाओ कि मैं तुम्हारे दिल की धड़कनें न सुन सकूँ।"

वह उठकर नीलम की गोद में गिर पड़ता है, नीलम प्यार से उसके सिर में उंगलियां फेरने लगती है। न जाने उसे किस समय नींद आ गई।

College

: ४ :

सुबह हो गई। रात के सारे अंधेरे सूर्य की किरणों को देखते ही दम तोड़ गये। काली रात अपने पीछे कुछ नींद छोड़ गई, सूर्य के किरणों के साथ ही काली रात में होने वाले सब धन्धे दम तोड़ गये। दूर कहीं मन्दिर से भगवान् की पूजा की आवाज आई, आरती उतारी जा रही थी, माथे रगड़े जा रहे थे।

वह उठा, और अपने चारों ओर देख कर हैरान रह गया, निहाल चाचा अभी तक चाय क्यों नहीं लाये, जबकि उसकी चाय का समय हो चुका है। क्यों नहीं उसने अभी तक प्यार से कहा, "छोटे बाबू कहो रात कैसी गुजरी···?" यह सब कुछ बदल गया है, कोई चीज भी तो अपने स्थान पर नहीं।

सहसा उसकी नजरें बगल में लेटी हुई सुन्दर रोशनी पर पड़ीं। जिसके सुन्दर मुखड़े को काली जुल्फों ने ढांप रखा था, जैसे चौदवीं के चांद पर बदलियां छा गई थीं। यह सुर्ख गुलाब काला गुलाब बन गया था। रात के कपड़ों में वह और भी सुन्दर लग रही थी।

वह सो रही थी, इस दुनिया से बेसुध, सारे संसार की मासूमियत उसके चेहरे पर आई थी, परन्तु यह कौन है ? वह अपने आप से ही प्रश्न कर बैठा। उसका दिल चाहता था वह सदा इसी तरह लेटी रहे। मैं हुस्न की देवी को इसी तरह प्यार भरी नजरों से देखता रहूँ। इसकी सुन्दरता की पूजा करता रहूँ।

यह कौन है…? फिर अन्दर से आवाज आती है, फिर उसका मस्तिष्क रात की ओर वापस लौट जाता है, अँधेरे के बीच में रोशनी, होटल, शराब, शराब के पश्चात् नीलम ……नीलम का सुन्दर शरीर ……उसका प्यार ……इससे आगे वह आँखें नहीं मिला सका…… उसका सारा शरीर कांपने कगा, ठंडे पसीने आने लगे।

"जीवन का पहला अपराध……"

क्या वह गुनहगार है ? उसने यह क्या किया ? यह बात तो उसने कभी भी सोची नहीं थी। हँसते-खेलते फूलों को मसल देना क्या अच्छी बात है ? नीलम उसके बारे में क्या सोचेगी ? वह उससे अब कैसे आँखें मिलायेगा ?

नीलम ने करवट बदलते हुए अपनी आँखें खोलीं और उसकी ओर देखती हुई मुस्करा दी। वह उसकी यह हँसी देखकर झेंप-सा गया, जैसे नीलम ने उसकी चोरी पकड़ ली हो। नीलम उठ रही है, उसके काले बाल चेहरे से हट कर कन्धों पर बिखर गये हैं। उसने अंगड़ाई ली तो सीने का उभार और बढ़ गया। वह उसकी अंगड़ाई को देख कर मचल उठा।

"शुभ प्रभात," नीलम के होंठ फड़फड़ाये।

"शुभ प्रभात," वह जल्दी से बोल उठा।

"कहिये, रात को कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?"

"आप एक अपराधी से पूछ रही हैं ?"

"मैं आप नहीं नीलम हूँ और आप अपराधी नहीं महेश हैं।"

"मगर नीलम यह रात कैसी थी ?"

"बड़ी हसीन।"

"हसीन थी यह···?" वह दुबारा पूछता है ?

"बहुत ही हसीन, जीवन में ऐसी रात मिलती कहाँ है ? जवानी की सुन्दर रात जो मिलन के रूप में गुजरे, इससे अच्छी रात और कौन-सी होगी।"

"इसका अर्थ है, तुमने मुझे क्षमा कर दिया।"

"कैसी क्षमा, यह तुम्हें सुबह-सुबह क्या हो गया है, महेश।"

"वह जो रात न हो सका।"

"रात बीत गई है। दिन चढ़ आया है। इस नई सुबह को प्रणाम करो, क्योंकि हर सुबह हमारे लिए नया जीवन लाती है। हम रोज मरते हैं, रोज जीते हैं, यह सुबह हमारा जीवन है। भगवान् से प्रार्थना करो कि सुबह फिर इतनी ही हसीन आये। कितने भाग्यशाली हैं वे लोग जो ऐसा जीवन पाते हैं।"

"मैं भाग्यशाली हूं ?" वह नीलम की आंखों में झांक रहा है। यहां प्यार के सागर उमड़ रहे हैं, यह जिन्दगी है, खूबसूरत जिन्दगी, नीलम उसके करीब पड़ी हुई है, बिलकुल निकट······वह ठीक कहती है, ऐसी जिन्दगी तो भाग्यशाली लोगों के भाग में आती है।"

इतने में एक बूढ़ी औरत चाय लेकर आती है, वह बिलकुल चुप है, ऐसे लग रहा है जैसे वह सदियों से चुप हो, उसके होंठ किसी ने सी दिये हों। वह उस बूढ़ी औरत को देख कर नीलम से अलग होने का यत्न करता है, नीलम उसका हाथ पकड़ लेती है और चाय की गर्म-गर्म प्याली उसके हाथों में दे देती है।

बूढ़ी औरत वहां खड़ी नहीं हुई। मशीन की भांति वह आई और चली गई। चाय की गर्म-गर्म प्याली अब भी उसके हाथ में है, पास ही नीलम बैठी है। उसे नीलम का शरीर भी चाय की प्याली की भांति ही

गर्म-गर्म लगता है, वह एक बार फिर नीलम की आँखों में खो जाता है। वह अनुभव कर रहा है कि मैं एक ही रात में बहुत बदल गया हूँ।

नीलम औरत है, लड़की है, जवान है, वह उसका दीवाना है। वह तो औरत से घृणा करता था, औरत के साये से भी दूर भागता था उसने उन औरतों की सिसकियाँ भी सुनी थीं जिन्हें रात को डैडी साथ लाया करते थे, इसीलिये उसे अंधेरा पसन्द आ गया। औरतों से घृणा हो गई।

मगर यह नीलम······वह······उसकी ओर बराबर खिंचता चला जा रहा है, उससे अलग होने को दिल ही नहीं चाहता। उसके शरीर से निकलती हुई भीनी-भीनी खुशबू शराब की भाँति ही नशा देती है। शराब का बदल क्या शबाब हो सकता है ? उसके अन्दर का इन्सान प्रश्न करता है—उत्तर में वह नीलम की ओर देखता है, इसी घबराहट में प्याली में से गर्म-गर्म चाय गिर कर उसके कपड़ों पर पड़ जाती है।

"अरे—यह क्या ? नीलम उसके हाथों से चाय की प्याली पकड़ लेती है और जल्दी से उसके कपड़े साफ करती है।"

उसकी आँखों के सामने नीलम का खुला हुआ सीना है, नीलम ने रात का लिबास कुछ इस ढंग से पहना हुआ है कि उसका सुलगता शबाब नजर आता रहे। वह औरत के इन इशारों को नहीं समझता, इन्हें केवल नीलम समझती है। वह भली-भाँति जानती है पुरुष की कमजोरी क्या होती है। किसी भी संगदिल मर्द को मोम करने के लिए जवान लड़की का खुला सीना आग का असर रखता है।

वह कमरे में झाँककर चारों ओर देखता है। इस समय कमरे में इन दोनों के सिवा कोई नहीं। नीलम बड़े प्यार से उसके कपड़ों पर से चाय साफ कर रही है। उसके दिल की धड़कनें तेज हो रही हैं। वह चीखना चाहता है, चिल्लाना चाहता है। नीलम इस आग को ढाँप लो,

नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगा। यह आग मुझे जला देगी नीलम, यह तुमने क्या किया है? मुझे जलाने के लिए अपने शरीर को नंगा कर रखा है।

नीलम कितनी लापरवाह है, उसके बाल माथे पर झुक आये हैं। उनकी पतली-पतली उंगलियाँ अब उसके शरीर पर धीरे-धीरे नाच रही हैं जैसे कोई संगीतकार पयानो के स्वरों को दबा रहा हो, इसके साथ ही उसकी आत्मा के सारे तार झुनझुना उठते हैं। उसके शरीर में फिर आग सुलग उठी है, उसके हाथ अपने आप हिलने लगते हैं, वह हाथ··· एक पुरुष के हाथ हैं जो एक स्त्री के शरीर को टटोल रहे हैं। नीलम की आँखें पलकों को खोल नहीं सकतीं, इसलिए वह आँखों को बन्द कर लेती है।

उसके अन्दर का ज्वालामुखी ठण्डा नहीं होता।

परन्तु अचानक ही वह घबराकर उठ बैठता है, जैसे किसी जहरीली चीज ने उसे काट लिया हो, जैसे कोई ठोकर खाकर गिरते-गिरते बचा हो। नीलम हैरानी से उसकी ओर देख रही है। जैसे वह हार गई हो और महेश जीत गया हो।

"क्या हुआ महेश?"

"कुछ नहीं नीलम! मैं जाना चाहूँगा।"

"कहाँ?"

"घर।"

"यह क्या है?"

"मुझे इसका पता नहीं कि यह क्या है, परन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि यहाँ रहकर मैं बहक रहा हूँ। मुझे यहाँ से जल्दी चले जाना चाहिए।

"यहाँ कोई कष्ट है?"

"कष्ट नहीं जलन है।"

"जलन तो दूर हो सकती है।"

"दूर नहीं हो रही बल्कि बढ़ रही है। मैं ठोकरें खा रहा हूँ, कभी यहां गिरता हूँ, कभी वहाँ, मैं समझता हूँ कि मैं रास्ते से भटक चुका हूं।"

"आप भटके नहीं बल्कि रास्ते पर आ गये हैं।"

"नहीं नीलम मुझे जाने दो। मैं घर जाना चाहता हूँ, डैडी मेरी चिन्ता कर रहे होंगे।" वह दरवाजे से बाहर निकलता है।

"ठहरो मैं तुम्हें छोड़ आती हूं।"

"मैं स्वयं चला जाऊँगा।"

"इतनी जल्दी क्या है ? मैं कार में छोड़ आती हूं।"

"नहीं नहीं, मैं टैक्सी में चला जाऊंगा।" वह यह कहकर जल्दी से बाहर निकलता है। उसके पांव तेजी से सड़क पर उठ रहे हैं। सड़क पर टैक्सी को रोककर वह उसमें ऐसे गिरता है जैसे बहुत थका हुआ हो।

"साहब किधर चलोगे ?" टैक्सी ड्राइवर पूछता है।

"बाराखम्बा।" वह लापरवाही से कहता है।

टैक्सी ड्राइवर गाड़ी स्टार्ट करके उसे भगाने लगा। पत्थर की बनी सड़क के सीने पर टैक्सी पूरी गति से भाग रही है। मगर उससे तेज उसका दिमाग भाग रहा है। रात के बीते हुए दृश्य एक-एक करके फिर उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। नीलम···नीलम···हर दृश्य के साथ नीलम का सुन्दर मुखड़ा उसे नजर आता रहा।

टैक्सी कोठी के आगे जैसे ही रुकी, तो सारे नौकर भागे हुए आते हैं।

"छोटे सरकार आ गए···छोटे सरकार आ गए···।"

वह जल्दी ड्राइवर को बिल देकर भेज देता है। नौकर उसकी ओर देख रहे है। वह अनुभव करता है जैसे नौकरों ने उसके चेहरे से रात की कहानी पढ़ ली हो। तभी तो वे उसे घूर-घूर कर देख रहे हैं। वह

सीधा अपने कमरे में आकर पलंग पर गिर पड़ता है। जैसे बहुत थक गया हो।

"महेश।" यह उसके डैडी की आवाज है।

"जी।"

"रात कहाँ थे ?"

"जी···जी···।" वह हकलाता हुआ उठकर बैठ जाता है।

"रात कहाँ थे मेरे बेटे।" डैडी की आवाज में कुछ गुस्सा भी था, कुछ प्यार भी। वह उसके पलंग पर आकर बैठ गए। वह डैडी से आँखें नहीं मिला सकता। उसे डर है कहीं वह उसकी आँखों में झाँककर रात की कहानी पढ़ न लें।

"डैडी···डैडी···।"

"क्या है मेरे बेटे ? तू इतना उदास क्यों है। तेरे चेहरे इतना फीका क्यों पड़ गया है ? तेरे वस्त्र क्यों इस तरह बेतरतीब हैं ? तेरे बाल क्यों इस तरह उलझे हुए हैं ?" डैडी ने एक ही साँस में कई प्रश्न कर डाले।

"डैडी ! मैं रात को एक मित्र के घर चला गया था, वहीं पर देर हो गई।" वह झूठ बोलता है।

'घर पर फोन कर दिया होता, ताकि हम लोग तो चिन्ता न करते।'

डैडी प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेर रहे हैं, और वह डैडी का प्यार पाकर उनकी गोद में गिर गया, उसकी आँखों में प्रेम के आँसू आ गए।

"पगले, तू रो रहा है।" डैडी उसे गले से लगा लेते हैं।

प्यार···आज इस घर में प्यार कैसे आ गया ? डैडी को उसकी याद कैसे सताने लगी। यह दुनिया कैसे बदल गई ? इन्हें अपने कारोबार—शराब—औरत से कैसे छुट्टी मिल गई ?

"डैडी···" वह बड़बड़ाता हुआ डैडी से लिपट गया, जैसे सदियों का

प्यासा पानी को अपने होंठों से लगाकर खुशी से फूला नहीं समाता। घर का सारा वातावरण एक रात में ही बदल गया। डैडी को आज पहली बार अपने कारोबार से छुट्टी मिली थी। नहीं तो वह समझता था कि इस घर में सब कुछ होते हुए भी वह अकेला-सा रहता है। यहां हर चीज एक रसम-सी बनी हुई है, यहां प्यार नाम की कोई चीज नहीं, यहां केवल औरत और दौलत की पूजा होती है।

परन्तु···मम्मी कहां है, वह अपने बेटे से मिलने अभी तक क्यों नहीं आई, फिर मम्मी की वह एक शक्ल उसकी आंखों के सामने आ गई, जो रात उसने देखी थी। डैडी की बजाये वह किसी और पुरुष के हाथ में हाथ डाले जा रही थी। डैडी किसी और लड़की के साथ यहां रंगरलियां मना रहे थे। आखिर यह घर भी क्या है, यहां कभी खुशी नहीं आयेगी, न जाने क्यों इस मम्मी के हृदय में ममता के बादल नहीं उमड़ते। क्यों नहीं वह अपने बेटे को गोद में लिटाकर ममता निछावर करती। लोग कहते हैं दुनिया में मां का प्यार सबसे पवित्र होता है।

मगर इस मां का प्यार क्यों मर गया है? इसने क्यों ममता को तिलांजलि दे दी है? मम्मी की इन्हीं बातों ने तो उसे घृणा और परायेपन की भट्टी में जलने के लिए फेंक दिया है। वह दिन-रात इसी आग में जलता रहता है। कोई भी तो उसे अपना कहकर पुकारने वाला नहीं। इस घर में रहते हुये वह अपने आपको एक अजनबी-सा अनुभव करता है। वह सदा तनहाइयों में सुलगता रहा, अभिलाषाओं और आशाओं की आहुति उसने इस भट्टी में दे दी। उसे चारों ओर ही अंधेरे-ही-अंधेरे नजर आने लगे, जो मस्त हाथी की तरह मुंह फाड़े उसे निगलने के लिए तैयार खड़े थे।

एक दिन अंधेरों की कोख में रोशनी की एक किरण ने जन्म लिया। वह शराब थी। स्कूल से वह कालेज पहुंच गया। कुछ मित्रों के कहने पर उसने शराब का सहारा लिया। यह शराब नहीं रोशनी थी। मां

की ममता थी। बाप का प्यार था अथवा कोरा धोखा था। जब माँ-बाप का प्यार ही धोखा था तो शराब का प्यार धोखा होना कौन-सी बड़ी बात थी।

इस घर में शराब प्रधान थी। डैडी शराब पीते थे, मम्मी शराब पीती थीं। जो इन दोनों से बच जाती वह घर के नौकर चढ़ा जाते। इसलिए तो उसने इन सब का साथ देना शुरू कर दिया।

"महेश बेटे।"

"जी—डैडी।"

"अब तुम जवान हो गए हो, इसलिए कारोबार की ओर कुछ ध्यान देना शुरू कर दो।"

"कारोबार।" वह चौंक उठता है।

"हाँ बेटा, अब मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, यदि इस करोड़ों के कारोबार को तुम नहीं संभालोगे तो क्या मेरे यह कमजोर कन्धे संभालेंगे, फिर इस जिन्दगी का भरोसा क्या है, कभी भी साथ छोड़ सकती है।"

"नहीं डैडी, ऐसा नहीं हो सकता, आपके मुंह से यह बातें शोभा नहीं देतीं, आप तो सदा यही कहा करते हैं, जिन्दगी केवल आज का नाम है, कल कुछ नहीं।"

"कहने और करने में बहुत अन्तर है मेरे बेटे। मैंने इस दुनिया में बहुत कुछ सुना, बहुत कुछ पाया, खोई केवल जवानी—और सब कुछ वापस आ जाएगा, परन्तु यही एक चीज है जो वापस नहीं आयेगी। संसार भर का धन धोखा है। यह धन जवानी वापस नहीं ला सकता।"

वह डैडी की भर्राई हुई आवाज को सुनता है। पहली बार, जिन्दगी में वह इस इन्सान की आवाज में दुःख अनुभव करता है। इसकी आवाज में दर्द है। यह पत्थर का इन्सान कैसे पिघल गया, जिसे शराब और धन ने दीवाना बना रखा था। वह इन्सान आज ऐसी

बातें कर रहा है। वह स्वयं हैरान है और एकटक डैडी की ओर देखे जा रहा है। यह इन्सान करोड़ों का भी मालिक है।

यह इन्सान इसी देश का है। यहां लोग चन्द रुपयों के लिए भी तरसते हैं, यहां की हंसती-खेलती जवानियां इसीलिए मौत का शिकार हो जाती हैं कि उन्हें दवाई नहीं मिल सकती, दवाई उन्हें इसलिए नहीं मिल पाती क्योंकि उनके पास पैसा नहीं होता। पैसा उनके पास कहां से आयेगा जब एक ही आदमी ने अपनी जेब में भर लिए हैं।

यह देश जो कभी सोने की चिड़िया होता था, इस देश के हजारों बच्चे दूध की एक बूंद को तरसते हुए जाते हैं, जिस देश का बचपन ही भूखा है उसकी जवानी क्या होगी ? जवान होने से पहले तो वह बूढ़े हो जाते हैं।

यह महात्माओं की धरती है। ऋषियों की बनाई हुई दुनिया है। मुनियों ने इसे आगे बढ़ाया है, परन्तु धन के पुजारियों ने सब आदर्श भुला दिये, इन्सान-इन्सान के बीच में ही दीवारें खड़ी कर दी हैं। यहां चारों ओर धन शासन कर रहा है। दौलत ही दौलत···पैसा ही पैसा, वही है अब यहां का प्यार—

"तुम चुप हो गये महेश ?"

"डैडी मैं आपके सामने क्या बोल सकता हूं ? मैं अभी बालक हूं, आप बड़े हैं। आप मुझसे अच्छा सोच सकते हैं।"

"मैं चाहता हूं महेश ! तुम कारोबार में रुचि लेने लगो।"

"अवश्य लूंगा डैडी, मगर बी० ए० करने के पश्चात्।"

"हां—हां—खुशी से तुम बी० ए० करने के पश्चात् ही कारोबार को देखना।" डैडी उसकी आंखों में व्यंग करते हैं।

"आज सुबह-सुबह ही बाप-बेटे का प्यार कहां से जाग पड़ा।" यह उसकी मम्मी की आवाज है जो उसके कानों से टकराती है।

"मैं महेश को समझा रहा हूं।"

"खूब—आप महेश को समझा रहे हैं, जो जीवन भर स्वयं न समझे···अब यह क्या समझेगा ?" मम्मी की आवाज में प्यार की बजाय व्यंग था।

"प्रीतम हम ही तो इसे जिन्दगी के बारे में समझाएंगे।"

"यह स्वयं बहुत समझदार है, हमारे समझाने से क्या होगा। आखिर यह भी ठाकुर रनवीरसिंह का बेटा है। कोई साधारण व्यक्ति नहीं।"

"प्रीतम ! यह तुम्हारा भी तो बेटा है।" डैडी झुंझला उठते हैं। उनकी इस झुंझलाहट का अर्थ वह नहीं समझता।

"मेरा भी बेटा है, परन्तु मुझसे अधिक आपको यह प्यारा है। मैं इसकी मम्मी थोड़े ही हूँ। आप ही इसकी मम्मी हैं।"

"प्रीतम !" डैडी क्रोध से बोल उठते हैं।

"आप तो वैसे ही बिगड़ रहे हैं। आखिर मैंने क्या कह दिया है ?"

"प्रीतम ! यदि तुम महेश को मम्मी का प्यार देतीं तो हो सकता है इसकी आदतें कुछ बदल जातीं। यह इस तरह रातों को न भटकता, मुझे डर तो इस बात का है, महेश और न भटक जाये।"

"जिसका बाप सारी उम्र भटकता रहा है, उसका बेटा नहीं भटकेगा तो और कौन भटकेगा, आखिर को रास्ते तो आपने ही इसे दिखाए हैं।"

"प्रीतम ! तुम जरूरत से अधिक बातें करती हो।"

"बुरा मान गए मेरी बात का।" मम्मी मुस्करा रही हैं।

"बुरी बातों को कहने से पहले यदि इन्सान सोच ले तो अधिक अच्छा होता है।"

"हाँ-हाँ मैं तो बुरी बातें करती हूँ। आपको मैं अच्छी क्यों लगने लगी ? मैं अब जवान जो नहीं रही, पुरुष तो केवल स्त्री की जवानी के ग्राहक होते हैं, इसीलिए तो आप रोज एक जवानी को कोठी में ले

आते हैं !"

"प्रीतम !" डैडी चिल्लाते हैं।

"चिल्लाने से कोई लाभ नहीं, सच्चाई नहीं छुप सकती, दुनिया इन बातों को जानती है। इस घर की दीवारें-दरवाजे जानते हैं कि आप क्या कुछ नहीं करते, इस घर में रोज क्या होता है, इस घर के नौकर जानते हैं। महेश जानता है यह बातें कभी छुपा नहीं करतीं। यह घर नहीं अच्छा खासा बाजार है बाजार ?"

"प्रीतम···"डैडी एक बार फिर चिल्लाते हैं।

"ओह—आपको तो अब क्रोध भी आने लगा है। सच्ची बातें सुनकर किसे क्रोध नहीं आता। खैर छोड़ो यदि आप नाराज होते हैं तो मैं चली जाती हूँ, ताकि आप-बाप बेटे खुलकर बातें कर लें।"

"क्या तुम महेश से प्यार नहीं कर सकती हो ?"

"जब इसके डैडी प्यार कर रहे हैं तो मम्मी के प्यार की इसको जरूरत भी क्या है, तभी तो वह कभी मेरी ओर प्यार से नहीं देखता, मुझे अपनी मम्मी ही नहीं समझता।"

"प्रीतम, बच्चे प्यार के भूखे होते हैं।"

"वह मेरी जगह पर आप अच्छी तरह कर ही लेते हैं।" यह कहकर वह बाहर निकल जाती है।

वह देखता ही रह जाता है, माँ का प्यार एक ठंडी साँस के रूप में सीने की गहराइयों से निकलता है, और कमरे में फैल जाता है। वह सोचता ही रह जाता है कि कभी ममता भी पत्थर बन सकती है।

: ५ :

कालेज की पुस्तकें हर सुबह उसका साथ देती हैं। यह नीरस पुस्तकें जो केवल डिगरियां लेने के लिए ही पढ़ी जाती हैं, जिन्हें सदा वह बुझे हुवे दिल से उठाकर कालेज जाता है, वह सोचता है कि इन पुस्तकों को पढ़कर आखिर वह बनेगा क्या ?

क्या वह क्लर्क बनना चाहता ?

नहीं···नहीं···। वह स्वयं ही बोलता है···अचानक ही उसकी आंखों के सामने अपने सहपाठियों के चेहरे घूमने लगते हैं, जिनमें से अधिक विद्यार्थी केवल पेट की आग बुझाने के चक्कर में डिगरी प्राप्त करना चाहते थे, कोई मां-बाप की सेवा के लिए योजनाएं बना रहा था, कोई बहन भाइयों के गम में घुला जा रहा था। कोई शादी करवाकर बच्चों की पालना करने की बातें सोचता था।

कुछ विद्यार्थी ऐसे भी थे, जो केवल अपनी जिन्दगी सँवारना चाहते थे। बड़े आदमी बनना चाहते थे। इसी लगन में वे दिन-रात पुस्तकों से चिपके रहते थे और इनके साथ-साथ कुछ ऐसे भी विद्यार्थी थे जो कालेज में केवल मजे मारने के लिये आये थे, वे केवल प्रेम के नाटक रचते थे। ऐसे विद्यार्थी अधिकतर पैसे वाले लोगों की संतान थे।

ऐसे लड़कों को कुछ लड़कियां ऐसी भी मिल गई थीं—जिन्होंने इन मालदार विद्यार्थियों को शिकार समझा, अथवा इन लड़कों ने उन गरीब लड़कियों की गरीबी से लाभ उठाने का यत्न किया। गंदगी के कीड़े ऐसे ही पैदा होते हैं। माडर्न समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये लोगों ने ऐसे गन्दे धंधे शुरू कर दिये हैं।

वह सब कुछ देखता परन्तु अपना सफर जारी रखता, वह महाकवि कालीदास का पुजारी था, कालेज की पुस्तकों से आगे जाकर उसने मनुष्य की खोज शुरू कर दी। उसकी जिन्दगी एक नये मार्ग पर चल निकली थी, घरेलू वातावरण की घुटन ने उसे क्या से क्या बना डाला। जिस घर के अन्दर माँ-बाप का प्यार न हो, उस घर की संतान का अंत क्या होगा ?

यही शराब—शराब तो इस घर में सभी पीते थे, फिर वह ही क्यों पीछे रह जाता, उसने भी शराब पीनी शुरू कर दी। जिन्दगी के अंधेरे में रोशनी की इस किरण ने जन्म लिया। कालेज की कुछ लड़कियों ने उसे शिकार समझकर सम्बन्ध बढ़ाने का यत्न किया परन्तु वह खिलाड़ी साबित न हो सका, वह जानता था, यह सब मेरी नई कार की पूजा हो रही है। यह सब मेरे धन का आकर्षण है। ये लड़कियां प्रेम की खोज नहीं शिकार की खोज कर रही हैं, वह किसी लड़की की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता था। खाली समय में पुस्तकालय में जाकर इतिहास की खोज शुरू कर देता। यही कारण था कि कालेज के लड़के लड़कियां उसे ब्रह्मचारी के नाम से पुकारते। "ब्रह्मचारी"

वह अपने इस नाम पर स्वयं ही हँस देता। कभी-कभी अपने आप पर रो भी देता। आखिर वह सारे कालेज के मजाक का विषय क्यों बना हुआ है। वह क्यों नहीं अपने आपको बदल देता ? क्यों नहीं इन अँधेरों का आंचल चीर देता ? यह उसका पागलपन नहीं तो और क्या है कि वह घर में इतने कपड़े होते हुए भी रोज कपड़े नहीं बदलता,

उसका लिबास बेतरतीब और उलटा-सीधा रहता है। बाल हैं तो उनमें कई-कई दिन तेल नहीं डालता, ढंग से कंघी भी नहीं करता।

जीवन अजीब बेढंगेपन से चल रहा है। दूर-दूर तक कोई अपना नहीं, यह रिश्ते-नाते भी झूठ है, बकवास है, धोका है। यहां कोई किसी का साथी नहीं। यहां तक कि इन्सान का अपना शरीर भी एक दिन साथ छोड़ देता है। आत्मा उड़ जाती है। शरीर मिट्टी हो जाता है। इस मिट्टी को कोई चिता में रखकर जला देता है। कोई धरती के अन्दर दबा देता है। इस खूबसूरत जिन्दगी का अन्त कितना भयंकर है। इस बारे में कोई नहीं सोचता। सब ही अन्धा-धुन्ध भागे जा रहे हैं।

घर से चलकर वह कालेज पहुंच गया, दरवाजे पर कोई भीड़ न पाकर वह समझ गया कालेज लग चुका है, वह जल्दी-जल्दी भागता जाता है, पहला पीरियड प्रो० रतन का है वह इतिहास का प्रोफेसर हैं, इतिहास ही उसे सब से अधिक पसन्द है। तारीख जो इन्सानी जीवन पर पड़े हुये पर्दे उठाती है जो नंगे इन्सान से लेकर आज के नये इन्सान पर आकर रुक जाती है।

वह प्रो० रतन की नजरों से बच नहीं पाता।

"मिस्टर महेश!" प्रोफेसर रतन की आवाज आती है,

"यस सर!" वह रुक जाता है।

"आप लेट आये हैं?"

"क्षमा चाहता हूं प्रोफेसर साहिब कि मैं समय पर नहीं पहुंच सका।"

"ओह ब्रह्मचारी" कुछ सहपाठियों की आवाजें उसे सुनाई देती हैं।

"शांत", प्रोफेसर रतन चीखता है।

आवाजें बन्द हो जाती हैं परन्तु वह अभी तक वहीं खड़ा प्रो० रतन के चेहरे की ओर देख रहा है, प्रोफेसर की मोटे शीशों वाली ऐनक आंखों से ढुलक कर नाक पर आकर रुक गई है, उसकी आंखों में से तारीख के

खंडहर झांक रहे है। इस समय वह स्वयं ही तारीख की कोई पुस्तक नजर आ रहे हैं।

"बैठ जाइये—आगे फिर लेट न आना।"

"धन्यवाद!" यह कहकर वह एक खाली सीट पर बैठ जाता है। उसके साथ वाली सीट पर एक सुन्दर सी लड़की बैठी हुई है। वह उस लड़की को नहीं जानता। वह केवल इतिहास जानता है।

प्रो० रतन अपना भाषण फिर शुरू करता है। उसके मोटे-मोटे होंठ फिर हिलने लगते हैं, और वह इन्सानी जन्म की तारीख के पृष्ठ उलटने लगता है।

"इन्सान का जन्म कैसे हुआ ?" वह प्रश्न करता है।

इस प्रश्न को सुनकर सारे विद्यार्थी आश्चर्य के सागर में डूब जाते है। विश्व का पहला इन्सान कहाँ से आया, कैसे पैदा हुआ ? इसका उत्तर तो बड़े वैज्ञानक तथा मनोविज्ञानिक भी ठीक नहीं दे पाये। वे स्वयं इस विषय पर बुरी तरह उलझे हुये हैं।

वह कक्षा को चुप देखकर उसकी ओर इशारा करता है। महेश क्या तुम इस बारे में बताओगे ?

वह अपनी सीट पर खड़ा हो जाता है। इन्सानी जन्म की कहानी बहुत पुरानी है, इसलिए वह हजारों वर्ष पीछे की ओर भागता है।

—इन्सान एक मिट्टी का खिलौना था, जिसमें शिवजी महाराज ने जान डाल दी वह भी पारवती के कहने पर, शिव जी वासना है, जो काम का देवता है, ब्रह्मा इस सृष्टि का रचेता है, ब्रह्मा ही ने यह मिट्टी के खिलौने बनाये थे। वैसे इन्सानी तारीख एक सागर है जिसमें हम और आप सब पत्तों की भांति डोल रहे हैं, दूसरी ओर कपिल ऋषि का कहना है कि इस संसार को ब्रह्मा ने नहीं प्रकृति ने बनाया है। धरती और आकाश के मेल से इन्सान ने जन्म लिया है। कपिल मुनी का कथन है कि

इन्सान की उत्पति केवल एक घटना नहीं, इसके पीछे अवश्य बहुत बड़ा रहस्य है।

मगर वेदान्त वाले ईश्वर भक्त जो केवल ब्रह्म को ही इस दुनिया का रचयिता मानते हैं, वे कपिल मुनि की इस विचार धारा से सहमत नहीं। वे कहते हैं, तू ब्रह्म है, जीव आत्मा है, और यह आत्मा ही ईश्वर है।

मगर कपिल मुनि ने प्रश्न किया था, यदि हर चीज ही ब्रह्म है तो दवाई काहे के लिये, यह दवाई वास्तव में मायाजाल है।

आगे चलकर कपिल मुनि इन लोगों को उत्तर देते हैं।

इस संसार की रचना अविद्या और आदि अविद्या के कारण हमारी बुद्धि से बाहर हो जाती है, हो सकता है यह शक्ति के मार्ग से हुई हो, इससे तो ब्रह्म का दर्जा कम होता है, ब्रह्म जिसका कोई लिंग नहीं था पुरुष कहलाया।

विष्णु—जो पत्तं के गिरने में छुपा हुआ है।

नारायण—जो स्वयं मुझमें है।

मधुसूदन—जो प्रेम का अर्थ सागर है, जो कृष्ण की बांसुरी का भेद है, और उसी कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि मैं, न रुकने वाला समय हूं। मैं भयंकर मौन हूं, मैं भेदों की भेद हूं, मैं इस दुनिया का आदि हूं और मैं ही इस दुनिया का अंत।

सारे वेदों में लिखा हुआ है, ॐ जो मैं हूं, आकाश की आवाज मैं हूं, मैं मानवता की पहली वृद्धि हूं, और कुन्ती के बेटे मैं ही स्त्री की बुद्धि और उसकी वफादारी हूं, मैं अच्छे की अच्छाई हूं, मैं छुपी हुई दुनिया हूं, मुझे कोई नहीं जानता। अर्जुन, मैं सब को जानता हूं, यह कृष्ण महाराज ने कहा था।

और वैशाली के महावीर ने कहा—

भगवान इस संसार में कहीं नहीं है, यह दुनिया ही अंत है, जो

अपनी शक्ति पर खड़ी है, धर्म, अधर्म, और आत्माओं के संग्रह से बनी हुई है, यही एक सच्चाई है।

शाक्य मुनी कहते हैं कि ईश्वर हो न हो, सच्चाई यह है कि इस दुनिया में दुःख अवश्य हैं। बासठ ज्ञान और विद्या के बासठ ही गुण हैं, प्रेम बेकार है, मनोविज्ञान बेकार है, यह सब महामाया है, सब धोखा है, कोई चीज आदि नहीं किसी का अंत नहीं, हर चीज झूठी है, यहां इच्छाओं की गुजर कहां, कौन किसी चीज की इच्छा करे ?

शाक्य जी कहते हैं कि हम समझते हैं कि हम हैं, हालांकि हम कुछ भी नहीं, यहां की हर चीच अस्थाई है, आत्मा भी सदा नहीं रहती, वह भी मिट जाती है, वह आत्मा का आवागमन नहीं कर्म का आवागमन है। इन्सान इस तरह बुझ जाता है जैसे एक चिराग को फूंक मारकर बुझा दिया जाये।

आदरणीय, इन्सान की पैदाइश बहुत बड़ा प्रश्न है, इस पर एक पीरियड नहीं बल्कि महीनों······।"

इसी बीच पीरड समाप्त हो जाता है।

सारी कक्षा तालियों से गूंज उठती है। प्रोफेसर रतन कुर्सी से उठकर उसका मुंह चूम लेते हैं······।"

"बहुत अच्छे—बहुत अच्छे···मेरे विद्यार्थी···मुझे तुम पर गर्व है। तुम मेरा और कालेज का ही नहीं एक दिन पूरे देश का नाम रोशन करोगे।"

वह देखता है साथ वाली सीट से अब भी दो सुन्दर आंखें उसे घूर-घूर कर देख रही हैं। वह इन आंखों की भाषा समझने का यत्न करता है।

दूसरा घंटा अंग्रेजी का है। प्रोफेसर मलिक, बड़े अंदाज से कक्षा में आ रहे हैं। उसे इस भाषा से घृणा है, उसके अंदर का विद्रोही

इन्सान चिल्ला उठता है, यह भाषा हमारी नहीं······इस विदेशी भाषा से सौ साल की दासता की बू आती है। शहीदों का खून पुकार-पुकार कह रहा है, यह विदेशियों की भाषा है, उनकी भाषा है जिन्होंने सौ वर्ष तक हम पर अत्याचार किये, हजारों देश-भक्तों को फांसी के तख्ते पर इसलिये लटका दिया कि वे आजादी मांगते थे, लाखों इन्सानों को लाठियों से पीटा हजारों को गोलियों से मार दिया।

ये कौन थे ?

ये वही जालिम थे, जाबर थे—संगदिल थे, जिन्होंने हमारी सभ्यता को कुचला, देश का बटवारा किया।

वह क्रोध से अपने दांत पीसता है। उसकी दोनों मुट्ठियां भिच जाती हैं। खून गर्म हो जाता है।

प्रोफेसर- मलिक अंग्रेजी की पुस्तक उठाता है। उसे ऐसा अनुभव होता है जैसे किसी अंग्रेज ने बन्दूक उठाकर किसी देशभक्त के सीने में गोली दाग दी हो। वह चीखना चाहता था···नहीं···नहीं···हमको आजाद हुये बीस वर्ष हो गये हैं। अब हम यह दासता का फंदा अपने गले में नहीं डालेंगे। हम भारतीय हैं, हमारी अपनी कोई भाषा होनी चाहिए। हम उस भाषा को अब नहीं पढ़ेंगे, जिसने हमारे देश की सारी भाषाओं का गला घोंट दिया है।

उफ, हम इतने बेगैरत क्यों हैं ? हम भारतीय अपने देश और अपनी भाषा को पहला स्थान क्यों नहीं देते, हम आज भी अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने के लिए भेजते हैं। हम कालीदास को नहीं समझते, तुलसी को नहीं पढ़ते—टैगोर, शरत को पढ़ते हुये हमें शर्म आती है। गालिब, प्रेमचन्द की पुस्तकों से हम डरते हैं, हम अंग्रेजी पुस्तकें बड़े गर्व से खरीदते हैं, पढ़ते हैं।

वह घृणा से कक्षा से बाहर जाने लगता है—

"आप कहाँ जा रहे हैं ? ' प्रो० मालिक चीखते हैं।

"मैं भूल से अंग्रेजी के पीरियड में बैठ गया था।" यह कहकर वह जल्दी से बाहर आ जाता है और वह कालेज ग्राऊंड की हरी-हरी घास पर लेट जाता है।

सहसा, उसने इन दो आंखों को अपनी ओर आते देखा, एक जवान और सुन्दर लड़की की आंखें, जो मस्त चाल चलती हुई उसकी ओर बढ़ रही थी। उसके खूबसूरत पांव काली चप्पल में चमक रहे थे।

वह उसके पास आकर बैठ जाती है।

वह अनुभव कर रहा है कि उसके दिल की धड़कन तेज हो गई है।

"आपका नाम महेश है ?" सुन्दर रसीले होंठ हिलते हैं।

"हां," वह लापरवाही से उत्तर देता है।

"आपको इतिहास से बड़ा प्यार है।"

"यह मेरा मन पसन्द विषय है।"

"अंग्रेजी से आपको घृणा है ?"

"हां।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि इसने हमारे साहित्य को कुचलने का प्रयत्न किया है। वैसे मैं किसी भाषा से घृणा नहीं करता, मगर उस भाषा को अपना प्रथम शत्रु मानता हूं जो हमारी देशभक्ति की भावनाओं को कुचलती हो, हमें अपने धर्म से दूर ले जाती हो।"

"तो इसका अर्थ है आप साम्प्रदायिकता पर विश्वास रखते हैं।"

"यदि अपने धर्म, भाषा और देश से प्यार करना साम्प्रदायिकता है, तो दुनिया का हर धर्म और देश इसका शिकार है।"

"धर्म क्या होता है ?"

"विश्वास—श्रद्धा—मानवता का धर्म है।"

"इसका अर्थ है आप धर्म को मानते हैं ?"

"धर्म को मानना अलग चीज है, धर्म के वसूलों का पालन करना वही सबसे कठिन कार्य है।"

"बहुत अच्छे···आपकी बातें बहुत प्यारी हैं," दो आंखों में चमक और बढ़ गई थी।

"आपने मेरा नाम नहीं पूछा।"

"आप स्वयं ही बता दें।"

"मुझे शारदा कहते हैं। मैंने कल ही कालेज में प्रवेश पाया है।"

बहुत खूब। वह स्वयं ही हंस देता है।

"आपको हँसी किस बात पर आई ?"

"अपने पागलपन पर।"

"आप और पागल·········।"

"हां···हां···मैं पागल ही तो हूं—मुझे यह भी तो पता नहीं तुम पहले से ही मेरी क्लास में हो, अथवा कि अभी प्रवेश लिया है।"

"आप अपने सिवा और किसी के बारे में क्यों नहीं सोचते ?"

"यह तुमने कैसे अन्दाजा लगा लिया है।"

"आपकी इस बात से कि मुझे अपने सहपाठियों के बारे में कुछ पता नहीं।"

"हां···हां···हां···।" वह खुलकर हंस देता है, यह कालेज में पहली बार इतने जोर से हंसा था।"

शारदा हैरानी से उसकी ओर देख रही है, उसे इस तरह हंसते देखकर वह स्वयं हैरान रह जाती है।

"आप इस तरह क्यों हंस रहे हैं ?"

"तुम्हारी सादगी पर।"

"मेरी सादगी पर···"वह दुबारा प्रश्न करती है।

"हाँ, यह तुम्हारी सादगी नहीं तो और क्या है, तुम मेरे जैसे पागल लड़के के पास आकर बैठ गई हो, जो किसी से बात तक नहीं करता।"

"मगर मुझसे तो आप बातें कर रहे हैं।"

"पता नहीं क्यों—मैं आज अपने आपको कुछ बदला-बदला अनुभव कर रहा हूँ। मुझे ऐसे लग रहा है जैसे मेरे अन्दर कोई नया इन्सान जन्म ले रहा है।"

वह सुलगती नजरें उसकी नजरों में गाड़ देती है, दोनों एक-दूसरे को घूरने लगते हैं, जैसे पहचानने का प्रयत्न कर रहे हों।

"शारदा ?"

"हाँ महेश !"

"तुम मेरे पास क्यों आई हो ?"

"मैं तुम्हारी प्यारी-प्यारी बातें सुनने के लिए।"

"सच शारदा।" वह बिलकुल बदल गया।

"इसमें भी कोई संदेह की बात है।" वह हँस देती है।

: ६ :

शारदा उसके साथ जा रही है, आज पहली बार वह कालेज की किसी लड़की के साथ चल रहा है। शारदा का भोलापन देखकर उसका दिल मोम हो गया। वह कितनी सादी है, उसका लिबास सब लड़कियों से भिन्न है, उसने अपनी जवानी को पब्लिसिटी का विज्ञापन नहीं बनाया। वह देख रहा है यदि शारदा का आंचल जरा-सा भी सीने पर ढलक जाता है तो वह जल्दी ही उसे ठीक करती है। उसकी आंखों में शर्म की डोरियां नाच रही हैं।

यह शर्म तो औरत की सुन्दरता का जेवर है, सड़कों पर घूमती हुई आधे नगे शरीर वाली लड़कियों ने तो जैसे इस शर्म को तिलांजलि दे दी है। वह समझती है इससे इनकी सुन्दरता बढ़ती है। पुरुषों के हृदय की भावनाओं को भड़काकर वह देश का पतन कर सकती है, निर्माण नही। मर्द तो आदि काल से ही स्त्री का इच्छुक है। यदि वह अपने शरीर को नंगा न भी करे तो भी वह उसे पाने की इच्छा करता रहेगा, सुन्दरता शरीर की नग्नता से पैदा नहीं होती।

शारदा भी तो एक लड़की है पर इसके शरीर का कोई ऐसा अंग नंगा नहीं जो सोई हुई वासनाओं को उभाड़ता है। परन्तु फिर भी इसमें

आकर्षण है। यह तो प्रकृति का सुन्दर उपहार है, बहारों की मलिका है, फूलों की रानी है, इसके सारे शरीर से भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही है। "इवनिंग इन पैरस", और "माई फैक्टर" की नहीं बल्कि जवानी की गन्ध।

वह जब अपनी कार को निकालता है तो शारदा की आँखें फटी रह जाती हैं। उसकी आखों से सारी चमक उड़ जाती है। वह उसे अजीब अंदाज नजरों से देख रही है। उसके चेहरे का रंग ही बदल गया है। वह स्वयं इस परिवर्तन पर हैरान रह गयी।

"बैठो शारदा ! " वह गाड़ी का दरवाजा खोलता है। शारदा बैठती नहीं बल्कि उसके मुँह की ओर देखती रहती है, जैसे वह गाड़ी में नहीं बैठना चाहती हो।

"बैठो शारदा !" वह दुबारा कहता है।

शारदा बुझे हुए दिल से गाड़ी में बैठ जाती है, लेकिन वह चुप है, बोलती नहीं जैसे किसी गहरे सोच में डूब गई हो, गाड़ी चल रही है पत्थर और तारकोल की सड़क पर, मगर वह दोनों ही चुप हैं, हालांकि दोनों के दिलों में बलवले उठ रहे हैं, गाड़ी शहर से बाहर एक वीरान उजाड़ सड़क पर आ जाती है, यहाँ चारों ओर कोई नहीं है।

"आप कहाँ जा रहे हैं ?" वह घबरा कर पूछती है।

'यह तो मुझे भी पता नहीं।"

"मगर मुझे घर जाना है।"

"घर जाना है ?"

"हाँ···हाँ···मुझे घर जाना है। मुझे वापस छोड़ आओ।

"क्या तुम्हें मुझसे डर लगने लगा है ? "

"ऐसा ही समझ लो।" वह लापरवाही से उत्तर देती है।

"तुम्हें तो मेरी बातें प्यारी लगती थीं। अब एकदम से कैसे बदल गई हो?"

"मुझे नहीं पता था, आप इतने अमीर आदमी हैं।"

"तो क्या दुनिया में अमीर होना पाप है?"

"अमीर होना पाप नहीं, अमीर बनकर पाप करना फैशन है।"

"यह तुम्हारी भूल है, शारदा।"

"हो सकता है, परन्तु फिर भी मुझे घर छोड़ आइए, मैं किसी कार में नहीं बैठ सकती, क्योंकि मैं गन्दी नाली की ईंट हूँ, जो किसी ऊँची इमारत में नहीं लग सकती, धरती पर रींगने वाला आकाश पर पहुँचने के स्वप्न नहीं देख सकता।"

"शारदा! तुम्हारे हृदय में इन कार वालों के विरुद्ध इतनी घृणा क्यों है?"

"क्योंकि इन कारों में से दूसरों के खून की बू आती है?"

"क्या तुम मुझे भी ऐसा ही समझ रही हो? क्या तुम मेरी आँखों में झांक कर नहीं देख सकती हो? देखो मेरी आँखों में झांक कर देखो, फिर मुझे बताओ क्या यह किसी गुनाहगार की आँखें हैं, अथवा किसी धोखेबाज की आँखें हैं।"

शारदा उसकी आँखों में खो जाती है।

और फिर कुछ देर चुप रहती है।

महेश ने गाड़ी एक ओर खड़ी कर दी।

"बोलो शारदा, तुम चुप क्यों हो?"

शारदा बराबर उसे घूर रही है।

"आप मुझे उतार दीजिए।" शारदा बोल उठती है।

"फिर वही कहानी मुझे उतार दीजिए। क्या मैं बुरा आदमी हूँ?"

"नहीं आप बुरे नहीं, मैं बुरी हूँ।"

"तुमने यह कैसे समझ लिया, जब कि मैं कहता हूँ कि आप एक देवी हैं।"

"आप के कहने से क्या होता है ?"

"मेरे कहने से, मेरे दिल की तसल्ली होती है, तुम्हारे की भी।"

"लेकिन आप जिद क्यों कर रहे हैं ?"

"इसलिए कि मेरी उम्र ही जिद करने की है," वह बच्चों की तरह हंसता है, और गाड़ी स्टार्ट कर देता है।"

"आप मुझे उतारेंगे नहीं।"

"नहीं।"

"मैं शोर मचा दूंगी।"

"इससे दोनों की बदनामी होगी।"

"लेकिन यह भी तो बदनामी है।"

"यह बदनामी नहीं इज्जत है, शारदा ! तुम एक इन्सान के साथ चल रही हो। मैं बचन देता हूँ कि तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा। यदि वास्तव में ही तुम्हें मेरी कार से घृणा है तो लाओ इसे यहीं खड़ी करके जला देता हूँ।" उसने कार खड़ी कर माचिस जेब से निकाल ली।

शारदा समझ गई, महेश अब आग लगाये बिना मानेगा नहीं।

"हायें—यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"आपकी घृणा का इलाज।"

"मैं यह थोड़े कहती हूँ कि कार को आग लगा दो।"

"और आपकी घृणा का मेरे पास क्या इलाज है ? तुम मेरे साथ केवल इसलिए नहीं चलना चाहती हो कि मेरे पास कार है, हालांकि यह सच्चाई है कि यह कार मेरी नहीं मेरे डैडी की है।"

"आप इसे मत जलाइये बाबा ?"

"नहीं इसे जलाकर छोड़ूंगा ?" वह जिद करने लगा।

"न···न···न···भगवान् के लिए ऐसा काम मत कीजिए, मैंने कार जलाने के लिए तो नहीं कहा था।" वह एकदम पिघल जाती है।

"फिर वचन दो कि मुझसे घृणा नहीं करोगी।"

"यह कोई जबरदस्ती है।"

"जबरदस्ती नहीं प्यार है।"

"महेश तुम क्या कह रहे हो ?"

"वही जो एक इन्सान की इच्छा होती है।"

"लेकिन···म···मम्म···मम···" उससे कोई उत्तर नहीं बन पाता।

वह जीत जाता है, शारदा हार जाती है, वह औरत है न आखिर, उसे पुरुष के आगे हारना पड़ता है।

वह गाड़ी फिर स्टार्ट कर देता है। गाड़ी फिर चलने लगती है। शारदा उसके मुंह की ओर देख रही है। वह हार गई, अपने कहने पर शर्मिन्दा है। वह नई बात के लिए बहाना ढूंढ़ रही है।

महेश समझ गया इसलिये खामोशी से गाड़ी चलाता रहा, उसके मस्तिष्क में एक बात घूम रही है। एक औरत रात उसने देखी थी, औरत नहीं लड़की। लड़की भी नहीं रोशनी जिसने उसे जिन्दगी के अंधेरों से लाकर बाहर खड़ा कर दिया, और रोशनी के पश्चात् नई रोशनी। दीप-से-दीप जलता है, रोशनी से नई रोशनी जन्म लेती है।

"और यह नई रोशनी शारदा है।"

शारदा खूबसूरत है, जवान है, सुन्दर है। एक लड़की है, खिलता हुआ फूल है, जिसकी खुशबू उसके नथनों में घुस रही है, इस खुशबू में एक जादू है जादू, जाने क्यों भगवान् ने औरत में यह जादू क्यों भर दिया है ?

उसने अपनी परेशानी को कम करने के लिए सिगरेट का सहारा लिया।

"आप सिगरेट भी पीते हैं ?" गुलाबी होंठ हिले।

"हां, कभी-कभी, जब जिन्दगी में अंधेरा महसूस करता हूं, तो सिग-रेट की धीमी रोशनी का सहारा लेता हूं।"

"आपकी जिन्दगी में अंधेरा ?"

"हां, मेरी जिन्दगी में अंधेरों के सिवा कुछ नहीं है।"

"आपकी उम्र ही क्या है ?"

"अंधेरे उम्र के हिसाब से नहीं होते।"

"मैं समझी नहीं।"

"तुम समझ जातीं शारदा तो कार से नफरत क्यों करतीं ?"

"आप मुझे शर्मिन्दा न कीजिए।"

"शर्मिन्दा नहीं कर रहा बल्कि यह अनुभव करता रहा हूं कि हम एक इन्सान से केवल इसलिए घृणा नहीं कर सकते कि उसके पास कार है, अथवा वह अमीर है। इस संसार में बहुत से लोग बुरे हैं, मगर वह सब-के-सब पैसे वाले तो नहीं।"

"ऐसे लगता है, आपने मेरी बात का बुरा मान लिया।"

"यदि बुरा मानता तो तुमसे बातें करने की बजाये छोड़कर चला जाता।"

"महेश !" जवानी पिघल जाती है।

"हां शारदा।" वह उसी रंग में उत्तर देता है।

"मुझे क्षमा कर दो।"

"क्षमा—किस लिये ?"

"उस नफरत के लिए जो मैंने तुमसे की थी।"

"नहीं यह बात नहीं शारदा, मैंने तुम्हारी किसी बात का बुरा नहीं माना," वह गाड़ी को कच्ची सड़क पर उतार देता है जो गांव की ओर जा रही है।

यह सड़क बिलकुल सूनी है, चारों ओर खामोशी है। गांव की कच्ची सड़क पर धूल के सिवा क्या होगा? कभी कोई पैदल नजर आ जाता, या फिर कोई बैलगाड़ी।

"कहां ले जा रहे हो गाड़ी को—?" शारदा पूछती है।

"गाड़ी को नहीं तुम्हें भगा कर ले जा रहा हूं।"

"कैसी बातें कर रहे हैं आप?"

"वैसी ही बातें जो एक नौजवान लड़का, एक जवान लड़की को अकेले देखकर करता है।"

शारदा उसकी आंखों में झांकने का प्रयत्न करती है। दोनों की आंखें अपने आप टकरा जाती हैं, एकान्त और खामोशी में जब दो जवान दिल धड़कते हैं तो अपने-आप प्यार करने को जी चाहता है।

"शारदा!"

"हां महेश!"

महाकवि कालीदास ने कहा है कि जिंदगी केवल आज का नाम है, कल नाम की कोई चीज इस दुनिया में नहीं।"

"इतना बड़ा कवि झूठ थोड़े ही बोल सकता है।" शादरा उत्तर देती है।

"जब जिंदगी केवल आज का नाम है, तो कल का इन्तजार क्यों किया जाये?"

"इन्तजार···इन्तजार···केवल, इन्तजार·····इन्तजार भी तो एक जीवन है।" शारदा उसके निकट हो जाती है।

"महेश...यदि मैंने कोई ऐसी-वैसी बात कह दी हो क्षमा कर देना।"

"कही भी होगी तो मैं उसे भूल गया हूं। तुम भी भूलने का यत्न करो।"

"मैं तो बहुत कुछ भूल गई हूं।"

"सच !"

"इसमें झूठ की कौन-सी बात है।"

उसने अनुभव किया कि शारदा नहीं रोशनी है। रोशनी जो हर पल तेज़ होती जा रही है, जो बिल्कुल उसके निकट हो गई है, जिसकी सांसों की आवाज़ वह सुन रहा है, जिसकी नज़रों में से झांककर वह आत्मा में उतर गया है, वह आत्मा जिसमें सबसे अधिक शक्ति है, जो ईश्वर है, जो इन्सान की खामोश जबान है।

"आप मुझे ऐसे क्यों घूर रहे हैं?" शारदा बोल उठती है।

"इसलिये कि तुम मुझे अच्छी लगती हो।"

वह शर्माकर आंखें नीची कर लेती है, रोशनी और तेज हो गई, वह ज़बान से कुछ भी नहीं कह रही है, मगर आंखों से हर बात कह रही है। वह आंखों की जबान—समझ रहा है। इसीलिये उसके हाथ हरकत में आते हैं, वह अपना हाथ शारदा की बगल में डाल देता है।

जब शारदा उसके सीने से लगती है तो वह महसूस करता है कि सारी दुनिया में रोशनी-ही-रोशनी फैल गयी है। वह थोड़ा-सा शरमाती है, झिझकती है। इसमें इन्कार भी है और इकरार भी।

शारदा के गुलाबी होंठ? धीरे-धीरे कांप रहे हैं, उसकी नशीली आंखों से चिंगारियां-सी निकल रही हैं।

महेश के प्यासे होंठ बिलबिलाने लगते हैं, शारदा के होंठों को कांपते देखकर उसकी प्यास और भी बढ़ जाती है।

शारदा के होंठों में जिंदगी का अमृत टपक रहा है, वह जन्म-जन्म का प्यासा इस अमृत को पीना चाहता है। शारदा उसके सीने से लगी हुई है, वह कुछ भी तो नहीं कह रही। वह बेहोश-सी है, या मदहोश-सी, जिसकी जुलफें खुलकर उसके कंधों पर बिखरी हुई हैं। इन काली जुलफों के बिखरने से वह और भी हसीन हो गई है। रोशनी और तेज हो गयी है, इतनी तेज कि उसमें जलन महसूस होने लगी है।

इस जलन को [illegible] लिए उसने शारदा को अपनी बाँहों में और जोर से कस लिया, और फिर अपने प्यासे होंठ शारदा के होंठों पर रख दिये।

शारदा ने आँखें बन्द कर लीं, पलकों की छाया में उसका हुसन और भी अधिक निखर आया था, वह तो मुंह बन्द कर चुकी थी, खामोश उसकी गोद में लेटी हुई थी, जिसके सारे शरीर से चिंगारियां फूट रही थीं।

वह बहक चुका था, जवानी के कदम उखड़ गये थे।

नहीं···नहीं···एकदम से उसके अन्दर का इन्सान बोल उठा, जैसे शारदा की मासुमियत देखकर उसे तरस आ गया हो।

वह जल्दी से शारदा को छोड़कर उससे अलग हो गया। उखड़ी हुई सांसों पर काबू पाते हुए उसने गाड़ी स्टार्ट कर दी।

शारदा फटी-फटी आँखों से उसकी ओर देख रही है, परन्तु वह मौन है, लज्जित है। अपने इस पागलपन पर पछता रहा है। शारदा ठीक ही कार वालों से घृणा करती थी।

"शारदा मुझे क्षमा कर देना।"

"किस बात के लिए?"

"अपने इस पागलपन के लिए।"

"कैसा पागलपन?"

"यही जो मैं अभी-अभी कर बैठा था। वास्तव में बात यह है कि

मेरी सारी ज़िंदगी में अपना कोई आया ही नहीं, जब भी मैं किसी की आंखों में अपनेपन की झलक देखता हूँ तो बहक जाता हूँ। यह पागल-पन नहीं तो क्या है ?" उसकी आवाज़ दर्द से भर जाती है। उसे महसूस हो रहा है जैसे सदियों से रुका हुआ लावा फूटकर आंखों के रास्ते बाहर आना चाहता हो।

परन्तु वह अन्दर-ही-अन्दर अपने इस गम को पीने का यत्न करता है।

"आप बहुत दुःखी मालूम होते हैं ?" शारदा पूछती है।

"शरदा मुझे आपकी बजाए तुम कहकर बुलाओ तो शायद यह दुख कम हो जाए।"

"तुम बहुत दुःखी मालूम होते हो महेश।" शारद उसके कहने पर दुबारा कहती है।

"दुःख और सुख, खाली अनुभव करने की चीज है।"

"जो चीज होगी उसी का अनुभव किया जाएगा।"

"इससे लाभ क्या है ?"

"यही कि दूसरे को बताने से गम का बोझ हल्का होता है।"

"लेकिन अपने ग़म को किसी दूसरे पर लादकर उसे दुःखी क्यों किया जाए, शारदा यह दुनिया केवल खुशियों की साथी है, आंसुओं से हर व्यक्ति घृणा करता है। अपनी पूंजी केवल यही आंसू हैं, फिर इन्हें लुटाकर अपना खजाना क्यों खाली किया जाए ?"

"इसका अर्थ है तुम मुझको अभी तक गैर समझ रहे हो ?"

"गैर का प्रश्न नहीं शारदा।"

"तो फिर क्या बात है ?"

"बात बस इतनी-सी है, मैं तुम्हें अपने आंसू दिखाकर खोना नहीं

चाहता।"

"तो क्या तुम यह समझते हो कि मैं केवल तुम्हारे सुखों का साथ देने आई हूँ ?"

"यह बात नहीं।"

"यह बात नहीं, वह बात भी नहीं, फिर आखिर बात क्या है ?"

"यह बात फिर कभी बताऊँगा।"

वह शारदा को उसके घर के निकट उतार देता है।

: ७ :

यह घर है। इस घर में सुख कहां है, शांति कहां, अपना कौन है ? ये नौकर-चाकर, क्या ये अपने हो सकते हैं ? मम्मी जो केवल मम्मी है, माँ नहीं। अंग्रेज यहां से जाते समय हमारी माँ ले गये और हमें यह मम्मी दे गए; माँ और मम्मी के अन्तर को कौन समझेगा ? इसे तो वही बालक समझ सकता है जिसे माँ का प्यार न मिला हो, मम्मी मिल गई हो। माँ जो अपने बच्चे को लोरियां देकर सुलाती है, जो ममता की वर्षा किया करती है, जो अपने कलेजे के टुकड़े को सीने से लगा कर दुनिया के सारे प्यार निछावर करती है।

वह माँ इस घर में नहीं है। वह इस समय किसी क्लब में होगी, किसी मित्र के साथ......।

यह कैसी माँ है, नहीं-नहीं यह माँ नहीं मम्मी है, यदि माँ होती तो अपने बच्चे से प्यार करती। इस समय क्लब की बजाए घर में बैठी अपने बच्चे से बातें कर रही होती। कोई माँ शराब नहीं पीती। सिगरेट नहीं पीती...यह माँ सब कुछ करती है, दुनिया का हर काम करती है, जो काम डैडी नहीं कर पाते वह यह मम्मी कर आती है, घर के नौकर

कहते हैं, इस कारोबार को ऊँचा उठाने और बढ़ाने में मम्मी का हाथ है।

"डैडी।"

डैडी का ख्याल आते ही वह दीवार पर टँगी हुई, कवि कालीदास की तस्वीर की ओर देखता है।

महाकवि कालीदास हमारे देश का कवि है, हम उसे नहीं समझ पाते, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति की बातें करता है। हम होटलों और क्लबों में जाने वाले कालीदास को पढ़ेंगे। शाक्य मुनि, जाबाली ऋषि को पढ़ेंगे, अथवा हम मनु और व्यास के सिद्धांत पढ़ेंगे, इससे तो हमारी बेइज्जती होती है। इन होटलों और क्लबों में इनका नाम लेने वाले को तो पुराना, घटिया, अनपढ़ आदमी कहा जायेगा।

हम दुनिया की पहली कौम हैं, जो न अपने देश से प्यार करते हैं, न भाषा से, न सभ्यता से, न साहित्य से, इसीलिए हम सदियों से दास होते चले आये, धन के पुजारी, आजादी और दासता का अंतर क्या समझेंगे। वह तड़प उठता है, चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा है, उसे रोशनी चाहिये, इस अँधेरे में तो वह पागल हो जायेगा।

"रोशनी···रोशनी," वह चिल्लाता है।

"क्या हुआ छोटे सरकार!" निहाल चाचा भागा आता है।

"रोशनी···रोशनी···अँधेरा दूर करो···न जाने इस घर में सबसे अधिक अँधेरा क्यों है? इस घर में रोशनी नहीं।"

निहाल जानता है महेश रोशनी किसे कहता है? दूसरा कोई नहीं समझ सकता। महेश इतनी तेज रोशनी होते हुए भी अँधेरा कहता है। उसकी रोशनी कहाँ है। यह केवल वह बूढ़ा नौकर जानता है, जो इस घर की हर कहानी को जानता है, हर बात समझता है। वह महेश के अंदर के दर्द को समझता है, वह जानता है, इसे माँ-बाप का प्यार नहीं मिला,

इसे पैदा होते ही अंधेरे मिले हैं, इसीलिए वह जगह-जगह भटकता फिरता है, इसे अंधेरा-ही-अंधेरा नज़र आता है।

"माँ······" एक प्रश्न निहाल की आंखों के सामने घूमने लगता है, जिसका उत्तर वह महेश को नहीं दे सकता उसे कुछ भी नहीं कह सकता, क्योंकि उसके होंठ-सी दिये गए हैं। जबान बन्द कर दी गई है। उसे सीने पर पत्थर रखने पर मजबूर कर दिया है, उसके अन्दर का इन्सान सदा चीखता रहता है कि बता दो महेश को···।

"क्या बता दो ?"

"वह भेद जो तुमने अपने सीने में छुपा रखा है, जिसके कारण महेश के जीवन में अंधेरे छा गये हैं।"

"नहीं···नहीं···इस भेद के खुलते ही घर में कुहराम मच जायेगा, उसे जूते मारकर घर से निकाल दिया जायेगा, महेश जो पहले ही दुखी है और दुखी हो जायेगा, वह इस ठोकर को सहन नहीं कर सकेगा।"

"मगर किसी को धोखा देना भी तो ठीक नहीं, वह स्वयं से कहता है। इस दुनिया में धोखा है, केवल धोखा···।"

"चुप रहो निहाल···तुम चुप रहो···अभी वह समय नहीं आया, वह समय अभी दूर है···तुम इन्तजार करो···इन्तजार···"

"निहाल चाचा !" महेश जोर से आवाज देता है।

"आया छोटे सरकार !" उसका सारा ताना-बाना वहीं उलझकर रह जाता है। वह भूल ही गया था कि मैं किस काम से आया था।

जल्दी-जल्दी वह सोडा गिलास उठाता है। कुटी हुई बर्फ के टुकड़े प्लेट में रखकर उसकी मेज पर सजा देता है और साथ-ही-शराब की छोटी-सी बोतल जो बिल्कुल बन्द है मेज पर आ जाती है।

रोशनी बोतल में बन्द है, अंधेरों का सीना चीरने वाली रोशनी,

उसके सामने मेज पड़ी है, उसके हाथ तेजी से हिलते हैं, शराब को गिलास में डालकर और सोडा बर्फ मिलाकर चढ़ा जाता है।

रोशनी अंदर चली जाती है, इससे वह कुछ शान्ति अनुभव करता है।

निहाल चाचा ने मेज पर एक पलेट में टमाटर, खीरा, प्याज काट-कर रख दिये हैं, और फिर फर्श पर बैठकर उसके बूट खोलने लगता है।

"निहाल चाच, तुम्हें पचास बार कह चुका हूँ, यह काम मत किया करो, मेरे बूट न खोला करो।"

"यह मेरा फर्ज है छोटे सरकार।"

"नहीं···नहीं···यह तुम्हारा फर्ज मेरे दिमाग पर बोझ चढ़ाता है।"

"मैं नौकर हूँ छोटे सरकार।"

"नौकर हो तो क्या इन्सान नहीं हो।"

"यदि इन्सान नौकरी नहीं करेगा तो भूखा मर जायेगा छोटे सरकार ?"

"क्यों मर जायेगा ?"

"इसलिए कि नौकरी से उसे रोटी मिलती है।"

"रोटी नौकरी से मिलती है ?" वह हैरान हो जाता है।

"हाँ छोटे सरकार।'

"निहाल चाचा ! तुम और सब काम कर लिया करो, परन्तु मेरे पांव को हाथ न लगाया करो।"

"मैं आपका नौकर हूँ छोटे सरकार ?"

"नौकर···नौकर···यह क्या बीमारी है, मेरी समझ में नहीं आती, इस बारे में डैडी जानते हैं जिन्हें नौकरों की पूरी फौज की जरूरत है, मुझे नहीं।"

"छोटे सरकार आप भी तो इस घर के मालिक हैं।"

"मैं कुछ नहीं निहाल चाचा, तुम मेरे लिये परेशान मत हुआ करो, कौन मालिक है, कौन नौकर ? मुझे नहीं पता ।"

"छोटे सरकार एक दिन तो सारे कारोबार का बोझ आपके कंधों पर पड़ेगा ही, बड़े सरकार कब तक चलाएंगे ।"

"मैं क्या कारोबार चलाऊंगा निहाल चाचा ?" इतने बड़े झंझट पालने की जरूरत भी क्या है ? इस घर में किस चीज की कमी है, करोड़ों की सम्पति है, यदि इसको हम जीवन भर बैठ कर खाते रहें तो भी समाप्त नहीं होगी ।"

"यह तो आप सोचते हैं छोटे सरकार, बड़े सरकार तो कहते हैं अभी कारोबार को और बढ़ाना है ! कोठियां...?"

यह जरूरी नहीं जो वह सोचें वह हो, इस देश में और भी तो करोड़ों मनुष्य बसते हैं, उन्हें भी जीना है।"

"आप उनकी क्यों चिंता करते हैं ? छोटे सरकार ।"

"आखिर वे भी इस देश के इन्सान हैं ।"

"वे इन्सान आपके नौकर बन जाएंगे छोटे सरकार ।"

"मुझे नौकर नहीं चाहिए निहाल चाचा, दिल की शांति चाहिए, मुझे जिन्दगी का सहारा चाहिए । वह इस घर में नहीं है, यह घर नहीं अंधेरा है, जिस घर में मां-बाप का प्यार न हो, वह घर, घर नहीं होता ।" वह तेजी से शराब का गिलास पी जाता है ।

"छोटे सरकार ।"

"हां निहाल चाचा ।"

"आप सदा उदास क्यों रहते हैं ?"

"इस घर में उदासी के सिवा है ही क्या, निहार चाचा ?"

"आपको किस चीज की कमी है ?"

"प्यार की, जो इस घर में नहीं है और न होगा। न जाने क्यों निहाल चाचा मुझे इस घर से डर-सा लगने लगता है। मेरा दिल डूबने लगता है, ऐसा क्यों होता है ?" वह निहाल को झंझोरता है।

निहाल चाचा उसके दोनों हाथों को पकड़कर अपने सीने से लगा लेता है। उसके आंसू निकल आते हैं। वह कुछ कहना चाहता है, परन्तु उसके आंसू निकल आते हैं।

"निहाल चाचा ! तुम कुछ कहना चाहते हो, लेकिन न जाने क्यों रुक जाते हो, मुझे ऐसे लगता है तुम्हारे सीने में कोई गम पल रहा है।"

"कुछ नहीं छोटे सरकार, कुछ नहीं ! मैं तो पागल बूढ़ा हूँ, मेरी बातों की ओर मत जाया करो। मुझे तुमसे प्यार है, छोटे सरकार, बहुत प्यार···वह उसे अपनी बाहों में भर लेता है।"

वह भी उससे बच्चों की भांति लिपट जाता है, जैसे पहली बार कोई सच्चा प्यार मिला हो।

बाहर दरवाजे पर कार के हारन की आवाज सुनाई देती है। बड़े सरकार आ गये, बड़े सरकार आ गये, कोठी में चारों ओर एक शोर-सा उठता है, नौकरों की छोटी-सी फौज भागना शुरू हो जाती है, निहाल चाचा भी अपनी धोती को सम्भालता हुआ बाहर की ओर भागता है।

अब वह कमरे में फिर अकेला रह गया है, अकेला, बड़े सरकार घर में आ गये हैं। सारे नौकर उनकी सेवा में लग जाएंगे । तब भी उनके काम पूरे नहीं होंगे। इसके पश्चात् मम्मी घर में आ जायेगी फिर उसकी सेवा शुरू हो जायेगी।

वह शराब के साथ दिल बहला रहा है। कोठी में हँगामे शुरू है, कोई कार का दरवाजा खोल रहा है, कोई ठंडा पानी ला रहा है। कोई शराब की बोतलें सजा रहा है, किसी को खाना बनाने की चिन्ता है। किसी को कुछ पता नहीं, बड़े सरकार का क्या मूड आ जाये। वह क्या मांग बैठें, यदि कोई चीज न मिली तो सब की जान पर बन जायेगी।

सदा की भांति आज भी डैडी के साथ एक सुन्दर-सी लड़की है, इसकी उम्र बीस के करीब होगी, गोरा सफेद रंग, उसके ऊपर पोडर का मोटा लेप, होंठों पर लिपस्टिक की लाली दूर से ही चमक रही थी, काली जुल्फें कंधों पर बिखरी हुई, चुस्त लिबास, जिसमें से उसके शरीर का हर अंग साफ झांक रहा था। उसने अपने उभरे सीने को आधा नंगा कर रखा था । उसकी आंखों में चमक थी। यह चमक शराब की थी, अथवा जवानी की, महेश न समझ पाया ।

वह डैडी के हाथों में हाथ डाले चल रही है, अथवा डैडी उसके हाथों में हाथ डाले सहारा समझ कर चल रहे हैं। डैडी की उम्र कोई पचास के करीब होगी, पर इस बुढ़ापे में भी डैडी रोज नई लड़की के बिना नहीं रह सकते।

यह जुल्म है, अन्याय है, यह प्यार नहीं, यह तो जबरदस्ती है, तो फिर यह लड़की क्यों डैडी के साथ चल रही है ?

केवल पैसे के लिए, इसमें कितनी शक्ति है, बुढ़ापा जवानी को खरीद सकता है, मजबूरियां बिकती हैं। नहीं···नहीं···यह गलत है, इस समाज में करोड़ों लोग मजबूर हैं, उन्होंने अपनी इज्जत और धर्म को नहीं बेचा, तो फिर यह क्या बिकता है। वह स्वयं से प्रश्न करता है।

इस प्रश्न के साथ ही उसकी नजर कालीदास की तस्वीर पर जाकर रुक जाती है, एक ओर रवीन्द्रनाथ टैगोर खड़े हैं, जिन्होंने गीतांजलि की रचना की, महाकवि कालीदास की शकुन्तला चीख उठती है, वह स्वयं ही बोल उठता है ।

यह मॉडर्न समाज है । शरीर बेचकर ऐश के सामान खरीदे जाते हैं। यह अंग्रेजों की देन है, वे हमें यह भी सिखा गये हैं। वे जानते थे कि यह भारत की नारियां हैं, ये सती सावित्री, माता सीता, द्रौपदी, यशोदा, मीराबाई, रानी झांसी की बहनें हैं, ये सती होना जानती हैं। ये जोहर की रस्मों की पुजारिनें हैं। ये भारतवर्ष की जान हैं। ये ही

इस सभ्यता का जीवन हैं। यह कौम इन्ही के सहारे ऊंची उठी है, इस कौम की जड़ों को खोखला करना है तो इन्हें नये-नये फैशन सिखा दो। ये अपने सुन्दर बालों को काटना शुरू कर देंगी। अपने सुन्दर शरीर को अर्ध-नग्न करके बाजारों में चलेंगी, अपनी पवित्र छातियों को प्रदर्शनी का रूप दे देंगी।

"तो ?"

पुरुषों की सोई हुई भावनाएं जाग उठेंगी। यह होना प्राकृतिक है। पुरुष वासना का पुजारी है। वह औरत को इस प्रकार आधी नगी देखकर देश, कौम सभ्यता, सब कुछ भूल जायगा। बस स्त्री को पाने के के लिए दीवाना हो जायेगा ? यही है वह फार्मूला जिससे देश और कौम की जड़ खोखली हो सकती हैं, आजादी देते समय अंग्रेजों ने यही सोचा था।

डैडी अन्दर कमरे में पहुँच गये हैं। उनके साथ वही लड़की है। उनका कमरा उसके कमरे के साथ बिल्कुल मिला हुआ है। वहाँ से हर आवाज को वह सुन सकता है। शराब का दौर शुरू हो चुका है। धीरे-धीरे बात हो रही हैं। ये प्यार की बातें नहीं हैं जरूरत की बातें हैं। फिर डैडी को प्यार करने की जरूरत भी क्या है ? उन्हें रोज नई लड़की मिल सकती है। वह बातें तो केवल समय काटने के लिए करते हैं। उनके लिए औरत की आवश्यकता केवल बिस्तरे तक है। इससे आगे उन्होंने कभी जीवन में सोचा ही नही।

"सुनीता !" यह लड़की का नाम है, जो डैडी के साथ है।

"हां जी।"

"अब और सहन नहीं होता।"

"मेरा काम याद है न आपको।"

"क्या ?"

"मेरे भाई को काम चाहिए, वह बेकार है।"

"तुम बड़ी ही भोली हो सुनीता, जबकि तुम भली-भांति जानती हो कि मेरे यहाँ काम की क्या कमी है ?"

"इसीलिए तो मैं कह रही हूँ कि आपके पास काम अधिक है, आप इस काम को भूल जाएंगे।"

"नहीं भूलूंगा सुनीता......।"

"मगर याद रखना वह क्लर्क भर्ती नहीं होगा।"

"तुम्हारा भाई क्लर्क नहीं अफसर बनेगा। तुम क्यों चिन्ता करती हो ! हम तुम्हें भी अपना अफसर बना कर लाये हैं। बस अब इन बातों में समय नष्ट न करो।"

"फिर जैसे बिजली की रंगीन लाइट में आग लग गई हो।"

"उसके कानों ने एक चीख की आवाज सुनी।"

उसने महसूस किया जैसे महाकवि कालीदास के हाथ हिलने लगे हों। वह अपनी लेखनी उठाकर किसी नई शकुन्तला की रचना कर रहे हों।

दूसरे टैगोर जी सोच रहे हैं कि अब मुझे नई गीतांजलि की रचना करनी चाहिए।

उसकी नसों का खून तेजी से चलने लगा है। घुटना, नफरत, जलना, वह इन सबका शिकार हो रहा है। अंधेरा-अंधेरा...सामने पड़ी शराब की बोतल उसे पुकार रही है, मैं तुम्हारा साथ दूंगी।

वह शराब को गिलास में डालता है, और सोडा मिला कर जल्दी से चढ़ा जाता है।

"छोटे सरकार ! और कुछ चाहिये।" निहाल चाचा की आवाज उसके कानों में आती है।

"निहाल चाचा ! इस घर में यह सब कुछ कब तक होता रहेगा ?"

"जब तक यहाँ लक्ष्मी नाचती है।"

"निहाल चाचा ! अब मैं थक गया हूँ। यह सब देखना मुझसे सहन नहीं होता, मैं जल रहा हूँ।"

"छोटे सरकार ! उस ओर ध्यान मत दो। कोई और बात करो, अपनी पुस्तकें पढ़ा करो !"

"निहाल चाचा ! अब मैं बच्चा नहीं रहा।"

"बच्चे नहीं रहे, तो बन जाओ, ऐसे अवसर पर अपने कान बन्द कर लो। यह सब कुछ भूल जाया करो। मैं बीस वर्ष से यहाँ सब कुछ देख रहा हूँ। परन्तु मैंने अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं। जबान को सी लिया है। कान बन्द कर लिये हैं, गूंगों और बहरों का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, तुम्हें नहीं पता छोटे सरकार······तुम्हें नहीं पता, इस सीने में कितने भेदों को मैंने छुपा रखा है, कितनी कहानियों को दबा रखा है, इन कहानियों में आप भी एक कहानी हैं।"

"मैं एक कहानी हूँ···?"

"हाँ।"

"यह क्या कह रहे हो निहाल चाचा।"

"छोटे सरकार ! मैं इस कोठी का सबसे पुराना नौकर हूँ। मैं ही अभागा सब कुछ देखने के लिए रह गया। मैं जाना चाहता हूँ, लेकिन एक फर्ज ने मुझे बांध रखा है।"

"कैसा फर्ज ?"

"अभी उसके बताने का समय नहीं आया, छोटे सरकार ! अभी समय दूर है, मुझे तो डर इस बात का है कि तुम इस आग का शिकार न हो जाओ, रास्ते से न भटक जाओ, अब आप जवान हो गये हैं। सब समझने लगे हो।"

"निहाल चाचा मुझे कुछ पता नहीं तुम क्या कह रहे हो ?"

"आपको नहीं पता लगे तो अच्छा है छोटे सरकार !"

साथ वाले कमरे से फिर आवाज आई है।

"सुनीता······अब तुम नाचो·········वैसे ही जैसे कि आज हमने एक नंगी फिल्म क्लब में देखी थी। हां·········हां······कितना आनन्द आया था······आज की रात हम ऐसे ही करेंगे······ ।"

"जीवन इसी का नाम है—केवल इसी का नाम······। निहाल चाचा यहां अंधेरा है, अंधेरा······मैं जा रहा हूं······मैं जा रहा हूं······मेरा यहां दम घुट रहा है।"

यह कह कर वह बाहर निकल जाता है।

: ८ :

होटल उसका जाना पहचाना है। यह इस शहर में प्रसिद्ध होटल है। यहाँ सब ही बड़े लोग आते हैं। बड़े लोग बड़ी बातें, लाखों की करोड़ों की······कारोबार···इस होटल में पार्टियों पर कारोबार होता है। इन्सानों का, फैक्टरियों का, कारखानों का, ठेकों का, इसलिए लोग यहाँ खिचे चले आते हैं, होटल का मालिक उनके लिए हर चीज का प्रबन्ध करता है। अपने ग्राहकों का वह विशेष ध्यान रखता है। वह जानता है कि पैसा कैसे कमाया जा सकता है। होटल वाला भी कमाता है और ग्राहक भी यहाँ आकर कई प्रकार के लाभ उठाते हैं।

इस होटल में उसका एक स्पेशल कमरा है। यह सब उसके डैडी की कृपा है, जो उसका इतना ख्याल रखते हैं। होटल के बैरे उसे भली-भाँति जानते हैं। मालिक भी जानता है। उसने एक दिन यह बात भी सुनी थी कि इस होटल में उसके डैडी छुपे तौर पर भागीदार हैं। डैडी इस शहर में किस-किस कारोबार में भागीदार हैं, वह नहीं जानता। वास्तव में उसे कारोबारी जीवन से घृणा-सी है। डैडी ने कितनी बार कहा है कि तुम अपने कारोबार के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर लो, लेकिन वह तो सदा लापरवाह रहा। इस जिन्दगी की बेतरतीबी में ही उसे मजा आता है। इस कारोबारी जिन्दगी में रखा ही क्या है?

वह होटल में दाखिल होता है। कितने ही लोगों की निगाहें उसकी ओर उठती हैं। वे उसे घूर रहे हैं। शायद इसलिये कि उसके वस्त्र

ठीक नहीं। ठीक ढंग के वस्त्र न पहनकर आने वाले लोगों को इसी भांति घृणा से देखते हैं, लेकिन उसे तो स्वयं इन लोगों से घिन आती है। सब दौलत के पुजारी हैं, स्वार्थ के पुतले, इनकी नस-नस में स्वार्थ भरा हुआ है।

होटल का सारा हाल भरा पड़ा है। इनमें औरतें भी हैं, मर्द भी। औरतें जो कभी घर की शोभा होती थीं; जो घर की लक्ष्मी कह-लाती थीं, अब इन होटलों की शान बढ़ा रही हैं। कुछ औरतें सिगरेट भी पी रही हैं, मर्दों से खूब जी खोलकर बातें कर रही हैं, इनकी हँसी में भी एक अन्दाज है, इनके आधे नंगे शरीर लाल, पीली, हरी बत्तियों में चमक रहे हैं।

ये सुन्दर औरतें, जिनके शरीर से निकलती हुई जवानी की गन्ध सारे हाल को मस्त कर रही है। पुरुषों की भूखी और ललचाई हुई नजरें उन्हें घूर रही हैं। कामनाओं का धुँआ, भावनाओं की आग, वासना की घुटन, इसके साथ चाय, कॉफी···(शराब) जो केवल छुप-कर पी जाती थी। भाँति-भाँति के खाने, गोश्त, चावल, मछली······

"यह भूखा-नंगा देश है—" एक प्रश्न उसकी आँखों के सामने आकर खड़ा हो जाता है।

नहीं—नहीं······यह भूखा-नंगा देश नहीं, यह तो बहुत अमीर देश देश है। इस देश में गरीबी कहाँ होगी, जो लोग ऐसा कहते हैं वह झूठ बोलते हैं। धोखा देते हैं। यदि यह बात नहीं तो इन होटलों में आकर देख लें। यहाँ इतना खाया नहीं जाता जितना नष्ट किया जाता है। वह बड़बड़ाता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ जाता है।

होटल का बैरा उसे देखकर मुस्कराता है और उसके कैबिन का दरवाजा खोलता है। वह समझ जाता है यह अँधेरे का राही रोशनी की खोज में आया है। यह बनावटी रोशनी जिन्दगी के अँधेरों को कहाँ दूर करेगी, लेकिन फिर भी उसका यह वहम है, यही वहम तो इन्सान को

जीवित रहने के लिये बेबस करता है ?

"महेश बाबू ।"

"हाँ", वह बेपरवाही से उत्तर देता है ।

"आज कुछ देर से आये हो ।"

"देर और जल्दी का अन्तर मैं बड़ी देर से भूल चुका हूँ, फिर जल्दी आकर भी मैं क्या करता ?"

"यह बात नहीं···म···मम···।" वह हकलाने लगा ।

"और क्या बात थी ?" वह जल्दी से पूछता है ।

"मैं कुछ और कहना चाहता था ।"

"क्या कहना चाहते थे ?"

"यही कि आपका कोई इन्तजार कर रहा था ।"

"इन्तजार ! वह भी मेरा !"

"हाँ आपका इन्तजार ।"

"मगर मैंने तो किसी को इन्तजार के लिए नहीं कहा था ।"

"शायद आप कहकर भूल गये हों ।"

"नही ऐसी कोई बात नहीं ।"

"ऐसी ही बात थी महेश बाबू ! आप भूल गये हैं ?"

"तुम आज यह कैसी पहेलियां डाल रहे हो ?"

पहेलियां नहीं महेश बाबू, आप भूल गये हैं । खैर बैठिये मैं आपके पीने का प्रबन्ध करता हूँ ।

"मगर मैं वह इन्तजार की बात नहीं समझ सका ।"

"आप अभी समझ जाएंगे ।" बैरा यह कहकर बाहर जाने लगता है, तभी कैबिन में नीलम प्रवेश करती है ।

"नीलम······तुम······!" वह हैरान रह जाता है ।

नीलम की नजरें ऊपर उठीं और फिर झुक गईं ।

"क्षमा करना नीलम ।" वह घबरा जाता है ।

"इसमें क्षमा की कौन-सी बात है ?"

"इन्तजार ।"

"ओह···अब समझी !" यह कहते हुये वह मुस्कराती है, और कुर्सी पर बैठ जाती है।

"अच्छा हुआ तुम आ गईं नीलम ।"

"यदि न आती तो···?"

"मेरा गम और बढ़ जाता।"

"तुम्हें किस चीज का गम है ?"

"इस सूनी और उदास जिन्दगी का।"

"इस उम्र में सूनेपन और उदासी की भी क्या आवश्यकता है ?" नीलम फिर जोर से मुस्कराती है। उसके सफेद दांत सुर्ख होंठों के खुलते ही चमकने लगते हैं। उसकी काली जुल्फें चेहरे पर फैल जाती हैं, वह बड़े अन्दाज से इन जुल्फों को पीछे करती है। नीलम के इस अन्दाज में भी जादू है।

नीलम एक लड़की है, ऐसी लड़की जो जिन्दगी के अंधेरों में रोशनी का काम देती है। उसकी जवानी फूल की भांति खिली हुई है। उसके पास से इवनिंग इन पेरिस की भीनी-भीनी खुशबू आ रही है।

बैरा मेज पर शराब और सोडा सजा देता है।

वह गिलास में शराब डालने लगता है, परन्तु नीलम उसका हाथ पकड़ लेती है। नीलम की गोरी बांह कितनी खूबसूरत और चिकनी है, रेशम की भांति मुलायम हाथ, जो उसके खुरदरे हाथ में है।

"ठहरिये।"

"क्या ?" वह उसकी आंखों में झांकता है।

"मैं आपको पिलाती हूं।" वह बड़े प्यार से कहती है।

"यह हाथ शराब पिलाने के लिए नहीं।"

"शराब नहीं, मैं आपकी सेवा करना चाहती हूं।"

Library
Pratap College
...NAGAR
30222

"सेवा करने वाली लड़कियाँ होटलों और क्लबों में नहीं आतीं नीलम।"

"यदि वह होटलों और क्लबों में न आएँ तो आप जैसे देवता कहाँ मिलें ?"

नीलम के इस उत्तर पर वह निरुत्तर-सा हो जाता है। वह उसकी मस्त आँखों में खो जाता है, उसके ब्लाउज की बनावट इस प्रकार की है कि उसका उभरा सीना साफ दिखाई दे रहा है, उसकी नजरें औरत के इस उभरे हुए भाग पर आकर रुक जाती हैं। नीलम का हाथ उसके हाथों में है। वह धीरे-धीरे उसे बहला रही है। वह अपने सारे शरीर में चींटियाँ-सी रींगती अनुभव करता है।

"नीलम !"

"हूँ !"

"मुझे शराब पीने दो।"

"मैं मना कब करती हूँ।"

"हाथ हटाओ तो शराब डालूँ।"

"क्या मेरा हाथ इतना बुरा है ?"

"तुम्हारा हाथ बहुत सुन्दर है। तुम स्वयं बड़ी सुन्दर हो। तुम्हारे पास यह कोमल शरीर है। लम्बे बाल हैं, गुलाबी होंठ हैं, सुर्ख गाल हैं···जवानी है···और यह उभरा हुआ सीना···।" वह रुक जाता है।

"बोलो न महेश रुक क्यों गए ?" नारी अपनी प्रशंसा पुरुष के मुँह से सुनकर खुश होती है।

"नीलम ! तुम मुझे पहले शराब पी लेने दो।"

"क्या यह बहुत जरूरी है ?"

"हाँ, जीने के लिए तो कोई सहारा चाहिए।"

"क्या इसके बिना दुनिया में कोई सहारा नहीं ?"

"अभी तक तो नहीं।"

३०२२२

"मेरे बारे में क्या ख्याल है ?" नीलम सीधा प्रश्न करती है।

"क्या मैं इतनी बुरी हूं ?"

"बुरी होती तो मैं सोचता ही क्यों ?"

नीलम जोर से हँसती है, जैसे उसकी सादगी पर उसे दया आ गई हो और वह उसका हाथ बड़े प्यार से हटाकर बोतल से शराब गिलास में डाल देती है. फिर अपने हाथों से गिलास उसके लबों पर लगा देती है।

"ऊँ हूं !" महेश को अपनी बाल अवस्था याद आ जाती है।

"यह क्या ?"

"तुम भी तो पीओ।" वह दीवार पर लगी घंटी का बटन दबाता है, साथ बैरा भागा हुआ कमरे में दाखिल होता है।

"एक खाली गिलास और कुछ खाने के लिए।"

बैरा नीची नजरों से उसकी ओर देखता है। आज पहली बार वह खाने के लिए कुछ मांग रहा है।

थोड़ी देर में गिलास भी आ जाता है और साथ में एक बड़ी प्लेट में खाने के लिए भी। फिर दो जाम टकराते हैं और होंठों तक पहुंच जाते हैं।

"तुम्हारा शौक भी खूब है नीलम।"

"शौक नहीं महेश, यह तो खाली तुम्हारी खुशी के लिए है ?"

"चलो कुछ तो है, मैं तो यह समझ रहा था कि मेरा कोई है ही नहीं।"

"मेरे होते हुए आप यह नहीं कह सकते महेश।"

"क्या तुम मेरा साथ दे सकती हो ?"

"क्यों नहीं ?"

"मुझे डर है नीलम ?"

"किस बात का ?"

"कहीं तुम बिजली की भांति चमककर खो न जाओ, फूल की भांति

टूटकर टहनी से अलग न हो जाओ?"

"मैं गीत बन जाऊंगी तुम राग होगे, तुम साज होगे मैं आवाज, मैं फूल हूंगी तुम मेरी खुशबू, मैं बिजली हूंगी तुम चमक।"

"नीलम!" वह भावुकता में बह जाता है।

"हां महेश!"

"कहीं यह सब कुछ सपना तो नहीं।"

"क्या तुम्हें अपनी नीलम पर विश्वास नहीं?"

"मैं तो अभागा हूँ जिसे अपने पर विश्वास नहीं?"

"अपने-आपसे ऊंचा उठकर मेरी आंखों में झांककर देखो। मेरे दिल की गहराइयों में डूब जाओ, फिर अपने दिल से पूछो कि विश्वास है कि नहीं।"

फिर वह नीलम की आंखों में आंखें डाल देता है। नीलम की झील जैसी गहरी आंखों से जब उसकी आंखें टकराती हैं तो दोनों के दिलों में एक ज्वार-भाटा से उठता है।

कितनी देर तक वह एक-दूसरे में खोये रहते हैं, वह नीलम के सुन्दर शायराना बालों की ओर देख रहा है। नीलम का खूबसूरत और चांद-सा मुखड़ा उसकी आंखों के सामने है। उसके होंठ कुछ परेशान से हैं। नीलम की जवानी एक सुन्दर फूल की भांति खिल उठी है। स्त्री इन्सान की जरूरत के लिए बनाई गई है।

ॐ! सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

ॐ—जो है वह सत्य है।

सत्य जो है वह शिव है।

शिव जो है, वह सुन्दरता का प्रतीक है।

हजारों वर्ष पूर्व यह श्लोक लिख गया था, परन्तु यह आज भी नया-नया-सा लगता है। नीलम सुन्दरता है, यही मनुष्य की पूजा है। इससे बड़ी पूजा और क्या होगी?

वह अन्दर-ही-अन्दर सुलग उठा है। शराब का जाम उसके सामने पड़ा है। यह वही शराब है जिसके बिना एक पल वह नहीं रह सकता था। आज नीलम को सामने पाकर वह सब कुछ भूल गया था। नीलम के सुन्दर मुखड़े से वह अपनी नजरें नहीं हटाना चाहता था, वह नीलम को अपनी बाँहों के घेरे में लेना चाहता था।

इन्सान की यह इच्छा नई नहीं, सदियों पुरानी है। अब उससे और सहन नहीं होता, दिल की आग हर पल तेज हो रही है।

"नीलम चलो-चलें।"

"परन्तु यह शराब ?"

"बस, मैं और नहीं पीऊँगा, आज तुम्हारी आँखों से इतनी अधिक पी चुका हूँ कि और पीने की जरूरत नहीं।"

वह हाल में नीलम के हाथ-में-हाथ डाले चल रहा है, हाल में से जब वह गुजरता है तो कई आँखें उसे घूर रही हैं, लेकिन इस समय उसे किसी चीज की परवाह नहीं, उसे नीलम चाहिए थी मिल गई।

वह बाहर आकर नीलम की कार में बैठता है। आज वह कार को स्वयं चला रहा है। नीलम उसके साथ बैठी हुई है, वह महसूस करता है जैसे नीलम के शरीर से आग निकल रही हो। ऐसी ही आग उसके अपने शरीर में से भी निकलती है। दोनों के शरीर एक ही जैसी आग में जल रहे हैं।

वह गाड़ी को तेज़ कर देता है। अब गाडी पूरी गति से भाग रही है। उसकी गति वाली सूई कांपती हुई लाल चिन्ह को पार कर जाती है।

"यह क्या कर रहे हो महेश ?" नीलम घबराकर कहती है।

"कुछ भी तो नहीं।"

"भगवान के लिये इतनी तेज़ गाड़ी मत चलाओ।"

"मेरे दिल की धड़कनें इससे भी तेज़ चल रही हैं।"

"नहीं···नहीं···।" वह उसका हाथ पकड़ना चाहती।

"घबराओ नहीं नीलम ! अभी हम मरेंगे नहीं ?"

"मरने का प्रश्न नहीं ।"

"और काहे का प्रश्न है, जब इन्सान घबराता है तो मौत के डर से, और मैं वह इन्सान हूं जो सदा मौत से प्यार करता रहा हूं ।"

"ओहो…महेश…तुम कैसे इन्सान हो ?"

"एक दम जंगली ।" वह हंसकर उत्तर देता है।

"आप हंस रहे हैं, मेरी जान निकली जा रही ।"

"मेरे होते हुए यह जान नहीं निकलेगी नीलम ।"

"न जाने क्या तुम्हें इस समय पर मजाक सूझ रहा ।"

"यह मजाक नहीं ।"

"मजाक नहीं तो और क्या है ?"

"खेल ।"

"भगवान के लिये गाड़ी रोको , नहीं तो मैं चलती गाड़ी से कूद जाऊंगी ।"

"जो इन्सान तेज रफ्तार गाड़ी से डरता है, वह चलती गाड़ी से कूद नहीं सकता ।"

"तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो ?"

"यह परीक्षा नहीं प्यार है ।"

"यह प्यार नहीं, आत्म-हत्या है, देखो गाड़ी कांप रही है ।"

"उलटेगी नहीं ।"

"घबराओ नहीं, तुम्हारा घर आ गया है ।" वह कार रोक देता है ।

"धन्यवाद…।" वह सुख का सांस लेती है ।

वही बूढ़ी औरत दरवाजा खोलकर दोनों का स्वागत करती है । वह जाते ही सोफे में धंस जाता है । आज नीलम का घर उसे कुछ बदला-सा लग रहा है । सामने दीवार पर लगी "मोनालिसा" की तस्वीर निखर-सी आई है । उसके साथ ही अजन्ता की गुफाओं की तस्वीर वासना में डूबी

हुई है। उसके अन्दर की ज्वाला और भड़क उठती है। बूढ़ी औरत उसके लिए ठंडा पानी लेकर आती है।

वह दिल-ही-दिल में उसे कोस रहा है। वह एकांत चाहता है, बिलकुल एकांत, यह औरत नहीं दीवार है, दीवार जो उसके और नीलम के बीच खड़ी हो गई है।

"नीलम उस औरत को इशारा करती है।"

वह औरत बहुत समझदार है. इशारा पाते ही चली जाती है। अब कमरे मे उसके और नीलम के सिवा कोई नहीं, नीलम···नीलम···उसकी जरूरत···उसकी जिन्दगी···वह उठकर दरवाजे की कुंडी बन्द कर देता है।

"यह क्या ?" नीलम उससे पूछती है।

उसके प्रश्न के उत्तर में वह उसे अपनी बाँहों में भर लेता है, और वह दोनों पलँग पर गिर जाते हैं, दो झुलसते हुए शरीर, एक ही स्थान पर इकट्ठे हो जाते हैं। यह वही महेश है जो मानव मनोविज्ञान की बातें करता था, जो घर में औरत की चीख सुनकर पागल हो जाता था। उसकी बाहों में नीलम है, सुन्दर नीलम; और नीलम कसमसा रही है।

नीलम जो औरत है, औरत जो पुरुष की जरूरत है। जवानी की खोज जवानी ! जवानी एक आग है। भयंकर आग ! जब यह आग तूफान का रूप धारण करती है तो दुनिया की हर चीज को जलाकर रख देती है।

अब नीलम और महेश दोनों इस आग में जल रहे थे, आग···कुछ क्षण के पश्चात् समाप्त हो गई थी। तूफान गुजर गया था, वह अपने पीछे केवल अपने चिह्न छोड़ गया था।

"नीलम।"

"मुझे क्षमा कर देना।"

"किस चीज के लिए ?"

"इस भूल के लिए।"

Pratap College

इस भूल में मेरा भी तो बराबर का हाथ है, फिर यह भूल कैसी। यह

तो जरूरत थी। महेश मैं और तुम्हें दे भी क्या सकती हूँ ?"

एक स्त्री की इज्जत ही सब से बड़ा खजाना होती है, तुमने वह ही मेरे अर्पण कर दी, इससे अधिक मुझे क्या चाहिये ?

"महेश ! मुझे छोड़ तो न दोगे ?"

"नहीं नीलम ! ऐसा नहीं हो सकता।"

"सच !"

"बिलकुल सच नीलम ! तुमने एक भटके हुए राही को सहारा दिया है, गिरे हुए इन्सान को उठाकर गले से लगाया है, भला मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूंगा ?"

"मेरे महेश !" वह प्यार से उसके गले में बाहें डाल देती है।

महेश के सारे शरीर में एक झुरझरी-सी होती है। वह रोशनी और अंधेरे के चक्कर में एक बार फिर उलझ जाता है। रोशनी के पश्चात् अंधेरा जन्म लेता है, और अंधेरे की कोख से रोशनी। यह सब आवागमन का चक्कर है। उसकी बगल में लेटी हुई नीलम एक औरत है। वह औरत जिसकी कोख से इन्सान जन्म लेता है, और फिर इसी कोख की तलाश में अपना जीवन व्यतीत कर देता है।

वह अपने-आप ही इन्सान की मूर्खता पर हँस देता है। हजारों वर्ष उन्नति की मंजिलें तै करने के पश्चात् भी वह वहीं खड़ा है जहां से चला था। भले ही औरत के रूप बदल गये हैं, मगर उसकी जरूरत नहीं बदली।

वह नीलम को एक बार फिर चूम लेता है।

"महेश !"

"हां नीलम !"

"क्या तुम मुझे सदा के लिए अपना सकते हो ?"

"क्यों नहीं नीलम ?"

"मुझे तो डर लगता है महेश !"

"कैसा डर ?"

"यही कि तुम बड़े आदमी हो।"

"मैं बड़ा आदमी हूँ ?" वह हैरानी से पूछता है।

"बड़े ही नहीं बल्कि बहुत सड़े हो, मुझे होटल के बैरे ने बताया है, इसलिए तो मुझे डर लगता है।"

'यदि मैं इतना बड़ा होता, तो हम दोनों इकट्ठे कैसे होते, अब तुम स्वयं फैसला करो कि हम दोनों में इस समय कौन छोटा-बड़ा लगता है।"

"प्रश्न इसका नहीं, पूरे जीवन का है।"

'नीलम तुम भी कितनी भोली हो, जो उस जिन्दगी के बारे में पूछती हो, जिसका स्वयं कभी भरोसा नहीं। महाकवि कालीदास ने कहा है, जिन्दगी केवल आज का नाम है, आज मैं तुम्हारा हूँ, कल जब आयेगी फिर सोचेंगे। जिन्दगी केवल आज है।"

"तुम तो बहुत दूर चले गये हो महेश।"

"दूर कहां गया हूँ तुम्हारे पास लेटा हुआ हूँ।"

"तुमसे बातों में कोई नहीं जीत सकता।"

"मुझे बातें आती ही कहां है"

"यह भी खूब रही।" नीलम बड़े जोर से हंसती है।

उत्तर में वह भी हँस देता है।

"महेश ! क्या तुम मुझे दिन में नहीं मिलोगे ?"

"दिन में तो रोशनी होती है, अंधेरा तो खाली रात को होता है।"

"नहीं महेश ! मैं कल दिन में तुम्हारे साथ घूमना चाहती हूँ।" क्या तुम मेरे साथ घूमकर खुश नहीं होंगे।"

"मैं पत्थर तो नहीं नीलम।"

"तो फिर तुम इन्कार क्यों करते हो ?"

"मैंने इन्कार कब किया।"

"इकरार भी तो नहीं किया।"

"इकरार तो वहां किया जाता है, जहां इन्कार किया हो, तुमने मेरी जिन्दगी के अंधेरों का सीना चीर कर मुझे रोशनी दी है, मैं तुम्हारी बात

को कैसे मना करूँ ?"

"मेरे महेश ! मुझे पता था तुम मेरा दिल नहीं तोड़ोगे।"

"तुम्हारा दिल तोड़कर मैं जीवित कहाँ रह सकता हूँ ?"

"मैं किस योग्य हूँ महेश।"

"यह मेरे दिल से पूछो।"

"अच्छा अब मैं चलता हूँ।"

"मैं तुम्हें छोड़ आती हूँ।"

"नहीं मैं स्वयं चला जाऊँगा। वह वहाँ से बाहर आकर एक टैक्सी में बैठकर घर आता।"

: ६ :

दूसरे दिन वह कालेज नहीं गया, क्योंकि उसने नीलम को समय दे रखा था, हालांकि वह जानता था शारदा उसका इन्तजार कर रही होगी। नीलम शारदा को हरा चुकी थी, शारदा और नीलम में धरती-आकाश का अंतर था। शारदा को जब उसने हाथ लगाया तो वह शर्म से दोहरी हुई जा रही थी। घबरा रही थी, डर रही थी; यहां तक कि उससे आंखें मिलाने से भी घबरा रही थी। उसे उसकी कार से भी घृणा थी।

लेकिन उसकी अपेक्षा नीलम इस सारी दुनिया से बेपरवाह है, वह खुलेआम उससे होटल में मिलने चली आती है। अंधेरी रातों में जब वह भटकता-फिरता है तो अपनी जवानी उसे भेंट कर देती है। वह उससे प्यार ही नहीं बल्कि उसकी पूजा करने लगी है, इसके इशारों पर नाचती है। नीलम उसकी कोई भी तो बात नहीं टालती। उसे अपने घर ले जाकर शराब पिलाती है, खाना खिलाती है और प्यार करती है।

नीलम सुन्दरता की रानी है। वफा की पुतली है, वह गुलाला गीत है, नीलम उसका जीवन है। नीलम से मिलते ही उसकी जिन्दगी की राहें बदल गई हैं।

"नीलम···नीलम···।" वह कुर्सी पर लेटे-लेटे स्वयं ही पुकारने लगा।

"महेश !" उसके डैडी अन्दर आते हैं।

"हां डैडी !"

"ओह, वैरी गुड्, तुम तो आज हँस रहे हो। तुमने तो कपड़े भी ठीक ढंग से और बढ़िया पहन रखे हैं। यही नहीं बल्कि आज तो बालों में कंघी भी करली है और तेल भी डाल रखा है।

वह लजाकर आँखें नीची कर लेता है। उसे अब पता चला कि वास्तव में वह बदल गया है। पहली बार उसने ढंग से कपड़े पहने हैं। कंघी भी की है और खुश्क बालों में तेल भी डाला है। आज ही सुबह-सुबह डैडी उसके कमरे में चले आये हैं। परन्तु यह मम्मी''' इस प्रश्न पर आकर वह रुक गया, जैसे किसी पहाड़ से जा टकराया हो। यह कैसी मम्मी है जो किसी पहाड़ से भी अधिक संगदिल है।

"महेश, किस सोच में पड़ गये ?" डैडी ने उसे अपनी बगल में ले लिया। वह डैडी से लिपट जाता है, किस समय उसे पता न चला कि उसकी आँखें गीली हो गई हैं।

"पगले ! तू रो रहा है।" डैडी उसके मुँह को चूम लेते हैं।

"रो तो नहीं रहा डैडी !" उसकी आवाज भर आती है।

" तो फिर यह आँसू कैसे ?"

"यह प्यार के आँसू हैं। मुझे ऐसे लगता है कि जैसे आप रास्ता भूल गए हों।"

"नहीं महेश, ऐसी बात नहीं। तुम मुझे समझने में भूल कर रहे हो, तुम स्वयं ही बताओ कि आज तक मैंने तुम्हें किसी बात से रोका है। इस घर में तुम्हारी किसी आज्ञा का पालन नहीं हुआ। इतना बड़ा कारोबार केवल तुम्हारा है। इतनी बड़ी सम्पति के तुम अकेले ही मालिक हो।

"डैडी ! एक बात बताओ?"

"पूछो !"

'क्या दौलत, कोठियाँ, कारें, इन्सान को दिल की खुशि[illegible] सकती हैं ? क्या इससे आत्मा को शांति मिल सकती है ?"

"महेश—तुम जीवन के अंधेरे मार्ग की ओर क्यों देखते हो ? तुम कालीदास, टैगोर, प्रेमचन्द, सूर, कबीर, जैसे महान् कलाकारों को पढ़ने

के पश्चात् भी अँधेरे की ओर क्यों देखते हो ?"

"मैं अँधेरों की ओर नहीं देख रहा डैडी, खाली अँधेरे के बारे में पूछता हूं।"

"पूछने से क्या मिलेगा ?"

"एक प्रश्न का उत्तर, जो मुझे इतने वर्षों से नहीं मिल पाया, जिसे मेरी आत्मा बोझ महसूस कर रही है।"

"वह कौन-सा प्रश्न है ?"

"मेरी मां—जिसे आपने मम्मी बना दिया है, यह पत्थर क्यों है ?" वह पूरे जोर से बोला, और डैडी की आंखों में झांकने लगा। यहां गम की परछायां तैर रही थीं, पहली बार···केवल पहली बार···वह आज डैडी की आंखों में गम देख रहा है। वह महसूस करता है, जैसे पत्थर को जोंक लग गये हैं। उनके चेहरे पर कितने ही रंग आये और कितने ही गये। वह कुछ कहना चाहते हैं। परन्तु उनकी आवाज गले में फँस-कर रह गई।

"महेश—यदि वह पत्थर है तो तुम कौन-सा मोम बन गये हो ?"

"मैंने मोम बनकर भी देख लिया डैडी ! मगर वह पत्थर नहीं पिघला।"

"महेश—वह तुम्हारी मां है।"

"काश ! वह एक रोज भी मेरी मां बनकर मुझे प्यार करे, मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं डैडी कि उसका मोह नहीं छोडूंगा। मैं उसके चरणों से नहीं उठूंगा," उसके आंसू और तेज हो जाते हैं।

"बेटा ! अब तुम जवान हो गये हो, तुम भी बचपन से जिद्दी रहे हो, और वह तुमसे भी अधिक जिद्दी है, औरत और बालक की जिद तो विश्व में मशहूर है। मगर अब तुम ही मान जाओ।"

"मेरे मानने अथवा न मानने से क्या होता है ? मैं जानता हूं, मम्मी नहीं मानेगी, क्योंकि वह मां नहीं रही मम्मी बन गई है। वह मम्मी जो

होटलों और क्लबों में जाती है। जो शराब पीती है, क्लबों में डांस करती है, उफ डैडी···इस घर में·······" उसकी आवाज गले में रुक जाती है।

"डैडी···इस घर में प्यार कहाँ है···न माँ का प्यार, न बेटे का, इस घर को आप कहते हैं यह बड़े लोगों का घर है. काश ! इसे आप बड़े लोगों का घर न बनाकर छोटे लोगों का घर बना देते तो कितना अच्छा होता !"

"डैडी यह बड़ा घर है, इस बड़े घर की खुशियां होटलों और क्लबों ने लूट ली हैं। यदि यह छोटा घर होता, तो इसमें सुख होता, शान्ति होती, ये रिश्ते होते, मगर अब यहां क्या है···मुझे तो यह कहते हुए भी शर्म आती है। मेरा तो खून उबलने लगता है। मेरे अन्दर तो आग लगती है। जब मैं मम्मी को किसी होटल, क्लब में गैर मर्दों के साथ देखता हूँ।"

"डैडी···काश···आप मेरे पैदा होते ही मेरा गला घोंट देते, मुझे मार देते डैडी ! मुझे कोई दुःख न होता, कोई कष्ट न होता, इस तरह सिसककर मरने से तो एक बार मरना अच्छा था। मैं भी कितना बेगैरत बेटा हूँ जिसकी आंखों के सामने ही उसकी मां गैरों से मित्रता करती है, दूसरे पुरुषों के साथ नाचती है, और फिर हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हम माडर्न हो गये हैं।"

"बेटा महेश ! तुम्हें इन बातों के बारे में नहीं सोचना चाहिए। माडर्न सोसाइटी में यह चीज बुरी नहीं गिनी जाती।"

"डैडी !"···वह तड़पकर उनकी गोद से बाहर आ जाता है ! "डैडी यह माडर्न सोसाइटी नहीं हमारी सभ्यता के माथे पर कलंक है। जिसे आप माडर्न कहते हैं यही सबसे बड़ा धोखा है, जिस समाज में औरत वेश्या का रूप धारण कर ले, वह समाज तबाह होकर रहता है, वह कौम मिट जाती है, वह देश उजड़ जाता है। यह माडर्न सोसाइटी हमें बर्बादी की ओर ले जा रही है। इस चीज से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जिस देश को तबाह करना हो उसकी सभ्यता को तबाह कर दो।"

"महेश ! यह सब कारोबारी बातें हैं।"

"यह कारोबारी नहीं धन की पूजा की बातें हैं; हम अपनी लालसा को पूरा करने के लिये धन के पुजारी बन गये हैं, इस दौलत को कमाने के लिए हम अपनी बहू-बेटियों का सौदा करने से भी नहीं चूकते।"

"महेश !" उसके डैडी चिल्ला उठते हैं।

"सच्चाई इतनी ही कड़वी होती है, डैडी।"

"यह सच नहीं तुम्हारा पागलपन है, जरूर तुम पर समाजवाद का प्रभाव पड़ गया है।"

"यह समाजवाद क्या होता है ?" वह आश्चर्य से पूछता है।

"तुम्हारे जैसे सिर फिरे नौजवानों को गुमराह करने का एक नया मार्ग, जिन्हें अभी जिन्दगी और कारोबार से वास्ता नहीं पड़ा।"

"और भगवान ने चाहा तो पड़ेगा भी नहीं।"

"ऐसा न कहो महेश बेटा, मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हारी खुशी के लिए जिन्दा हूँ, केवल तुम्हारी खुशी के लिए। यह जो कुछ मैं कर रहा हूँ सब कुछ तुम्हारे लिए ही तो है। इतनी बड़ी सम्पत्ति के मालिक तुम हो या तुम्हारी मम्मी, मेरा क्या है मैं आज भी सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।"

"डैडी मैंने सम्पत्ति को पाने की कोई बात नहीं की।"

"मगर मेरा तो कर्त्तव्य है कि मैं तुम्हारा ख्याल रखूं। खैर छोड़ो इन बातों को, मैं तो तुम्हें यह बताने आया था कि कल तुम्हारा जन्म-दिन है।"

ओह ! मैं भी कितना पागल हूँ जिसे अपने जन्म-दिन का ही पता नहीं।"

"इसीलिए तो कहता हूँ तुम जिन्दगी की राह से भटक गये हो।"

"मैं मजबूर हो गया हूँ डैडी।"

"मजबूर नहीं, अभी बच्चे हो, अब जाओ जन्म-दिन की तैयारी करो,

कल ही मैं वकील से कहकर तुम्हारे कागजात तैयार करवा रहा हूँ।"

"कौन से कागजात ?"

"इस जायदाद के, कल तुम्हारे जन्म-दिन की खुशी में मैं इस जायदाद का बँटवारा कर रहा हूँ।"

"कैसी बातें कर रहे हैं डैडी आप ?"

"यह बहुत जरूरी बातें है महेश, अक्सर खानदान के झगड़े जायदाद के कारण होते हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरी मौत के पीछे कोई ऐसा झगड़ा खड़ा हो।"

"डैडी मौत का नाम न लो।"

"मौत से घबराना नहीं चाहिए मेरे बेटे! यह अटल है।"

"मगर आपके बिना मेरा कौन है ?"

"भगवान।"

"नहीं···नहीं···डैडी···मुझे भगवान के हवाले मत कीजिये, एक बेटे को बाप की पहले जरूरत है, भगवान की बाद में।"

"सब चीजें ठीक हैं मेरे बेटे! अब मैं कल अपनी इच्छा पूरा करूंगा, कुल मिलाकर यह सारी जायदाद पन्द्रह करोड़ की है। मेरी मौत के पश्चात् दो यह भागों में बँट जायेगी, आधी तुम्हारी, आधी तुम्हारी मम्मी की! बस यही मेरी अन्तिम इच्छा है। जिसे कल पूरा करूंगा।" यह कहकर डैडी चले गये।

"वह करोड़ों का मालिक होने जा रहा है।" वह स्वयं हल्का-सा मुस्कराता है। अब उसकी मंजिल नीलम है, नीलम घर पर ही थी, उसे देखकर वह स्वयं हैरान रह गई, क्योंकि वह समय से बहुत पहले आ गया था। उसे आते देखकर वह सोफे से उठकर मुस्कराती है।

नीलम ने इस समय जो वस्त्र पहन रखे हैं, यदि वह नंगी नहीं हुई तो नंगेपन की सीमाएँ अवश्य पार कर चुकी है। उसकी मस्त जवानी फूट-फूटकर बाहर आ रही है, उसके काले बाल बादल बनकर चारों ओर

बिखरे हुए हैं। उसका गोरा-गोरा मुखड़ा, इन काले बालों में कितना सुन्दर दिखाई दे रहा है।

नीलम एक औरत है, जवानी है, जो अपने शरीर के हर अंग की प्रदर्शनी करती है। यदि इसे देखकर किसी पुरुष की कामुकता भड़ककर काबू से बाहर हो जाए तो कौन-सी बड़ी बात है। वह नीलम के अध-नंगे शरीर से आँखें नहीं मिला सकता, लेकिन वह महसूस करता है, नीलम को इस से कोई अन्तर नहीं पड़ा।

"क्षमा करना नीलम, मैं समय से पहले चला आया।"

"यह तो और भी अच्छा हुआ।"

"मैं डरता था कहीं तुम बुरा न मान जाओ।"

"अपने देवता के आने का कोई देवी बुरा नहीं मानती!"

"सच नीलम।"

"क्या तुम अपनी नीलम को अभी तक इतना ग़ैर समझते हो।"

"ग़ैर तो नहीं, फिर भी···" उसकी ज़बान रुक जाती है। नीलम आगे बढ़कर उसे अपनी बग़ल में लेती है, और पास ही सोफे पर बैठा लेती है और दीवार पर लगी घण्टी का बटन दबाती है।

वही बूढ़ी औरत भागी हुई आती है।

"आण्टी महेश के लिये चाय लाओ।"

"नहीं नीलम, चाय किसी होटल में चलकर पीएंगे!"

"तो क्या घर से चाय पीये बिना जाएंगे।"

"तुमतो दुनियाबी बातों में पड़ गई हो, आखिर इसमें क्या अन्तर है।"

"अन्तर तो कुछ नहीं, फिर भी बुरा-सा लगता है।" यह कहते हुए नीलम एक भरपूर अंगड़ाई लेती है जिससे उसका शबाब जवानी की सीमाएं पारकर बाहर आ जाता है।

इससे पहले कि महेश उसका कोई जवाब दे, वह इसके शबाब की आग में सुलगने लगता है। वह हज़ार यत्न के पश्चात् भी अपने

आप को नहीं रोक पाता। इस जवानी की आग से वह कैसे बच पाता, जो जलाई ही उसके लिए गई थी। नीलम अपनी जवानी का मूल्य भली-भांति जानती है। वह इन्कार और इकरार दोनों का प्रयोग करती है, महेश उसके निकट आ गया है।

"नीलम !"

"हां महेश !"

"तुमने मुझ पर कोई जादू कर दिया है।"

"यदि यही बात मैं तुमसे कहूँ।"

"मैं इस योग्य ही नहीं।"

"तो तुम्हारे ख्याल में मैं जादूगरनी हूँ।"

"मुझे तो ऐसे ही लगता है।"

"महेश ! यह जादू नहीं प्रेम है।"

"सच नीलम," वह उसे बांहों में भर लेता है।

"अब भी तुम्हें अपने प्रेम पर विश्वास नहीं।"

"नीलम मेरा इस दुनिया में कोई नहीं।"

"मैं कौन हूँ।" वह उसकी आंखों में झांकती है।

"तुम नीलम हो।"

"बस ख़ाली नीलम !" वह फिर प्रश्न करती है।

"नीलम होना कोई साधारण बात है।"

"बहुत साधारण।"

"लेकिन तुम्हारा प्यार तो साधारण नहीं।"

"महेश !" वह उससे लिपट जाती है।

वह एकदम संभलता है, जैसे सोये हुये जागा हो।

"नीलम सुबह-सुबह दिल ख़राब होता है चलो बाहर चलें।"

फिर दोनों कार में सवार हो जाते हैं।

"होटल मनोरंजन में चलो महेश !"

"बहुत खूब !" वह हंस देता है।

: १० :

"होटल मनोरंजन"

शहर का माना हुआ बड़ा होटल है। वह पहली बार ही इस होटल में आया है। मगर नीलम की चाल बता रही है कि वह यहां एक बार नहीं कई बार आ चुकी है। वह बड़ी लापरवाही से चल रही है। उसका एक हाथ नीलम के हाथों में है। कई लड़कियां इधर से उधर चक्कर काट रही हैं। कई एक उन दोनों को इकट्ठे देखकर खुसर-फुसर कर रही हैं।

"महेश!"

"हां!"

"क्या अन्दर जाने से पहले तुम कुछ खरीदना पसंद करोगे?"

"मेरी पसंद तुम्हारे साथ ही है नीलम, मगर यह तो होटल है?"

"होटल नहीं यह एक शहर है। यहां दुनियां की हर चीज मिलती है, होटल बनाने वालों की यह इच्छा थी कि हमारे ग्राहकों को कोई चीज लेने के लिए भी बाहर न जाना पड़े।"

"वाह! वाह! इसका अर्थ है तुम यहां की पुरानी ग्राहक हो।"

नीलम महेश के इस अंदाज को भांप गई, परन्तु वह कच्ची गोलियां नहीं खेली थी, वह जानती थी कि महेश ऐसे प्रश्न करेगा, उसने जल्दी ही अपनी बात-चीत का रुख बदल दिया, और उसका हाथ दबाते हुए बोली, "मैं कई बार डैडी के साथ यहां शापिंग के लिए आती हूं।"

"खैर आज मैं तुम्हारे साथ हूं फिर कल मेरा-जन्म दिन है।"

"ओ—वैरीगुड । तुमने मुझे पहले क्यों न बताया ।"

"मैंने सोचा था होटल में चलकर बता दूंगा ।"

"चलो अच्छा हुआ । मैं अभी उपहार खरीद लूंगी ।"

"नीलम ! मैं अपना जन्म-दिन उपहार इकट्ठे करने के लिए नहीं मनाया करता ।"

"लोग जन्म दिन उपहारों खुशी के लिये मनाते हैं ।"

"और यही खुशी उपहारों का मार्ग खोलती है ।"

"कुछ भी समझ लो नीलम ! खैर तुम अपने लिए पसन्द करो ।"

नीलम···अपने लिए साड़ियों-और कुछ नये प्रकार के कपड़े पसन्द करके काऊँटर पर लाती है । वह बिल देने के लिए हाथ बढ़ाती है परन्तु महेश उसे रोक देता है । वह बड़े अन्दाज़ से महेश को रोकती है, मगर वह जानता है यह शापिंग मेरे नाम की है ।

इसके पश्चात् दोनों एक सुन्दर से कमरे में से होकर होटल से निचले भाग की ओर चले जाते हैं । यहां एक खूबसूरत होटल है, जिसकी दीवारें दरवाजें सब कुछ शीशे के हैं, बाहर से कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता कि नीचे इतना अच्छा होटल होगा, वह एक कुर्सी में धंस जाता है।

"क्यों पसन्द आया होटल ?"

"होटल के अन्दर होटल···क्या खूब है," वह ताजा सिगरेट जलाता है, और पास ही बैठे लड़के-लड़कियों की ओर देखता है । चारों ओर लड़के लड़कियां विराजमान हैं, हर ओर प्रेम का बाजार गर्म है ।

"होटल के अन्दर होटल, और इस होटल के अन्दर जो सामने तैरने का तालाब, होटल के मालिक ने लाखों रुपये खर्च करके बनवाया है । वह तुमने देखा ही नहीं," नीलम शीशे की दीवार की ओर इशारा करती है ।

उसकी निगाहें उठती हैं, तो वह हैरान रह जाता है, इस शीशे की दीवार में से इस तालाब का नजारा कितना सुन्दर दिखाई पड़ता है । वहां लड़के-लड़कियां इकट्ठे मिल कर नहा रहे हैं, लड़कियों के शरीर

पर लड़कों की भाँति ही एक छोटा-सा जाँघिया है। सीने के ऊपर काँचे रंग की पेटियाँ, किनारों पर रबड़ के मोटे-मोटे गद्दे बिछे हुये हैं, कुछ लड़कियाँ लड़कों के साथ ऊँधी लेटी हुई हैं।

यह होटल है अथवा स्वर्ग का कोई भाग। यह चारों ओर परियाँ-ही-परियाँ हैं और उनके साथ··· ।

"नीलम यह सब कुछ क्या है ?"

"यह जिन्दगी है महेश ! तुम स्वयं ही तो कहा करते थे, जिन्दगी केवल आज का नाम है, फिर क्या सोच रहे हो ?"

"मैं सोच रहा हूँ नीलम कि इन्सान हजारों वर्ष पहले जो करता था, वही आज कर रहा है, अन्तर केवल इतना पड़ा है वह इन्सान पढ़ा-लिखा नहीं था, आज का इन्सान पढ़ा-लिखा है। वह जंगलों में नंगा फिरता था, यह होटलों में नंगा···

"तुम बहुत दूर चले गये हो महेश। जिन्दगी जिन्दा रहने का नाम है, यह सोच कर देखो।"

"नीलम ! मुझे ऐसी जिन्दगी से कोई प्यार नहीं।"

"मुझसे तो प्यार है।"

"हाँ, ऐसा ही कुछ लगता है।"

"तो फिर मेरे लिए जिन्दगी को अपना कर देखो।"

"यदि यह बात है, तो मैं मौत को भी गले लगा सकता हूँ।"

"मैं मौत की नहीं जिन्दगी बातें करती हूँ। मैं तुम्हारे लबों से उदासी छीनकर खुशी भरना चाहती हूँ।"

"नीलम मैं तुम्हारे इस प्यार को कभी नहीं भूलूंगा।"

"फिर क्या देख रहे हो, आओ, इस नई जिन्दगी में कूद जाएँ, यहाँ सब प्रेमी नहा रहे हैं हम भी···"

"लेकिन कपड़े।"

"सब कुछ होटल वालों की ओर से मिलता है।"

फिर वह दोनों तालाब में कूद जाते हैं।

जिन्दगी···चारों ओर बिखरी पड़ी है, परियां···राजा इन्द्र के अखाड़े की परियां···मरने के पश्चात् स्वर्ग में यह सब कुछ न मिले मगर यहां···

नीलम ठीक कहती है मैं जिंदगी देती हूं···हँसी देती हूं···वह आज यह सब कुछ दे रही है। तालाब में भी वह प्रेम जगा रही है, क्योंकि चारों ओर यही हो रहा है।

कितनी देर तक वह इस नई जिंदगी का मजा लेता रहा और फिर वे होटल में बैठे रहे।

जब वहां से बाहर निकले तो शाम हो चुकी थी।

× × ×

नीलम को घर छोड़कर जब वह वापस आ रहा था तो अचानक ही रास्ते में शारदा नजर आ गई, जब उसने उसके पास ले जाकर गाड़ी रोकी तो वह डर गई।

"शारदा।"

"अरे तुम···महेश!" वह हैरानी से बोलती है।

"क्यों मेरा आना बुरा लगा?"

"बुरा तो नहीं, अच्छा लगा है, लेकिन तुम आज कालेज···।

"कालेज नहीं आया तो क्या है, यहां तो आ गया हूं।"

"आज तो बहुत खुश नजर आ रहे हो।"

"तुम्हें देखकर।"

"मुझे देखकर या किसी को पाकर।"

"नहीं शारदा, ऐसी बात नहीं।" वह झेंप जाता है।

"यदि यह बात न होती तो कालेज से गैरहाजिर न रहते।"

"गाड़ी में बैठो फिर बताऊंगा।"

"यदि न बैठूं।"

"यह कभी नहीं हो सकता।"

"क्या इतना विश्वास है ?"

"यदि विश्वास न होता तो गाड़ी क्यों रोकता ?"

"अच्छा ! तो मैं तुम्हारे विश्वास को ठेस नहीं पहुंचाती।" यह कह कर शारदा गाड़ी में बैठ जाती है।

"तुम किधर जा रही हो ?"

"घर।"

"इस समय।"

"और लोग घर किस समय जाते हैं ?"

"जब नींद आ जाती है।"

"बहुत खूब।" शारदा खिलखिलाकर हँसती है।

"क्या मेरी बात गलत है ?"

गलत भी हो तो क्या कर सकती हूँ।"

"मैं उसे वापस ले लूंगा।"

"कही हुई बात वापस नहीं ली जा सकती।"

"क्षमा तो मांगी जा सकती है।"

"क्षमा की भी कोई जरूरत नहीं, आप बड़े आदमी हैं।"

"मैं बड़ा आदमी हूँ।"

"हाँ···हाँ···मुझे पता चल गया है।"

"किसी ने मजाक किया होगा।"

"कोई मुझसे ऐसा मज़ाक क्यों करने लगा ?"

"मेरा मज़ाक उड़ाने के लिए।"

"झूठ···बिल्कुल झूठ ···क्या मैं यह भी नहीं पहचान सकती आप किस वंश से है ?"

"क्या मेरी कार ही मेरे बड़े पन की निशानी है ?"

"और अमीर होने की निशानी पैदल चलना होती है।"

"शारदा क्या कार वाले लोग इतने ही बुरे होते हैं ?"

"मैंने बुरा कभी नहीं कहा। हां, इतना अवश्य कहूँगी कि गरीब और अमीर का मेल अच्छा नहीं होता।"

"क्या कोई अमीर गरीब को गले नहीं लगा सकता।"

"महेश ! यह सब कहने की बातें हैं।"

"समय आने पर परीक्षा कर लेना, शारदा।"

"यदि समय से पहले ही परीक्षा करना चाहूँ तो ?"

"यह मेरा सौभाग्य होगा।"

"तो चलो कार को मोड़ लो।"

"कहां ?"

"जहां इस देश के नब्बे प्रतिशत लोग ,रहते हैं, जिनका जीवन बड़े लोगों से ओझल रहता है। यहां जो घृणा के पात्र हैं, जो ठुकराये जाते हैं, जो आंसू बहाते है, जहां भूख नाचती है, बीमारियां जन्म लेती हैं, परेशानियां जिनका सबसे बड़ा जेवर है, मजबूरियां जिनकी पोशाक है।"

"शारदा !" वह तड़प उठता है।

"क्यों सच्चाई से आखें मिलाते हुए डर लगता है ?"

"डर नहीं लगता, शारदा।"

"तो फिर क्यों घबरा गए, अभी तो बातें सुनी हैं, जब आंखों से देखोगे तो क्या हाल होगा ?"

"ऐसे नहीं शारदा, इन चीजों को किसी और समय के लिए रहने दें।"

"मगर आज क्या हर्ज है ? यदि तुमने घृणा का कारण पूछा है, तो अपनी आंखों से देख लो। इस समाज के अंधेरे कितने गहरे होते हैं, नफरत के कीड़े कहां से जन्म लेते हैं; यह भी तो एक दुनिया है, हमारे भारतवर्ष की दुनिया।"

"शारदा, इस समय हम प्रेम की बातें नहीं कर सकते।"

"अवश्य कर सकते हैं, परन्तु एक बार वहां से होकर आने के पश्चात् यदि तुम वे बातें करने की शक्ति रखो तो।"

"अच्छा शारदा चलो।"

: ११ :

"शारदा !"

"हाँ महेश !"

"आज कुछ ऐसे लग रहा है, जैसे तुम मुझसे नाराज हो।"

"मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं की महेश।"

"इससे अधिक नाराजगी की बात क्या हो सकती है ? आज तुम प्रेम की बजाय मुझे वह मार्ग दिखाने चली हो, जो इसके रास्ते का रोड़ा है।"

"इसलिए कि मैं उसी रास्ते का एक पत्थर हूँ।"

"तुम पत्थर नहीं शारदा एक देवी हो।"

"प्रेम करने से पहले हर नवयुवक इन्हीं शब्दों का प्रयोग करता है। और आज मैं तुम्हारे अन्दर एक नई तब्दीली महसूस कर रही हूँ।"

"शारदा मैं दिल से यह बात कह रहा हूँ। मेरे अन्दर कोई तब्दीली नहीं आई।"

"यह तुम्हें पता नहीं चलेगा महेश !"

"तुम मुझसे अधिक मुझे जानती हो।"

"हाँ।"

"यह झूठ है।"

"सच क्या है ?"

"जो मैं कह रहा हूँ।"

"वही सबसे बड़ा झूठ है। यदि तुम सच ही सुनना चाहते हो तो सुनो ! आज तुम किसी लड़की से मिलकर आ रहे हो।"

"म···म···म···वह हकलाने लगा।"

"हाँ—तुम···यह लिबास की बनावट, बालों का सिंगार···चेहरे पर उदासी के स्थान पर खुशी, बातों में नयापन और उसके ऊपर सितम यह कि कमीज़ पर लिपस्टिक के लाल निशान जो अपने मुंह से पूरी कहानी सुना रहे हैं।"

"शारदा···यह···लिपस्टिक नहीं···यह तो लाल स्याही है।"

"महेश और तरह के मामले में धोखा खा सकती हूँ, मगर इस मामले में मैं कभी भूल नहीं करूंगी कि लिपस्टिक और स्याही के रंग में क्या अन्तर होता है ? यदि मैं धोखा नहीं खाती तो तुम्हारे कपड़े से आ रही खुशबू इवनिंग इन पेरिस और आइका फैक्टर की है।"

"शारदा तुम भूल कर रही हो।"

"मैं पहले कह चुकी हूं, औरत हर जगह धोखा खा सकती है, परन्तु ऐसे समय पर वह कभी धोखा नहीं खाएगी, यदि यह सब चीज़ें झूठ हैं तो मेरी सौगन्ध खाकर कहो सच क्या है ?"

"शारदा ! न जाने इन लड़कियों को वहम क्यों हो जाता है ?"

"इसलिये कि हम लड़कियां प्रेम को जीवन समझती हैं, और तुम्हारे जैसे लड़के प्रेम को खेल-खिलौनों से अधिक महत्व नहीं देते।"

"यह बात नहीं शारदा, मैं तो जन्म-जन्म का प्यासा हूँ !"

"आज तो प्यास बुझ गई है न ?"

"नहीं शारदा।"

"महेश मुझसे झूठ बोलने का यत्न न करो ?"

"शारदा वास्तव में यह है कि······"

"हां बोलो···बोलो, सच बोलने में ही लाभ है !"

"मैं सुबह जब कालेज आ रहा था, तो रास्ते में एक पुरानी सहपाठन

मिल गई, जो जबरदस्ती गाड़ी में ग्रा धंसी।"

"फिर कहां ले गई तुम्हें ?"

"अपने घर।"

"उसके घर में कोई नहीं था क्या ?"

"था तो……"

"कौन था ?"

"यह तो मुझे भी पता नहीं, उसकी मम्मी थी अथवा……"

"अब समझी।"

"क्या ?" वह घबराकर बोल उठा।

"यही कि उस लड़की के घर में कोई भी नहीं था।"

"थी तो सही।"

"मैं पूछती हूं कौन थी ?"

"मैं क्या उसके घर वालों, अथवा रिश्तादारों तो जानता हूं ?"

"जानने की जरूरत भी क्या थी ?"

"शारदा, तुम मुझे गलत समझ रही हो।"

"मैं बिल्कुल ठीक समझ रही हूं।"

"क्या तुम मुझसे नाराज हो गई हो ?"

"मैं क्यों नाराज होने लगी, ग्राखिर तुम पर मेरा अधिकार ही क्या है, कल मिली थी। आज रास्ते में मिल गई हूं। कल मिलूंगी भी कि नहीं।"

"ऐसी बातें क्यों करती हो शारदा ?"

"यह सच्ची बातें हैं महेश ! मैं यह भी जानती हूं तुम बहुत अमीर आदमी हो और तुम्हारे लिये इस शहर में लड़कियों की कोई कमी नहीं।"

"लेकिन उन लड़कियों में शारदा नहीं होगी।"

"मेरे होने न होने से क्या अन्तर पड़ता है ?"

"शारदा आकाश पर लाखों करोड़ों सितारे हैं, मगर चांद के बिना

आकाश सूना-सूना लगता।"

"कई लोग चांद की प्रतीक्षा नहीं करते, फिर चांद कौन-सा रोज निकलता है ?"

"वह रोज नहीं निकलता तभी तो उसका इन्तजार रहता है।"

"इन्तजार करने वाले भटका नहीं करते महेश वह केवल इन्तजार करते हैं।"

"तो मैं तुम्हारा इन्तजार करूं।"

"मैं चांद नहीं हूं।"

"मेरी नजरों से देखो शारदा, फिर चांद ने अपने आपको क्या आज तक कभी चांद कहा है।"

"महेश, मुझे इन बातों से बड़ी घृणा है।"

"मुझे क्षमाकर दो शारदा मुझसे भूल हो गई।"

"मैं इस योग्य नहीं, इसलिए ही मैं आपको ऐसी जगह पर लाई हूं ताकि तुम मुझसे घृणा करने लगो।"

"उफ···यहां कितनी भीड़ और गंदगी है।" महेश बड़ी मुश्किल से गाड़ी चला पाता है।

"यही तो दुनिया है, असली दुनिया, तुम्हारी दुनिया से अलग, यह गंदी बस्तियां हैं जिनसे बड़े लोगों को बू आती है, यहीं गंदगी के कीड़े चलते हैं। यहीं पर नफरत की आंधियां चलती हैं, यहीं से अपराध जन्म लेते हैं।"

"शारदा न जाने क्यों तुम ऐसी जगह आना पसन्द करती हो ?"

"क्योंकि मैं ऐसी ही जगह पली हूं, आज इस जगह तुम्हें लाई हूं कि तुम मुझसे नफरत करने लगो।"

"तुमसे और घृणा—यह कैसे हो सकता है ?"

"तो फिर इस जगह से क्यों घबराते हो, हमारा देश ऐसे ही लोगों का देश है, यही लोग इस देश के असली वासी हैं।"

"ये लोग साफ-सुथरी और अच्छी जगह क्यों नहीं रहते ?"

"इनको कौन अच्छी जगह रहने देता है, बड़े लोग इन्हें कहां आगे आने देते हैं।"

"उफ-शारदा...यह कैसे लोग है जिनके बच्चों के शरीर पर कपड़ा नहीं, जो गन्दगी में खेलते हैं, कैसी यह औरत हैं जो सड़कों के किनारे बैठी बच्चों को दूध पिला रही हैं। उनके पास से कैसी बदबू आ रही है," वह नाक चढ़ाता है।

"देख लीं यह औरतें।"

"हां।"

"इनके शरीर नंगे इसलिए नहीं है कि यह फैशन करना चाहती हैं, बल्कि इसलिए है कि ये मजबूर हैं। ये भी औरतों की छातियां हैं जो सड़कों और गलियों में बैठी अपने बच्चों को दूध पिला रही हैं। यह माताएं हैं, और एक वे औरतें हैं जो इन छातियों का बनाव-सिंगार करके दुकानें चला रही हैं।"

'शारदा ! तुम्हें इस जीवन से क्या लेना है, मैं तुम्हें एक कोठी खरीद कर दे सकता हूँ।"

"किस-किसके लिए कोठी खरीदोगे। फिर मैं इस योग्य ही नहीं जो कोठी में रह सकूं।"

"यह मेरे दिल से पूछो शारदा।"

"पहले तो मुझे अपने दिल से पूछना होगा।"

"क्या तुम्हारा दिल मेरे बारे में कुछ नहीं कहता ?"

"यदि कुछ कहता है तभी तो यहां तक लेकर आ।"

"शारदा बस करो अब वापस चलना चाहिए।"

"अभी नहीं, पहले गाड़ी सीधे हाथ को मोड़ो।"

वह गाड़ी को एक तंग-सी गली की ओर मोड़ देता है।

"गाड़ी रोको।"

"वह गाड़ी को रोक देता है।"

"मेरे पीछे आ जाओ", शारदा गाड़ी से उतरकर एक मकान की ओर बढ़ती है, महेश भी बुझे हुए दिल से अन्दर जाता है, उसके मुँह पर शर्म की डोरियाँ नाच रही हैं, ऐसे लगता है जैसे वह परेशान हो।

अन्दर चारपाई पर एक बूढ़ा-सा व्यक्ति लेटा है, जो उन्हें देखकर उठ कर बैठ जाता है, उस चारपाई के साथ ही धरती पर एक औरत मैले से साधारण कपड़े पहने बैठी है। चारपाई के पीछे कुछ छोटे-छोटे बच्चे बैठे पढ़ाई कर रहे हैं। कमरे में कहीं से हवा का गुजर नहीं, इसलिए घुटन है।

"आओ शारदा बेटी तुम आ गई हो।" बूढ़े आदमी की आवाज ऐसे निकलती है जैसे सिसक रहा हो।

"पिता जी, आज मैं आपको एक बड़े आदमी से मिलाती हूँ।" वह महेश की ओर इशारा करती है।

महेश हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, परन्तु उसकी आवाज नहीं निकल पाती।

"आओ, बेटा चारपाई पर ही बैठो। हमारे घर में कोई कुर्सी नहीं है।" बूढ़े आदमी की मजबूरी फिर सिसकी लेती है।

"महेश ! यह मेरे पिता जी हैं, पहले स्कूल मास्टर थे, इनके पढ़ाये हुए लोग न जाने अब क्या-क्या बन गये होंगे···और यह···तुम्हारे सामने सारी तस्वीर है।"

"शारदा बेटी, यह सब भगवान् की देन।"

"पिता जी, यह सब कुछ भगवान् की देन नहीं, इस अन्याय के समाज की देन है। आप एक अध्यापक थे, जिन्दगी भर विद्यार्थियों का जीवन बनाने में लगे रहे। विद्यार्थियों का जीवन बन गया होगा परन्तु आपका जीवन···आपने यह नहीं सोचा कि बुढ़ापे में क्या होगा ? इन बच्चों का भविष्य क्या है ?"

"ठीक है बेटी, अब इन बातों से क्या लाभ है? वह समय बीत गया अब यह भी बीत जायेगा।"

महेश चुप है, बाप-बेटी की बातें सुनकर वह स्वयं हैरान हो जाता है, शारदा का वास्तविक जीवन यह है। वह स्वयं भी नहीं सोच सकता था।

इतनी देर में शारदा चाय की गर्म-गर्म प्याली लेकर आ जाती है। वह शारदा की ओर देखता है, और चाय ले लेता है। इस समय यह चाय उसे बहुत सहारा देती है। वह जल्दी से उसे होंठों से लगा लेता है, गर्म चाय से उसके होंठ जल जाते हैं।

बेटा महेश क्षमा करना हम बाप-बेटी अपनी बातों में उलझ गये।

"कोई बात नहीं पिताजी।" अचानक उसके मुंह से निकल जाता है।

"बेटा महेश मुझे खेद है कि हम आपकी सेवा नहीं कर सकते।"

"यह भी क्या कम है पिताजी!"

"यह कहकर तो तुम मुझे शर्मिन्दा कर रहे हो।"

"शर्मिन्दा तो मैं स्वयं हूं आपके सामने।"

"नहीं बेटा, तुम बड़े आदमी हो।"

"पिताजी, मैं आपके बेटों के समान हूं।"

"भगवान् तुझे बनाये रखे।"

"पिताजी मैं आपके किसी काम तो नहीं आ सकता, परन्तु थोड़ी-सी सेवा का अवसर चाहता हूं।" वह अपनी जेब में से पर्स निकालकर उनकी ओर बढ़ा देता है।

पर्स में बहुत सारे नोट देखकर बूढ़ा अध्यापक घबरा जाता है, और आश्चर्य से महेश के चेहरे की ओर देखता है। "बेटा महेश! ऐसा धन मुझसे दूर रखो।"

"मगर पिताजी मैं आपके बेटों के समान हूं।"

"बेटे से लिया नहीं जाता, दिया जाता है।"

"जब बेटे जवान हो जाते हैं तो लेने में कोई हर्ज नहीं।"

"बेटे कितने बड़े हो जाएँ माँ-बाप के लिए वे छोटे ही रहते हैं।"

"पिताजी यह सब कुछ आपका ही है।"

"भगवान् का है बेटा, इस लक्ष्मी को अपनी जेब में रख लो। मैं जीवन भर सरस्वती का पुजारी रहा हूँ। लक्ष्मी की सवारी उल्लू की है, वह दिन में अंधा रहता है, इसी का प्रभाव लक्ष्मी रखने वालों पर होता है।"

महेश कोई उत्तर नहीं दे पाता, जल्दी से उन्हें नमस्कार करके बाहर आ जाता है। शारदा भी उसके साथ आती है। वह जाती बार उसे अपने पते का कार्ड देकर जन्म-दिन की पार्टी में आने के लिए कहता है।

: १२ :

आज उसके जन्म-दिन की तैयारियाँ हो रही हैं। घर में नये-नये मेह-मान आए हैं। मगर वह किसी से बात नहीं करता, यदि कोई बुला लेता तो हाँ हूँ का उत्तर दे देता है।

अंधेरे...अंधेरे...यही उसके साथी हैं...अंधेरों के सिवा और उसके पास कुछ भी नहीं बचा...परन्तु आज अंधेरों में से एक रोशनी की किरण फूट पड़ी है, यह उसकी है जो बम्बई से आई है। वह आते ही उसे अपनी गोद में ले लेती है और प्यार से उसका मुंह चूमती है, फिर सीने से लगा लेती है। वह अब महसूस कर रहा है, जैसे उसके अन्दर सदियों से जमा जमाव पिघलने लगा है। वह अपने आपको छोटा बालक समझने लगता है।

आण्टी पलंग पर बैठ गई है, वह अब भी उसकी गोद में लेटा हुआ है। वह दुनिया भर के प्यार उस पर निछावर कर रही है, उसका उभरा हुआ सीना उसके गालों से टकरा रहा है। मगर इस सीने में तो कोई बुराई नहीं, इससे तो माँ की ममता टपक रही है, ऐसी ममता जो उसे जीवन में प्रथम बार मिल रही है।

परन्तु यह आण्टी उसे माँ की ममता क्यों दे रही है? इसके उभरे सीने में ममता-सागर क्यों उछल रहे हैं?

वह फिर अपने-आपको छोटा बालक समझने लगता है। उसका बच-

पन वापस आ जाता है। सारे संसार की बुराइयां मर जाती हैं। केवल मां की ममता जीवित रह जाती है।

वह मां के चेहरे की ओर देखता है, जो मां नहीं आण्टी है।

आण्टी नहीं मां है।

मां नहीं आण्टी···आण्टी नहीं मां···उसके अपने हृदय में ही शीत युद्ध आरम्भ हो जाता है। वह उलझ जाता है।

वह महसूस करता है जैसे मां की उभरी छातियां स्वयं बोल उठी हों; इनको ही जबान लग गई है।

"मैं···मां हूं···दोनों छातियां इकट्ठी बोल उठती हैं।"

"मां !" वह अपने-आप बोल पड़ता है।"

"हां मेरे बेटे ?" दुनिया की ममता बोल उठी।

"मां !" वह फिर एक बार कहकर उसकी आंखों में झांकता है।

"हां मेरे बेटे।"

"मुझे दूध दो मां, मुझे भूख लगी है।"

मां अपनी ममता के सागर को उछलते रोक नहीं सकते। वह भी उसके साथ बच्ची बन जाती है, और सचमुच उसे दूध देने लगती है।

उसकी छातियों में सचमुच दूध आ गया था, दूध नहीं यह ममता थी, जो सालों से सीने में दबी पड़ी थी।

"मेरे बेटे···मेरे लाल···मैं अब थक गई हूं, मुझसे अब सहन नहीं होता···अब सबर की सीमा टूट चुकी है।" आण्टी की आंखों में आंसू आ जाते हैं।"

"यह क्या तुम रो रही हो आण्टी···" वह एकदम से उसकी गोद में से उठकर बैठ जाता है।

"यह ममता के आंसू हैं मेरे बेटे ! जो कभी दूध बनकर फूटते हैं, कभी आंसू बनकर।"

"आण्टी सच बताओ तुम कौन हो ?"

"क्या तुम मेरी आंखों में झांककर नहीं देख सकते ? क्या इन छातियों से बहते दूध से कुछ अंदाज़ा नहीं लगा सकते ? क्या अपनी बिलखती हुई आत्मा से नहीं पूछ सकते कि मैं कौन हूं ?"

"तुम मां हो।" वह चीख पड़ता है''' मगर तुम आण्टी क्यों बन गई हो, मुझे मां की जरूरत है'''मां की'''।"

"मजबूरियां यदि मां को आण्टी भी बनाकर रख दें तो मां की ममता चुप नहीं रह सकती, बेटे को प्यार नहीं कर सकती।"

"मां'''।" वह एक बार फिर चीखता है।

"महेश धीरे, यदि तुम्हारी मम्मी-डैडी ने सुन लिया तो मुसीबत आ जायेगी।"

"मुझे किसी की परवाह नहीं।"

"मुझे तो है मेरे बेटे'''मैं जो एक मजबूर, बदनसीब मां हूं। अपने बेटे को बेटा कहकर नहीं पुकार सकती, जिसकी ममता वर्षों से बिलख रही है, मैं वह अभागिन मां हूं जो मां होते हुए भी मां नहीं बन सकती। मैं वह मां हूं जिसकी ममता को खरीद लिया गया है। औलाद को खरीद लिया गया है।"

"मां यह सब क्या है ? मुझे कुछ तो बताओ।"

"अभी इसका समय नहीं आया मेरे बेटे।"

"मां क्या वास्तव में तुम मेरी मां हो।"

"जब स्वयं ही तुम मुझे मां कहकर पुकार रहे हो तो फिर पूछते क्यों हो, क्या यह तुम्हारी आत्मा की आवाज नहीं ?"

"मां मैं तुम्हारी होंठों से एक बार यह सुनना चाहता हूं कि मैं तुम्हारी मां हूं।"

"अभी वह समय नहीं आया," साथ ही दरवाजे पर आहट होती है। "महेश कोई आ रहा है, अब मैं तुम्हारी आण्टी हूं, मां नहीं।" वह जल्दी से संभल कर बैठती है।

यह उसके डैडी हैं, जो सजे-धजे अन्दर की ओर आ रहे हैं।

"महेश अभी तक तुम तैयार ही नहीं हुए।"

"मैं तैयार हूँ डैडी।"

"यह क्या तैयारी है ? तुमने अभी तक कपड़े नहीं बदले। आज तुम्हारा जन्म-दिन है, बेटे।"

"मुझे पता है डैडी ! परन्तु मैं जरा आण्टी से··· ।"

"क्या आण्टी से प्यार की बातें हो रही थीं।"

"हाँ डैडी, यह आण्टी बहुत अच्छी है।"

"क्या बात है कहीं आण्टी ने रिश्वत तो नहीं दे दी।"

"हाँ दी तो है डैडी।"

"क्या दिया है रिश्वत में ? जरा हमें भी तो पता चले।" यह कहकर वह आण्टी के करीब ही पलंग पर बैठ जाते हैं।

"बता दूँ आण्टी।" वह उसकी आँखों में झाँकता है।

"बता दो मुझसे क्या पूछते हो ?"

"डैडी मुझे आण्टी ने रिश्वत के तौर पर प्यार दिया है।"

"वाह···वाह··· ।" डैडी और आण्टी इकट्ठे ही हँस पड़ते हैं। न जाने उस समय डैडी को क्या जोश आता है। वह आण्टी को अपनी बगल में ले लेते हैं।

"आप क्या कर रहे हैं ?" आण्टी घबराकर पीछे हट जाती है।

"ओह क्षमा करना, वास्तव में मुझे महेश की बातों में यह पता ही नहीं चला कि तुम बैठी थीं महेश की मम्मी··· ।"

"महेश, दिल-ही-दिल में नाच उठता है और वह सोचता है, कहीं ऐसा तो नहीं कि डैडी के मुंह से सच्ची बात निकल गई हो। इसी बीच महेश देखता है उसकी मम्मी क्रोध से भरी हुई अन्दर दाखिल हो रही है। उसकी आँखें गुस्से से लाल हो रही हैं।

"कमाल है, बाहर सब मेहमान आ रहे हैं। आप सब लोग कमरे में

बैठे रंगरेलियां मना रहे हैं।"

"आखिर इस कमरे में भी तो महमान बैठे हैं, और नहीं तो तुम्हारी बहन तो मेहमान है।" डैडी बोलते हैं।

"मेरी बहन होती तो मेरे पास बैठती।" वह और कठोर हो जाती है।

"महेश की मम्मी खुशी के अवसर पर गुस्से से काम नहीं लेना चाहिए, आज तो तुम्हारे लड़के का जन्म-दिन है।"

"तो इसका अर्थ है कि मुझे अपने लड़के के जन्म-दिन की खुशी ही नहीं, मैं उसकी मां नहीं।" उसका गुस्सा और बढ़ जाता है।

"हम कब कह रहे हैं?"

देखते-देखते सब उसके कमरे से उठकर चले जाते हैं, वह फिर एक बार अकेला रह जाता है।

: १३ :

अब फिर वह कमरे में अकेला है। अंधेरों का साथी अंधेरों में ही भटकेगा। वह सदा से अकेला है और अकेला ही रहेगा। लोग उससे मिलते हैं, मिलकर बिछुड़ जाते हैं। उसे तड़पाने के लिए अकेला छोड़ जाते हैं। वह फिर इन्तजार करता रहता है। इन्तजार···इन्तजार······ उसके भाग्य में केवल इन्तजार ही आया है।

आज एक औरत मिली जिसके सीने से माँ का प्यार फूट पड़ा। जिसकी सूखी छातियों से दूध की नदियाँ बह निकलीं, जब उससे पूछा कि तुम मेरी माँ हो, तो उसने बड़े प्यार से कह दिया अभी इन्तजार कर?

इन्तजार···इन्तजार···वह झुंझला उठता है।

वह इसी सोच में था कि साथ वाले कमरे से आ रही आवाजों ने उसे चौंका दिया।

"तुम्हें भैया से नहीं मिलना चाहिए था।" यह उसकी मम्मी की आवाज थी।

"बहन, क्या अब मुझे उससे मिलने का भी अधिकार नहीं।" यह आण्टी थी।

"नहीं, नहीं···यह कभी नहीं हो सकता, न होगा, तुमने स्वयं ही मुझे वचन दिया, सौगन्ध खाई थी कि मैं इससे नहीं मिलूंगी।" उसकी मम्मी चीखती है।

"मगर मैंने यह वचन तो नहीं दिया था कि मैं उसे मिलूंगी भी नहीं।"

"उस वचन का अर्थ यही था।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"ऐसे ही जैसे मैं कह रही हूँ।"

"बहन इतना अन्याय न करो।"

"यह अन्याय नहीं एक फर्ज है। तुम्हें तो आज आना भी नहीं चाहिए था।"

"मैंने लाख अपने-आपको रोका मगर यह मन……"

"यह तुम्हारा मन कल को कुछ और भी कर सक सकता है।"

कुछ नहीं करेगा बहन, मैं वचन देती हूँ कि फिर कभी नहीं आऊँगी, मैं तो केवल जन्म-दिन के कारण चली आई।"

"मगर इस जन्म-दिन का तुमसे क्या सम्बन्ध है?"

"बहन यह शब्द कहकर मेरे कलेजे को छलनी करो। मैंने अपने कलेजे का टुकड़ा इसलिए नहीं दिया था।"

"कलेजा का टुकडा मुझे नहीं, अपने मुँह बोले पति को दिया था।"

"मुँह सम्भालकर बात करो बहन।"

"क्यों सच्चाई से इतना डर लगता है?"

"यह सच्चाई नहीं जलन है।"

"मुझे क्यों जलन होने लगी, मैंने कौन-सा किसी का पति छीना है जो किसी से डरूँगी।"

"तुम हद से बढ़ रही हो बहन।"

"मैं हद से नहीं बढ़ रही, तुम्हारे गुनाहों की नंगी तस्वीर तुम्हें दिखला रही हूँ।"

"यह गुनाह नहीं प्यार था।"

"प्यार और वह भी तुम…!" वह खिलखिला पड़ी।

"हाँ-हाँ पूछ लो यह सामने खड़े हैं।"

"इनसे क्या पूछना है? मैं सब जानती हूँ। जिस दिन महेश को

तुम्हारे इस नाटक का पता चल गया तो वह तुमसे और भी घृणा करेगा।"

"बस करो···बस करो···बहुत हो चुका, जितनी पवित्र तुम हो मैं अच्छी तरह जानती हूँ, मेरी जबान न खुलवाओ। एक पति के होते तुम क्या नाटक रचती हो यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ?"

"तुम दोनों पागल हो गई हो।" डैडी चिल्लाते हैं।

"हाँ···हाँ···मैं पागल हूँ···यदि पागल न होती तो प्रेम के ड्रामे आँखों के सामने क्यों देखती?"

"इसमें मेरा क्या दोष है बहन।"

"दोष तुम्हारा नहीं मेरा है क्योंकि मैं माँ नहीं बन सकी।"

"तुम माँ नहीं बन सकी हो यह गलत है। सच यह है कि तुमने माँ बनना पसन्द नहीं किया, क्योंकि इससे तुम्हारी सुन्दरता में फ़र्क पड़ता था। तुम अपने आपको सदा जवान और हसीन देखना पसन्द करती थीं, तुम्हारी यह इच्छा थी कि मैं कभी बूढ़ी न हूँ। मैं सदा होटलों और क्लबों की रौनक़ बनी रहूँ।"

"बेशर्म···कमीनी···अपनी जबान बन्द करो।"—मम्मी एकदम। चिल्ला उठी जैसे सूखी घास के ढेर में आग लग गई हो!

"सचाई इतनी ही कड़वी होती है।"

"सचाई मेरे लिए है, अथवा तुम्हारे लिए भी! यदि यही बात है तुम बताओ किसकी माँ हो?"

"अपने बेटे की।"

"तुम्हारे पति का क्या नाम है?"

"मेरे पति······यह···उसकी जबान लड़खड़ाने लगी···"

"क्यों रुक गई हो। अब तुम्हारी जबान क्यों काँप रही है? तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया, यहाँ चारदीवारी के अन्दर शेर की भाँति यह दहाड़ रही हो। बाहर निकलकर कहो मैं एक माँ हूँ, है हिम्मत यह कहने की। कहो मैं एक माँ हूँ······क्वारी माँ···न मैं विवाहिता हूँ, न

मैं विधवा हूं—लेकिन फिर भी मां हूं।"

"भगवान के लिये दोनों चुप करो, मैं पागल हो जाऊंगा, असली गुनाहगार मैं हूं...मैं...इन गुनाहों की सजा मुझे मिलनी चाहिये।" डैडी की आवाज एकदम गूंजती है, और दब जाती है।

"हाय भगवान...ठाकुर साहब को क्या हो गया ?"

"यह तो चले !"

"मेरा सुहाग मेरे भगवान !"

"दौड़ो...कोई बचाओ !...डाक्टर !...महेश !..."

घर में एक कुहराम मच जाता है, हंसी की महफिल, गम में बदल जाती है। ठाकुर साहब को दिल का दौरा पड़ता है।

चारों ओर आंसू......

फोन करके डैडी के डाक्टर मित्र लांबा को बुलाया जाता है ! वह डैडी की बीमारी को भली-भांति जानते हैं, आते ही वह एक टीका लगाते हैं, और फिर थोड़ी दवाई नाम में डालते हैं। कुछ क्षणों में डैडी को होश आता है।

× × ×

जन्म-दिन की यह पार्टी कितनी रंगीन है। यहां शराब के जाम चल रहे है। भूखे-नंगे देश की जनता के महान लोग क्या कुछ नहीं करते ? ये सब ही बड़े लोग हैं। इनमें कोई भी छोटा नहीं। कुछ की पत्नियां साथ हैं ! जिनके साथ पत्नियां नहीं वह अपनी सुन्दर प्राइवेट सैक्रेटरी को साथ ले आये हैं, यह नारी प्राईवेट सैक्रेटरी भी कितनी अच्छी चीज है। इससे कारोबार भी बढ़ता है। जो कार्य कहीं रुक जाये तो यह उसे जल्दी निकाल लाती है। जिनकी पत्नियां सुन्दर नहीं उन्होंने सुन्दर सैक्रेटरी रख ली हैं।

सुन्दर औरतों को बदसूरत पुरुष रखे हुए हैं, जन्म-दिन की पार्टी में भी चारों ओर कारोबार ही कारोबार है। हर व्यक्ति एक दूसरे से यही

सोचकर मिल रहा है कि इससे कितना लाभ उठाया जा सकता है। महेश इस कारोबारी दुनिया का इन्सान नहीं, वह देख रहा है, इतनी बड़ी भीड़ में उसका अपना कौन है ?

अचानक भीड़ में से उसकी नजरें शारदा को ढूंढ़ लेती हैं, उसका दिल खुशी से उछल पड़ता है जैसे कोई खोई हुई चीज उसे मिल गई हो ! वह भीड़ को चीरता हुआ सीधा उसके पास पहुँच जाता है।

"जन्म-दिन की बधाई हो महेश।" वह हँसकर कहती है।

"तुम्हें भी", वह शारदा को पकड़कर अपने कमरे में ले जाता है।

"शारदा तुमने आकर मुझ पर कृपा की है।"

"कृपा मैंने नहीं तुमने की है महेश, जिसने एक साधारण लड़की को इतनी बड़ी पार्टी में बुलाया।"

"शारदा इस बड़ी महफिल में और सब कुछ है, परन्तु प्यार नहीं।"

"प्यार को धन वाले लोग क्या समझेंगे ?"

"इसीलिये तो मैं तुम्हें देख रहा था।"

"मेरे पास क्या रखा है महेश ?"

"सच्चा प्यार जो धन वाले कभी नहीं पा सकते।"

"मुझे शर्मिंदा न करो महेश, मैं तुम्हारे योग्य कहाँ हूँ ?"

"शारदा मेरा दिल न तोड़ो। अब मेरा इस दुनिया में कोई नहीं।"

"तुम्हारे पास सब कुछ है महेश, मैं ही अभागिन हूँ जो तुम्हें न पा सकूँगी।"

"शारदा तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, जिनसे मेरा दिल टूट जाये ?"

"महेश, यह धन इतनी बड़ी दीवार है जिसे मैं कभी नहीं तोड़ सकूँगी।"

"आकाश के चाँद को पाने की आशा मुझे मिटा देगी महेश।"

"शारदा क्या तुम्हें अपने प्रेम पर विश्वास नहीं ?" यह कहते हुए महेश ने अपनी आँखें शारदा की आँखों में डाल दीं।

उत्तर में शारदा ने भी महेश को प्यार भरी नजरों से देखा, शारदा का पत्थर दिल महेश की आंखों से छलकते प्यार को देखकर पिघल गया, उसने प्यार से अपनी बाहें महेश के गले में डाल दीं।

"महेश।"

"हां शारदा।"

"कहीं मेरा यह हाथ छोड़ तो न दोगे ?"

"जब तक मेरे शरीर में सांस चल रही है शारदा, उस समय तक इस हाथ को कोई अलग नही कर सकता।"

"मैं बेआसरा हूं।"

"मैं तुमसे भी अधिक बे-आसरा हूं। तुम्हें नहीं पता शारदा मैं कितना दुःखी हूं, इस जिन्दगी ने हर कदम पर मुझे धोखा दिया है, हर खुशी मुझसे रूठती आई है, आज मैं अपने जन्मदिन की खुशी में तुम्हें सदा-सदा के लिए अपनाने का वचन देता हूं। देखो सामने महाकवि कालीदास का चित्र है, जिसने शकुन्तला लिखी थी, आज शायद वह अपने नई शकुन्तला लिखने के मूड़ में है जिसका शीर्षक होगा 'शारदा।'

"महेश मैं किताब नहीं बनना चाहती।"

"मैं तुम्हें जिन्दगी दूंगा, नई जिन्दगी…" इतने में बाहर से उसके डैडी पुकारते हैं।

फिर जन्मदिन की पार्टी आरम्भ होती है। केक काटा जाता है। अंग्रेजी में गाया जाता है, "हैप्पी बर्थडे इ यू" भारतवर्ष में जन्म लेने वाले भारती, दासता के चंगुल से शायद अब भी नहीं निकल सके। उन्हें ऐसा करते हुए कुछ शर्म भी तो नहीं आती, जिस देश के वह वासी हैं, उसकी सभ्यता सारी दुनिया से पुरानी और आदर्शवादी हैं, मगर ये क्या जानें ?

पार्टी इस प्रकार समाप्त हो जाती है, महमान घरों को जा रहे हैं, भीड़ में से उसके डैडी आवाज देते हैं, वह डैडी के पास जाता है। उनके

साथ ही एक मोटे-ताजे गंजे से व्यक्ति बैठे हैं। उस व्यक्ति के साथ वाली कुर्सी पर एक सुन्दर-सी लड़की बैठी है, जिसके सिर के बाल बहुत ही ऊँचे उठे हुए हैं, मुंह के ऊपर लगा पाउडर खूब चमक रहा है, गले में सोने का हार, हाथों में अंगूठियां।

मोटा आदमी उसे लड़की के साथ ही बैठने का इशारा करता है। वह जब बैठता है तो महसूस करता है कि लड़की ने जान-बूझकर अपना हाथ उसके शरीर पर रख दिया है।

"महेश, यह हैं ठाकुर बलवन्तसिंह; और यह है इनकी लड़की उर्वशी जो अभी-अभी इंग्लैण्ड से पढ़ाई समाप्त करके आई है।"

वह दोनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।

"ठाकुर साहब यह हैं मेरे इकलौते बेटे महेश!"

"बहुत सुन्दर बड़े होशियार, जैसा बाप वैसा बेटा।"' गंजा आदमी एकदम बोलता है।

"मेरा क्या है बलवन्तसिंह जी, यह अब आपका ही बेटा है।"

"मैंने बेटी देकर ही बेटा लेना है, आप जानते हैं मेरे यहां भी उर्वशी के बिना और क्या है, सारी जायदाद तो उर्वशी की ही है अथवा महेश की।"

"वह तो मैं आपको बहुत पहले वचन दे चुका हूं। अब तो महेश बेटे तुम मेरा भाव समझ गये हो।"

"मैं आपका भाव समझ गया हूं डैडी, परन्तु मेरी उम्र ही अभी क्या है?"

"उम्र का प्रश्न नहीं मेरे बेटे, वचन का प्रश्न है। मेरी हालत तुमने देख ली है, दिल का रोगी हूं किसी समय भी चल दूं, इसीलिए मैं चाहता हूं कि अपनी जिन्दगी में तुम्हारे सेहरा बंधवा दूं।"

"डैडी, जब शादी का समय आयेगा मैं सोचूंगा।"

"महेश, मैं ठाकुर हूं, मेरा वचन कभी झूठा नहीं हो सकता।"

वह यह बात सुनकर खामोशी से चल पड़ता है। उसके सामने ही नीलम खड़ी इन्तजार कर रही है।

"जन्म-दिन की बधाई हो महेश।"

"धन्यवाद !" वह बहुत अन्दाज से कहता है।

"किसे देख रहे हो—?"

"एक महमान को।"

"तुम भी महमान हो—मैं भी महमान हूँ।" उर्वशी बीच में आकर खड़ी हो जाती है।

"ओह, उर्वशी तुम···।"

"हाँ नीलम मैं हूँ।"

"तुम तो इंग्लैण्ड चली गई थीं।"

"तो तुमने समझ लिया कि मैं सदा के लिए चली गई।"

"नहीं यह बात तो नहीं।"

"यह बात न होती तो तुम मेरे मंगेतर पर ही हाथ फेरने की बात न सोचतीं।"

"यह आपके मंगेतर हैं।"

"हाँ नीलम।"

"मगर महेश की तो अभी सगाई नहीं हुई !"

"यह तुम्हें कैसे पता चला ?"

"क्योंकि महेश ने कभी मुझसे ऐसी बात नहीं की।"

"नीलम, लड़के स्वयं ऐसी बातें नहीं बताया करते", उर्वशी महेश के हाथ से खिलवाड़ करती हुई नीलम की ओर देखकर मुस्कराती है।

"उर्वशी, तुम बेकार में महेश पर अपना हक जता रही हो।"

"जिसका हक होता है वह जताता है ! फिर तुम्हें किस चीज की कमी है ?"

"उर्वशी !" नीलम क्रोध से तड़फ उठती है।

"क्यों सचाई इतनी कड़वी होती है ?"

"इस सच्ची बात कहने से पहले अपने गरेबान में मुँह डालकर देखो।"

"मैंने तो देख लिया। अब तुम देखकर स्वयं ही महेश का पीछा छोड़ दो, ताकि मुझे न तुम्हारे बारे में बताना पड़े।"

"जबान बन्द करो उर्वशी !"

"नीलम चिल्लाने से कोई लाभ नहीं। तुम्हारी इज्जत इसी में है कि महेश को भूल जाओ।"

"नीलम ने भूलना नहीं सीखा।"

"मुझे भुलाना आता है।"

"तुमने मेरी बेइज्जती की है उर्वशी।"

"बेइज्जती नहीं की अपना हक माँगा है।"

"मगर मेरा हक इससे पहले है।"

"यह तुम्हारी भूल है।"

"यदि यह बात है तो चलो यह फैसला हम महेश पर छोड़ देती हैं।"

"तुम दोनों ही मुझे भूल जाओ।" महेश यह कहकर आगे बढ़ता है।

"महेश !" नीलम चीखती है।

मगर महेश उसकी आवाज की परवाह किये बिना ही आगे बढ़ता है,

"महेश।"

"मुझे भूल जाओ नीलम।"

"क्या तुमने उर्वशी की बातों पर विश्वास कर लिया ?"

"विश्वास नहीं तो सोचने पर मजबूर हो गया हूँ।"

हा···हा···हा···उर्वशी बड़े जोर से हँसती है।

"उर्वशी ! तुम्हें इस तरह मेरा मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।"

"मजाक तो तुम स्वयं उड़वा रही हो नीलम।"

"उर्वशी ! तुम्हें इससे अच्छा जीवन साथी मिल सकता है।"

"लेकिन तुम्हें इससे अच्छा शिकार नहीं मिलेगा।"

"मेरे ज़ख्मों पर नमक न छिड़को उर्वशी।"

"नीलम, काश ! तुम अपनी जवानी को दुकान न बनातीं, ईश्वर ने जवानी व्यापार करने के लिए नहीं दी, तुमने तो अपने पति···"

"उर्वशी···तुम मेरे प्यार को बदनाम कर रही हो।"

"मुझे नहीं पता था आजकल बाजारू औरतें भी प्यार करने लगी हैं।"

इस बात का कहना ही था कि नीलम ने उर्वशी को गले से पकड़ लिया।

दोनों में हाथापाई शुरू हो गई। एक नया तमाशा शुरू हो गया।

: १४ :

समय गुजर रहा है।

जिन्दगी के अंधेरे लगातार बढ़ रहे हैं। वही घर है, वही नौकर, और वैसे ही नाटक इस घर में रोज हो रहे हैं। केवल इतना अन्तर पड़ा है, अब वह कालेज रोज जाने लगा है। यह शायद शारदा की कृपा थी।

शारदा से पूर्व नीलम ने उसे एक रास्ता दिखाया था। वह जवानी की जरूरत थी। जवानी की प्यास बुझाने के लिए वह रास्ता ठीक था। अब जो शारदा ने रास्ता दिखाया है वह आत्मा की प्यास बुझाती है। कभी-कभी उसे नीलम के बताए मार्ग पर चलने की जरूरत पड़ती। मगर शारदा उसे बड़े प्यार से इस रास्ते से मोड़ लाती। नीलम में और उसमें यही एक अन्तर था।

शारदा से उसने कई बार कहा कि बाजार से अपने लिए कुछ खरीद लो, मगर शारदा ने तो जैसे सौगन्ध खा रखी थी। उसने तो अपनी तमाम इच्छाओं का गला घोंट रखा था। उसे तो उसके प्यार के सिवा दुनिया की किसी चीज की आवश्यकता नहीं थी।

× × ×

आज वह शारदा को साथ लेकर बाग में आया। शारदा को उससे प्रेम है। जो उसकी जिन्दगी है, उसके अर्मान हैं, दिल की धड़कनें हैं। वह उसके करीब ही हरी-हरी घास पर बैठी है।

"शारदा !"

"हाँ महेश !"

"अब तो जी चाहता है हम दोनों शादी कर लें।"

"अभी तुम विद्यार्थी हो। विद्यार्थी शादी से अधिक अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान देते हैं।"

"क्या शादी के पश्चात् पढ़ाई नहीं हो सकती ?"

"शादी के बाद पढ़ाई नहीं गृहस्थी जीवन शुरू हो जायेगा।"

"तो क्या तुम शादी के पश्चात् घर के काम करोगी ?"

"और क्या करूँगी मैं ?"

"शारदा यदि तुम्हारी जैसी लड़कियाँ इस देश में पैदा होने लग गईं तो नौकर लोग तो भूखे मर जायेंगे।"

"भूखे क्यों मरेंगे इनके लिए हज़ारों कार्य हैं।"

"इससे तो हमारे घर का वातावरण ही बदल जायेगा।"

"अवश्य, और उसे बदलने की आवश्यकता भी है।"

"शारदा क्या तुम जानती हो मेरा इस दुनिया में कोई नहीं ?" वह बातों को बदल देता है।

"मैं किसकी हूँ।"

"शारदा, मैं तो डरता हूँ कि किसी दिन तुम भी मुझे न छोड़कर चली जाओ।"

"क्या तुम अपनी शारदा को नहीं समझ सके महेश ?"

"समझा हूँ। परन्तु मेरी शारदा ने अभी मुझे नहीं समझा, इसलिए डरता हूँ !"

"डरना नहीं चाहिए महेश ! तुम कोई अपराधी थोड़े हो।"

"फिर भी कुछ बातें जीवन में ऐसी आ सकती हैं, जो अपराध के बराबर ही हों और इसके पश्चात् तुम मुझसे घृणा करने लगो।"

"नफ़रत और प्रेम दुनिया की बातों से जन्म नहीं लेते, इनका जन्म

तो आत्मा की गहराइयों से होता है और फिर डरना तो मुझे चाहिए क्योंकि मैं गरीब हूं तुम अमीर……"

"गरीब होना कोई अपराध नहीं शारदा ! अपराध उसे कहते हैं जिसे इन्सान मानवता से गिरकर करता है।"

"मैं जानती हूँ, मेरा महेश कभी मानवता से नहीं गिरेगा।"

"यदि वह गिर चुका हो तो ?"

"तो मैं उसे उठाकर सीने से लगा लूंगी।"

"सच शारदा !" वह खुशी से उछल पड़ता है और शारदा को बाँहों में भरकर सारा प्यार निछावर कर देता है।

शारदा तुमने मुझे अँधेरों से निकालकर रोशनी में खड़ा कर दिया है। मैं रोज ही रोशनी की तलाश में निकलता था, एक अंधेरे को रोशनी समझकर उसे गले से लगा लेता था। वह अँधेरे की रोशनी नीलम थी।

"नीलम !" वह हैरानी से पूछती है।

"हां शारदा, वह रोशनी नहीं अँधेरा था, मैंने उसकी जवानी को रोशनी समझा, उसने मेरी दौलत को सहारा। मैं जवानी के नशे में इतना अन्धा हो गया था इस बात को समझ नहीं सका, मैं इस अँधेरे को रोशनी समझकर गले लगाता रहा।"

"लेकिन वह उर्वशी ?"

"उर्वशी को मैंने उस दिन पहली बार ही देखा था। मेरे डैडी का कहना है कि वह मेरी शादी बचपन में ही उर्वशी के डैडी से पक्की कर चुके हैं।"

"तो क्या तुम अपने डैडी का कहना नहीं मानोगे ?"

"शादी मेरी होनी है न कि डैडी की, फिर मैं वह नाटक नहीं रचना चाहता, जो मम्मी डैडी रोज रचते हैं।"

"कैसा नाटक ?"

"यह ऐसा नाटक है शारदा कि जिस दिन इससे पर्दा उठेगा, हमारे

वंश का सर्वनाश हो जायेगा ।"

"महेश ! भगवान के लिए ऐसी बुरी बातें न करो ।"

"मैं ठीक कह रहा हूं शारदा ! यह मम्मी नहीं कोई डाइन है । इस वंश की कहानी बड़ी भयानक है । कोई समय था लोग वेश्याओं से नफरत करते थे । आज यह वेश्यायें घरों में बस गई हैं ।"

"महेश ! तुम अपने मम्मी के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहे हो ।"

"शारदा ! यह मेरी मम्मी नहीं । यह एक कहानी है, जिसे न डैडी बताते हैं न मम्मी ।"

"मगर तुम्हारी मां ?"

"मुझे लगता है मैंने उसे जन्म-दिन की पार्टी पर देखा था ।"

"उसने भी तुम्हें यह कहानी नहीं बताई ।"

"नहीं, उसने अपनी जबान को ताला लगा लिया, मगर सभ्यता छातियों के रास्ते फूटकर सारी कहानी सुना गई ।"

"महेश ! यह सब कुछ क्या है ?"

"अंधेरे ! यहां मैं रहता हूं, वहां अंधेरा-ही-अंधेरा है, यहां रोज नये नाटक रचाए जाते हैं ।" महेश की आंखों में आंसू आ जाते हैं ।

"दिल छोटा न करो महेश !···भगवान सब कुछ ठीक कर देगा ।"

"शारदा ! कहीं तुम तो मुझे न छोड़ दोगी ।"

"मैं तुम्हारी छाया हूं महेश ! मैं तुमसे कभी अलग नहीं हूंगी । मै वचन देती हूं, कि तुम्हारे बिना और किसी से शादी नहीं करूंगी । यदि तुम किसी और के भी हो जाओगे, तो मैं तुम्हारे प्रेम में अपने प्राण दे दूंगी ।"

"नहीं शारदा नहीं, मैं तुम्हारे बिना किसी और का नहीं हो सकता । मैं तुम्हारे और अपने प्रेम की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि यदि मैं मरूंगा भी तो तुम्हारी गोद में ।"

महेश ! मेरे महेश ! मौत का नाम न लो। जो मौत तुम्हारे लिये आयेगी उसे मैं अपने गले लगा लूंगी।"

"मेरी शारदा !" वह एक बार फिर उसे अपनी बांहों में भर लेता है। शारदा भी उससे लिपट जाती है।

साथ ही दूर से किसी मन्दिर में आरती होने की आवाज आती है शारदा की आत्मा के कमल खिल उठते हैं।

"महेश सुन रहे हो यह आवाज।"

"यह आरती की आवाज है।"

"तो फिर क्या देख रहे हो, भगवान ने आज स्वयं हमें बुलाया है, इस खुशी के समय पर हम मन्दिर क्यों न चलें ?"

"चलो शारदा, आज इस नास्तिक को आस्तिक बना दो।"

वे वहां से सीधे मन्दिर आ जाते हैं। वह पहली बार मन्दिर में दाखिल हो रहा है, इसलिए तो हैरानी से हर चीज को देखता है। वहां वह अकेला नहीं उसके साथ के सैंकड़ों लोग हैं, जो भगवान के चरणों में प्रणाम कर रहे हैं। पूजा में मस्त हैं। शारदा ने मन्दिर में प्रवेश करते ही अपने सिर को आंचल से ढांप लिया। वह भी इन सब के साथ मिलकर पूजा कर रही है। वह इस समय शारदा के चेहरे की ओर देखता है। इस समय वह कोई देवी लग रही है। जिसके चेहरे पर बुराई का कोई चिह्न तक दिखाई नहीं पड़ता। यह शारदा नहीं संगमरमर की कोई मूर्ति है।

इस मन्दिर में कितनी शान्ति है ! कहीं बुराई का नाम नहीं। और वह होटल और क्लब हैं जहां गन्दगी के कीड़े रींगते हैं। एक ओर यह मन्दिर है, यहां कोई किसी की बुराई नहीं करता।

आरती···कर रहे लोगों में शारदा भी शामिल हो गई है। जिन्दगी भर थका हुआ राही भी इस आरती में शामिल हो गया है।

कितनी देर तक वह हाथ जोड़े भगवान की मूर्ति के आगे बैठा रहा।

उसे कुछ होश नहीं, उसे यह भी नहीं पता चला कि लोग कब आरती समाप्त कर चुके, कब शंख और घड़ियाल की आवाज बन्द हो गई। शांति···शांति···उसे तो जीवन में पहली बार ऐसी शांति मिली थी। पहली बार उसकी बिलखती-तड़पती आत्मा ने सुख का सांस लिया था।

"प्रसाद ले लो, भक्तो !" पुजारी की प्यारी आवाज उसके कानों से टकराती है और वह आंखों के कमल खोलकर दोनों हाथ पुजारी के आगे कर देता है। प्रसाद लेकर वह अपनी बगल में बैठी शारदा की ओर देखता है।

सामने ही राधा और कृष्ण की मूर्ती हैं ! दूसरी ओर शिवजी-पार्वती के साथ खड़े हैं। वह फिर एक बार हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है ! उसके हृदय से उठती प्रेम और श्रद्धा की भावनाएं पुकार उठती हैं।

'हे—मेरे भगवान्, संसार के स्वामी, त्रिलोकीनाथ ! आज मैं पहली बार तेरे मन्दिर में आया हूं। आज तक मैंने तुमसे कुछ नहीं मांगा, सच पूछते हो तो मेरे पास कभी भी किसी चीज की कमी नहीं थी। मुझे धन की भी कोई इच्छा नहीं। मेरे भगवान मुझे केवल एक चीज चाहिए। वह मैं हाथ जोड़कर तुमसे मांगता हूं। वह है, वह मार्ग जो मुझे यहां तक लेकर आया है, जिसके सहारे मैं तुम्हारे चरणों तक पहुंचा हूं। यह मार्ग मुझे सदा के लिए दे-दे भगवान्, इस मार्ग का नाम शारदा है। मुझे केवल शारदा चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है भगवान् तुम मेरी यह इच्छा अवश्य पूरी करोगे।" यह कहकर वह भगवान् की मूर्ति के आगे झुक जाता है।

इसके पश्चात् वह दोनों इकट्ठे ही मन्दिर से बाहर आ जाते हैं। शारदा के होंठों पर मुस्कराहट नाच रही है। उसके चेहरे का रंग इस तरह साफ हो गया है, जैसे फूलों का मुखड़ा शबनम ने धो दिया है।

"महेश ! तुम तो आज बिल्कुल बदल गए हो।"

"शारदा वास्तव में तुम सच कहती हो ! आज मैं अनुभव कर रहा

हूँ कि मैं बिल्कुल बदल गया हूँ। जो सुख शराब की बोतलें न दे सकीं, और न आवारा लड़कियां दे सकीं, जो सुख मुझे घर में न मिल सका, वह आज मुझे मिल गया। मैं अब सोच रहा हूँ आज तक मैं किन लोगों के बीच में भटकता रहा हूँ। कहाँ-कहाँ ठोकरें खाता-फिरता रहा हूँ, परन्तु आज······"

"रुक क्यों गये महेश, बोलो न ! बोलते जाओ आज तुम्हारी बातों में कितना रस है।"

"यह सब तुम्हारी देन है शारदा।"

"मेरी नहीं उस भगवान् की।"

"उस भगवान् तक पहुँचाने में तुम्हारा ही हाथ है शारदा।"

"क्या वह बुरी जगह थी ?"

"मेरी शारदा, देवी है, वह कभी बुरी जगह नहीं जा सकती। वह यदि अपवित्र स्थान पर भी जायेगी तो वह पवित्र हो जायेगा।"

"बस-बस महेश, मुझे शर्मिन्दा न करो।"

"यह सचाई है शारदा, जो मेरे होंठों पर आ गई है।"

"क्या तुमने भगवान् से कुछ मांगा भी था महेश।"

"हां मांगा था, अपनी शारदा को ! परन्तु तुमने भी तो कुछ मांगा होगा।"

"मांगा था—"

"क्या ?"

"मैं नहीं बताऊंगी।"

"मुझे नहीं बताओगी ?"

"क्या करोगे पूछकर ?"

"यही जो तुमने किया !" वह बच्चों के से अन्दाज से बोला।

"यदि मैं न बताऊं ?"

"तो मैं तुमसे बोलूंगा नहीं।"

"नहीं···नहीं···बताती हूं महेश, लेकिन मुझे शर्म भी तो आती है।"

"इसमें शर्म की क्या बात है, तुमने चोरी थोड़ी की है?"

"हां।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मुझे उस चीज़ की ज़रूरत थी।"

"ऐसी भी क्या जरूरत आ पड़ी कि तुम्हें भगवान् के घर से चोरी करनी पड़ी।"

"वह मेरा महेश था।"

हा···हा···हा···वह बेतहाशा हंसने लगता है।

: १५ :

घर में सुख नहीं था, जो समय कालेज में अथवा कालेज से बाहर शारदा के साथ कट जाता, वह अच्छा होता, जैसे ही रात के साये गहरे होते। उसकी आत्मा पर वहीं अँधेरे छाने लगते। रात तो उसे ऐसी लगती थी जैसे कोई भूत उसकी आत्मा को काबू करने के लिए आ रहा हो। वह पुस्तकों का सहारा लेकर सब कुछ भूलना चाहता था, लेकिन घर के हालात उसे कुछ भी तो न करने देते।

जब डैडी रात को एक नई लड़की को साथ लेकर आते तो उसकी आत्मा के घाव जाते हो जाते, और फिर मम्मी अपने किसी मित्र के साथ बातें कर रही नज़र आ जाती तो……

उसके अन्दर का इन्सान चीखने लगता। महेश भाग जाओ मगर फिर वह सोचता कि ऐसे में कहाँ जाये ? इस घर में एक ही उसका सच्चा साथी है, वह है निहाल चाचा ! उसकी आँखें बता रही हैं वह अपने सीने में इस घर के सारे भेद छिपाये हुए है।

आज भी निहाल चाचा उसके पास बैठा है। वह कुर्सी पर बैठा एक पुस्तक खोले हुए है। यह पुस्तक इतिहास की है, इतिहास शहज़ादा सलीम पर आकर रुक-सा जाता है, वह शहज़ादा सलीम जिसे बाद में इतिहास में "शहनशाह जहांगीर" के नाम से याद किया गया। जो भारत का सम्राट् था। यह शहज़ादा बचपन में अनारकली पर आशिक हो गया, जो एक साधारण बाँदी थी।

शहज़ादा सलीम के दो बड़े भाई पहले ही चौदह वर्ष से कम आयु में दम तोड़ गये थे, केवल इसीलिए कि महलों के बीच सुरा और सुन्दरी दोनों जोरों पर थे। वह बचपन से ही शराब पीने लगे थे, फिर भोग-विलास···इन चीज़ों ने इन्हें समाप्त कर दिया।

इसीलिये शहज़ादा सलीम को बारह वर्ष तक महलों से बाहर रखा गया। मगर फिर भी वह इस आग से न बच सका। आते ही वह अनारकली पर आशिक हो गया।

अनारकली को पा लेना, शहज़ादा सलीम के लिए कोई कठिन नहीं था, परन्तु शाह अकबर को यह बात पसन्द न थी, जबकि स्वयं मुसलमान होते हुए एक हिन्दू लड़की से शादी की।

इतिहास के इस मोड़ पर आकर वह रुक गया, वह कुछ और ही सोचने लगा। प्यार की यह अमर कहानी दूसरी ओर मुड़ गई।

अनारकली बहुत सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता के चर्चे सारे राज-दरबार में थे, अकबर जो कि शुरू से ही सुन्दरता का पुजारी था।

"कहीं ऐसा तो नहीं ? अकबर की अपनी नज़रें ही अनारकली पर हों।"

इतिहास, इस प्रश्न के उत्तर में मौन था, शहज़ादा सलीम और अनारकली के प्रेम ने मुग़ल साम्राज्य की जड़ें हिला दी। इस प्रेम के बदले में अनारकली को जिन्दा जी दीवार में चुनवा दिया गया।

क्यों इस प्रेम की सजा अनारकली को ही मिली ? अकबर ने अपने लड़के के लिए क्यों न यह सजा दी ?

वह स्वयं बड़बड़ाने लगा।

"बड़े सरकार आ गये··· बड़े सरकार आ गये !" कोठी में रोजाना की भांति यह शोर होने लगता है। वह इतिहास की पुस्तक को बन्द कर देता है, क्योंकि नया इतिहास उसके सामने आ गया था। यह जीवित इतिहास है, पुराने शहंशाह समाप्त हो गये, उनकी जगह नये शहंशाह आ

गये। वह बाहर डैडी की ओर देख रहा है।

कार का दरवाजा निहाल चाचा खोलता है। इसके साथ ही उसके डैडी बाहर निकलते हैं। उनके पीछे जो लड़की कार से निकली उसे देखकर तो जानो महेश बैठा-बैठा पत्थर बन गया। जैसे उस पर बिजली गिर पड़ी हो। धरती का सीना फट गया हो। आकाश नीचे आ पड़ा हो।

"उफ''मेरे भगवान्'''यह नीलम है। कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा?" उसने अपनी आंखों को मसलकर वहम दूर करने का प्रयत्न किया।

लेकिन इतनी बड़ी सचाई वहम तो नहीं हो सकती थी।

इतने में नीलम डैडी के हाथों में हाथ डाले, जोर-जोर से कहके लगाती हुई अन्दर की ओर जाने लगी। वह आज महारानियों की भांति सजी हुई थी। उसने वह साड़ी पहने हुई थी जो उस दिन महेश ने ही लाकर दी थी।

उर्वशी ने ठीक कहा था, यह लड़की नहीं वेश्या है। वेश्याएं पहले बाजारों में बिकती थीं। माडर्न समाज में उन्होंने पढ़-लिखकर सोसाइटी गर्ल का रूप धारण कर लिया है! बीते हुए सारे दृश्य एक-एक करके उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। नीलम उसे पहली बार होटल में मिली, फिर उसे घर ले गई। घर में किस बेशर्मी से उसने उसे अपना शरीर पेश कर दिया। क्या कोई भी शरीफ लड़की इस तरह किसी नौजवान को अपने घर ले जाकर अपना शरीर पेश कर सकती है? फिर नीलम उसे इतने बड़े होटल में ले गई जहां कोई साधारण व्यक्ति जा ही नहीं सकता, लेकिन नीलम वहां की एक-एक चीज़ को जानती थी। वह उस तालाब में उसके साथ नहाती रही, अपने शरीर की कीमत के रूप में उसने, सुन्दर साड़ियां खरीद लीं ताकि वह अपने जवानी की दुकान को सजाकर अच्छे मोटे-ताजे ग्राहक फंसा सके।

"नीलम!" दूसरी ओर से उसके डैडी की आवाज़ आती है।

"हां ठाकुर साहब!" नीलम जोर से हंसती है।

"क्यों आज तो तुम खुश हो न, हम तुम्हें अपने घर ले आये।"

"मगर कितने वर्ष के पश्चात्।"

"वह घर किसका है नीलम ?"

"वह भी आपका है, यह तो आपकी कृपा है जो इतनी बड़ी कोठी हमें मुफ्त में दे रखी है।"

"मुफ्त नहीं नीलम तुम्हारी जवानी का इनाम।"

एक चोट और महेश के दिल को लगती है। यह दुनिया क्या है ? यहाँ दौलत की आड़ में कैसे-कैसे शिकार खेले जाते हैं ? उसका दिल डूबने लगता है। सारा शरीर जैसे आग में जल रहा हो, अँधेरा···अँधेरा ···चारों ओर भयंकर अँधेरा···वह फिर एक बार अँधेरे में भटकने लगता है। इतिहास की पुस्तक उसके सामने खुली पड़ी है।

एक ओर शहजादा सलीम खड़ा है।

दूसरी ओर शहनशाह अकबर।

बीच में अनारकली !

इतिहास के पृष्ठ जैसे के चीखने लगे हों···एक नई अनारकली ने जन्म ले लिया है···धोखा···धोखा···इस धोखे का इलाज शराब··· ।"

औरत ?···क्या औरत एक सुन्दर धोखा है ?

नहीं···नहीं···औरत तो शारदा भी है, जो प्यार की देवी है। जो गरीब होते हुए भी अपनी इज्जत को सम्भाले हुए है। जो पराये पैसे को हाथ लगाना भी पाप समझती है, जो सदा कहती है, बड़े लोगों को पैसे पर मान होता है, गरीब को अपनी पवित्र इज्जत का, तभी तो शारदा का बाप इस बुढ़ापे में बच्चे को ट्यूशनें पढ़ा-पढ़ा कर अपना और अपने बच्चों का पेट पाल रहा है।

बड़े लोग···बड़े लोग···यह धन वाले, दौलत के पुजारी···यह तो गन्दगी के ढेर हैं। वह स्वयं इस गन्दगी के ढेर का ही एक भाग है। यह कहकर वह शराब का एक गिलास बिना सोडा मिलाये ही चढ़ा

जाता है।

"छोटे सरकार आज फिर शराब पीने लगे !" निहाल चाचा अन्दर आते हुए पूछता है।

"निहाल चाचा ! यदि इस घर में सांस भी लेना है तो इस जहर का सहारा लेना पड़ेगा। यह घर नहीं पूरा इतिहास है। इस घर के कण-कण में कहानियां छुपी पड़ी हैं।"

"छोटे सरकार ! तुम इन बातों के बारे में क्यों सोचते हो ?"

"इसलिए कि मैं अब बालक नहीं रहा। अब मैं वह भी समझता हूं कि मैं क्या हूं ? यदि तुम नहीं बताते तो क्या है ?"

"मैं क्या बताऊँ छोटे सरकार, मैं तो स्वयं दुखों का मारा हुआ हूं, सच पूछो तो मैं केवल आपके लिये इस नर्क की आग में जल रहा हूं।"

"और साथ में मुझे भी जला रहे हो।"

"आप ही नहीं जल रहे छोटे सरकार, सच पूछो तो इस आग में सारा घर ही जल रहा है और मुझे ऐसे प्रतीत होता है, जैसे इस घर का अन्तिम समय आ गया हो।"

"मगर निहाल चाचा ! मुझे यह तो बता दो कि मैं कौन हूं ?"

"एक इन्सान।"

"लेकिन यह मम्मी कौन है ?"

"मम्मी तुम्हारी मां है छोटे सरकार।"

"झूठ !"...वह चिल्लाकर निहाल चाचा का बाजू थाम लेता है।

"यदि झूठ भी है तो सच मानना पड़ेगा।"

"क्यों ?"

"इसका उत्तर मैं नहीं दे सकता।"

"तुम्हारे सिवा कौन दे सकता है, निहाल चाचा ?"

"भगवान !" वह आकाश की ओर उंगली उठाता है।

"भगवान अपने मुंह से कभी नहीं बोलता, उसको जबान इन्सान

ही बोलते हैं।"

"जब इन्सानों की जबान को ताले लगा दिये जाएं तो वह क्या करे ?"

"विद्रोह।"

"विद्रोह का अन्त जानते हो क्या होता है ?"

"अन्त कुछ भी हो, इससे मेरे दिल की आत्मा को तो शांति मिल जाएगी।"

"इस घर में कभी शांति नहीं आ सकती छोटे सरकार, कभी नहीं।" यह कहता हुआ निहाल चाचा बाहर निकल जाता है।

इसके बाद उर्वशी कमरे में दाखिल होती है।

"हैलो महेश !"

महेश उर्वशी की ओर देखता है, जिसने अधनंगा लड़के जैसा लिबास पहन रखा है।

"ओह हो, शराब से दिल बहला रहे हो।"

"हां उर्वशी !"

"सच पूछो महेश शराब बहुत अच्छी चीज है।"

"क्या कह रही हो उर्वशी ?"

"बहुत अच्छी चीज है यह शराब। लाओ एक गिलास मुझे भी दो।"

"उर्वशी लड़कियों के लिए यह अच्छी नहीं।"

"महेश, तुम भी पुराने जमाने की बातें करते हो। आज आदमी और औरत में क्या अन्तर रह गया है ?"

"नर और नारी का अन्तर दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं मिटा सकती, और नारी इस दुनिया की मां है, जननी है रचना करती है।"

"अरे छोड़ो इन सब बातों को, लाओ मैं पिलाती हूं, आज हम दोनों मिलकर पीएंगे।" नौकर एक गिलास और लाओ।

निहाल चाचा, दूसरा गिलास लाता है, और साथ-ही घूर-घूर कर

उर्वशी की ओर देख रहा है।

उर्वशी दो गिलास शराब के तैयार करती है। एक वह महेश के हाथों में देती है, दूसरा स्वयं होंठों को लगाती है।

एक के बाद दूसरा···तीसरा···चौथा, उर्वशी जाम-पर-जाम चढ़ाने लगी।

"उर्वशी बस करो।"

"नहीं महेश अभी नहीं, आज मैं पहली बार तुम्हारे साथ शराब पी रही हूं, इसलिए जी भर कर पीना चाहती हूं।"

"उर्वशी तुम भूल कर रही हो।"

"नहीं महेश, नहीं···मैं भूल नहीं कर रही तुम मेरे जीवन-साथी बनने वाले हो।"

"उर्वशी ! मैं अभी शादी करना ही नहीं चाहता।"

"तुम नहीं करना चाहते, मगर तुम्हारे और मेरे डैडी तो करना चाहते हैं।"

"शादी मेरी है न कि डैडी की ?"

"डैडी भी तो तुम्हारे हैं।"

"मगर मैं उन्हें साफ कह चुका हूं, यह शादी मुझे पसन्द नहीं।"

"महेश !" क्रोध से उर्वशी का चेहरा लाल हो जाता है।

"उर्वशी ! मैं झूठ बोलने का आदी नहीं।"

"तुम मेरी बेइज्जती कर रहे हो।"

"यह बेइज्जती नहीं अपने दिल की बात कह रहा हूं।"

"यह मेरी बेइज्जती है महेश।"

"यदि तुम इसे बेइज्जती ख्याल करती हो तो मैं मजबूर हूं।"

"महेश तुम्हें इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

"महेश ने जीवन में घबराना नहीं सीखा।"

"उर्वशी ने अपनी बेइज्जती करने वाले को क्षमा करना नहीं सीखा।"

"मैं कभी किसी से डरा ही नहीं।"

"मैं उर्वशी हूँ। समय आने पर इस चीज का बदला चुका कर छोड़ूंगी। मगर इससे पहले तुम्हें एक अवसर और देना चाहती हूँ।"

"शादी दिल का मामला है मुझे एक पत्नी चाहिए सोसाइटी गर्ल नहीं।"

"मेहता जबान बन्द करो।"

"यदि इज्जत का इतना ही ख्याल है तो मेरे पास क्यों आई हो?"

"मैं जा रही हूँ मगर याद रखना यदि तुम मेरे नहीं हो सके तो मैं तुम्हें किसी दूसरे का भी न होने दूंगी।" वह आंखों से आग उगलती हुई चली गई।

: १६ :

अब वह शारदा से स्नेह रखने लगा, इसी के सहारे उसने बी० ए० कर लिया। वह तो ऐसी प्रेम-ज्योति है जिसके सहारे वह जीवन में आगे बढ़ रहा है। जीवन से अंधेरा बारबर दूर हो रहा हैं। शारदा तो देवी जिसकी पूजा में उसे आनन्द आने लगा है।

पूजा, प्यार भी तो एक पूजा है, पूजा का अर्थ है, इन्सान दुनिया की बुराइयों से दूर रहे, प्यार से भी तो यही होता है, दुनिया की सारी बुराइयां समाप्त होने के पश्चात ही प्यार का जन्म होता है। इस प्यार का अर्थ तो केवल वही इन्सान समझ सकते हैं जिन्हें जीवन में कभी शारदा जैसी लड़की का प्यार मिला हो। प्यार ही जिन्दगी है, प्यार ही पूजा है। प्यार कवियों की कल्पना है, कलाकरों की कला है। यदि इस संसार में प्यार न होता तो दुनिया की सारी कला बेजान होती।

'प्यार शारदा है।"

प्यार···इसका दिमाग हजारों वर्ष पुराने मानव इतिहास की ओर चला जाता है, जब इस दुनिया में केवल सुन्दरता की ही पूजा होती थी, सुन्दरता की देवी की पूजा, यूनान, ईरान, मिश्र, भारत के पुराने खंडहर

आज भी चीख-चीखकर कह रहे हैं, इन्सान ने पहले सुन्दरता की देवी की पूजा शुरू की बाद में ईश्वर की।

शारदा ने सच्चा प्यार दिया, जीवन के सारे सुख दिये, नीलम ने उसे धोखा दिया।

× × ×

आज अचानक ही उसकी भेंट नीलम से हो गई, क्योंकि डैडी घर पर नहीं थे, वह सीधी उसके कमरे में चली आई।

"हैलो, महेश!" वह उसके कमरे में आकर कहती है।

वह नफरत से अपने दोनों होंठ सुकेड़ लेता है।

"क्यों मैं इतनी ही बुरी हूँ।"

"यह अपने दिल से पूछो।"

"दिल··· हूँ···यह दिल क्या होता है।" वह हंसती है।

"तुम्हारे जैसी लड़कियों को दिल से वास्ता ही क्या है? तुम्हें दिल से लेना भी क्या है, तुम्हें धन चाहिए धन।"

"महेश! धन के बिना दुनिया का कोई काम नहीं चलता।"

"मैं कब कहता हूँ कि चलता है, मगर शरीर को बेंचकर धन पैदा करने वाले लोग कौन होते हैं?"

"इन्सान!"

"झूठ-धोका-फरेब, तुम अपने गुनाहगार चेहरे पर इन्सानइत की नकाब ओढ़कर बचाना चाहती हो।"

"इस चेहरे को गुनाहगार बनाने में किसका हाथ है?" वह प्रश्न करती है।

"तुम्हारा अपना।"

"यह झूठ है, बिल्कुल झूठ। मुझे यहां तक पहुँचाने में, तुम्हारे डैडी जैसे पुरुषों का ही हाथ है। यह बात याद रखो कि औरत कभी

अपनी इज्जत को नीलाम करके खुश नहीं होती। परन्तु यह पुरुष…"
नीलम की आवाज भर आती है, जैसे वह रोना चाहती हो। मगर आंसू जैसे उसकी पलकों में ही जम गये थे।

"आंसू…यह आंसू ही औरत का सबसे बड़ा धोखा है।"

"मैंने इसीलिए इन्हें पलकों से बाहर नहीं आने दिया, ताकि तुम पुरुष लोग, औरत के इन आंसुओं का मजाक न उड़ा सको। शायद तुम्हें पता नहीं कि इन्सान की आंख से निकला हुआ हर आंसू उसके दिल की गहराइयों से फूटकर निकलता है। जब दुख का बोझ सहन नहीं कर सकता, दिल की आवाज जबान का साथ नहीं दे सकती, तो यह आंसू बनकर आंखों के रास्ते बाहर आ जाता है।"

"यह दुःख दुनिया में किस इन्सान को नहीं नीलम।"

"हर एक के अपने-अपने दुःख हैं। कौन किसी के दुःखों को जानता है, यहां जो भी कीचड़ में गिर जाता है। उसे उठाने का प्रयत्न कोई नहीं करता। हर व्यक्ति इन्सान बनने का यत्न करता है। परन्तु तुम्हारा यह समाज, गिरे हुए किसी इन्सान को गले लगाने के लिए तैयार नहीं।

"गन्दगी के कीड़े, सदा गन्दगी में खुश रहते हैं।"

"इसमें इन कीड़ों का क्या दोष है, आप लोग गन्दगी पैदा ही क्यों होने देते हैं।"

"तुम बहुत हुशियार हो नीलम।"

"मैं हुशियार नहीं महेन्द्र, अभागिन हूं।"

"तुम अभागिन नहीं हो नीलम, मैं ही अभागा था जो तुम्हारे चंगुल में फंस गया।"

"मैं तुम्हें फंसाने नहीं आई थी, फिर मुझे यह पता नहीं था कि तुम ठाकुरजी के पुत्र हो, और जब पता चला, हम बहुत आगे निकल चुके थे।"

"तो…एक तरह से तुम मेरी…"

"महेश...बस करो...भगवान के लिए बस करो। मेरी बीती हुई जिन्दगी की कहानी को नये सिरे से मत दुहराओ। यह ठीक है मैं नीलम नहीं एक दुकान हूं। एक ठेका हूं, एक इम्पोर्ट लाइसेंस हूं, और मेरी यह भूल थी, कि मैंने तुम्हें चाहने का प्रयत्न किया।"

"महेश मैं वह अभागिन लड़की हूं, जिसे इस समाज ने ठेके लेने के लिए प्रयोग किया, इम्पोर्ट लाइसेंस लेने के लिए बेचा गया, एक वस्तु समझकर हर धन वाला मेरे पास आया। मैं तुम्हारे डैडी के पास नौकरी करने आई थी, लेकिन मुझे..." अबकी बार उसके आंसू पलकों का बांध तोड़ कर बाहर आ गये।

"नीलम!" वह उसका हाथ पकड़ लेता है।

"महेश, मैं ठीक कह रही हूं, मैं नफरत के योग्य हूं, मुझे इस समाज में अब प्रेम नहीं मिलेगा। इसीलिए मैंने इस गंदी जिन्दगी को गले लगा लिया। मैं बुरी हूं महेश बहुत बुरी...मैं तुम्हारे योग्य नहीं, मुझे क्षमा कर देना। आज के पश्चात् मैं तुम्हारी जिन्दगी में नहीं आऊंगी। आज केवल अंतिम बार तुमसे मिलने आई हूं। आखिर दिल ही तो है। लाख यत्न के बावजूद नहीं रुक सका, न जाने तुम मुझे क्यों अच्छे लगते हो। ठीक है मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य नहीं, लेकिन तुम मुझसे प्यार का अधिकार कैसे छीन सकते हो?"

"लेकिन नीलम अब मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता।"

"मैं कुछ चाहती भी नहीं। मुझे जीवन में जो मिलना था मिल चुका, प्यार के बदले में आंसू मिल गये। यह भी क्या कम है? मैं एक पुजारिन हूं, मैं पूजा करना जानती हूं। वह पूजा केवल मैं तुम्हारी ही करूंगी। इस आशा पर कि यदि हम इस जन्म में नहीं मिल सके तो शायद दूसरे जन्म में ही मिल जाएं। यही मेरी अंतिम इच्छा है, और मैं अगले जन्म में तुम्हारा इन्तजार करूंगी।

"क्या तुम्हें पुर्नजन्म पर विश्वास है नीलम ?"

"पूरा-पूरा, इस जन्म के गुनाहों को मैं अगले जन्म में धोने का प्रयत्न करूंगी।"

"ओह नीलम······" वह उसे प्यार से चूम लेता है।

"महेश मुझे क्षमा कर देना।"

: १७ :

उसके जीवन में सुख कहां था, जब भी उसने संभलने का यत्न किया कोई नई ठोकर लगी।

एक रात के अर्ध भाग में निहाल चाचा खड़ा उसे झंझोड़ रहा था। उसकी घबराई हुई आवाज उसके कानों में टकरा रही थी।

"छोटे सरकार जल्दी उठो···गजब हो गया।" वह आंखों को मलते हुये उठा···और हैरानी से निहाल चाचा के घबराये हुए चेहरे की ओर देखने लगा।

"क्या हुआ निहाल चाचा।"

"छोटे सरकार, गजब हो गया, बड़े सरकार की तबियत बिगड़ गई है, बीवी जी भी घर पर नहीं।"

"डैडी···!" वह एक चीख मारकर बिस्तर से उठता है, और सीधा डैडी के कमरे की ओर भागता है।

"महेश, तुम आ गये मेरे बेटे," डैडी की आवाज कांप रही है।

"डैडी······।" वह उनके सीने से लिपट कर रोने लगता है।

"रो नहीं बेटा महेश।"

"डैडी, मैं अभी डाक्टर को फोन करता हूं।"

"नहीं बेटा, अब मुझे किसी डाक्टर की जरूरत नहीं।"

"डैडी, आप क्या कह रहे हैं?"

"वही जो समय की आवाज है, अब मैं इस जिन्दगी की कैद से आजाद होना चाहता हूँ। मेरा सफर पूरा हो गया है, मैं मरने से पहले एकान्त में तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। शुक्र है इस समय तुम्हारी मम्मी घर पर नहीं।"

"परन्तु मैं आपके बिना···" उसकी आवाज गले में फँस जाती है।

"बेटा महेश, यह समय इन बातों का नहीं रहा। मैं अपराधी इंसान हूँ। मैंने जीवन भर कोई अच्छा काम नहीं किया। मरने से पहले मैं अपनी आत्मा का बोझ हल्का करना चाहता हूँ, शराब···शराब···!"

महेश ने पास पड़ी हुई बोतल में से शराब की कुछ बूंदें उनके गले में उँडेल दीं। उनकी रुकी हुई आवाज फिर चलने लगी।

"बेटा महेश, मेरे करीब आओ।"

"मैं आपके पास बैठा हूँ डैडी, आप घबरा क्यों रहे हैं?"

"तुम्हारी और अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा भेद बताने से पहले मैं घबरा रहा हूँ और डर भी रहा हूँ शायद तुम मरते समय अपने डैडी से नफरत न करने लगो। मगर अब मेरे पास कोई चारा भी नहीं रहा, अगर मैं इस भेद को सीने में लेकर मर गया तो मेरी आत्मा को कभी शान्ति नहीं मिलेगी।"

"ऐसा कौन-सा भेद है डैडी, जिसने आपको इतना बेचैन कर रखा है?"

"वह भेद है बेटा तुम्हारे जीवन का। तुम यह जानकर हैरान रह जाओगे कि यह मम्मी तुम्हारी मम्मी नहीं है।"

"तो मेरी माँ कहाँ है डैडी?"

"वह जो आण्टी उस दिन आई थी, वह तुम्हारी असली माँ है। वह इस समय बम्बई में है।"

"डैडी," वह हैरानी से बोलता है।

"हाँ बेटा, यह मेरी भूल समझो अथवा एक बाप की बदनसीबी जो

औलाद को तरसते हुए एक लड़की का हो बैठा, उस लड़की की कोख से तुमने जन्म लिया और तुम अपनी असली मां के बेटे न होकर इस मम्मी के बेटे कहलवाये। ठीक है तुम्हारी मां मुझे आज तक अपना पति मानती है। दुनिया को दिखाने के लिए हमने शादी नहीं की, इसके विपरीत हम पति-पत्नी हैं।"

"डैडी !"

"मेरे बेटे, अब इन बातों का समय गुजर चुका है, अब मेरी मौत बिलकुल निकट आ चुकी है, मुझे पता है तुम्हारी मम्मी तुमसे प्यार नहीं करती और न करेगी। इसलिए मैंने अपनी दौलत का बटवारा पहले ही कर दिया है। सात करोड़ रुपये की सम्पत्ति तुम्हारे नाम कर दी है। इसके सारे कागजात तुम्हारी असली मां के पास हैं। उसका पूरा पता निहाल के पास है और मेरी डायरी में भी लिखा है। मैं अपराधी हूँ बेटे।"

"डैडी, अब इन बातों को भूल जाओ।"

"थोड़ी देर में मैं इस सारी दुनिया को ही भूल जाऊंगा। केवल थोड़ी देर जब तक मैं तुमसे दिल की बात करना चाहता हूँ तब तक मेरी सांस चल रही है। अब तुम्हें इस दुनिया के हवाले करके जा रहा हूँ। अभी तुम नाबालिग हो। केवल छः मास में तुम बालिग हो जाओगे। उसी समय सारी सम्पत्ति तुम्हें मिल जाएगी। तब तक तुम्हें दो हजार रुपये मासिक खर्च के लिए मिलते रहेंगे।"

"डैडी, मुझे इस धन की जरूरत नहीं..."

"इस धन की ही तुम्हें आवश्यकता पड़ेगी......मुझे एक ही दुःख है कि मैं तुम्हारी शादी न कर सका,...हालांकि उर्वशी के डैडी ने बहुत कहा।"

"उर्वशी जैसी लड़की से मैं शादी नहीं करना चाहता डैडी।"

'तुम्हारी अपनी पसन्द भी तो कोई होगी ?"

"हां है।"

"वह कौन है ?"

"एक गरीब घराने की लड़की जिसका नाम है शारदा।"

"गरीब और अमीर को भूल जाओ मेरे बेटे, बस जितनी जल्दी हो सके शादी कर लेना, ताकि शादी के बाद तुम्हारी औलाद अथवा पत्नी इतनी बड़ी जायदाद के मालिक बन सकें, नहीं तो···यह लोग···कुछ···कर···बैठेंगे"···इसके पश्चात् उनकी आवाज रुक गई···आंखों की पुतलियां धीरे-धीरे चलने लगीं।

'डैडी !" वह चीख उठा।

लेकिन डैडी के गले से आवाज न निकल सकी, वह महेश का हाथ अपने सीने से लगाकर सदा के लिए शान्त हो गये।

"डैडी···डैडी···" वह जोर-जोर से चिल्लाकर रोने लगा।

"छोटे सरकार अब यहां कुछ नहीं रहा···बड़े सरकार चले गये।"

"निहाल चाचा," उनके पांव में सिर रखकर धाड़ मार-मार कर रोने लगा।

इसके साथ ही कोठी में चारों ओर चीख और पुकार शुरू हो गई थी।

ठाकुर साहब सारी खुशियां साथ लेकर चले गये थे, जीवन मृत्यु में बदल गया था।

: १८ :

डैडी ने ठीक कहा था, मेरे मरने के पश्चात् विचित्र प्रकार के झगड़े खड़े होंगे। नये-नये हालात पैदा होंगे। तुम्हारा इस कोठी में कोई साथी न होगा।

सब हालात बदल रहे हैं, मम्मी एक नया रूप धारण कर रही हैं, डैडी की मौत के साथ ही उसके रिश्तेदारों की एक फौज-सी इस कोठी में इकट्ठी हो गई है, वह सब-के-सब उसे घूर-घूरकर देखते हैं।"

वह अपने-आपको इस कोठी में अजनबी-सा महसूस करता है। अकेला जिसका कोई साथी नहीं, निहाल चाचा ही केवल एक ऐसा व्यक्ति था जिसको वह अपना समझ सकता था, लेकिन मम्मी के रिश्तेदार जो अपने-आपको इस जायदाद का मालिक कहते, वह निहाल चाचा को भी सुख की सांस न लेने देते। इनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने कभी भूलकर नौकर न रखा था। कार की शक्ल तक नहीं देखी होगी, किराये के किसी छोटे कमरे में रहते होंगे।

परन्तु यहां आकर तो वे सबके सब खानदानी रईस बन गये थे। नौकरों के ऊपर ऐसे हुक्म चलाते जैसे वे ठाकुर साहब से भी बड़े हों। जरा-सी दूरी पर भी यदि उन्होंने जाना होता तो कार के बिना नहीं जा सकते थे। उनको इतना भी तो नहीं पता था कि कौन-से कमरे में

कौन-सा काम करना है, सोने के कमरे में खाना चल रहा है। खाने के कमरे में सारा दिन बच्चे शोर मचाते रहते, कीमती सोफासैट जिनको डैडी ने कभी किसी को छूने तक नहीं दिया था, उन पर वह जूते समेत चढ़ जाते। यह घर क्या था अच्छा खासा तबेला बन गया था।

वह कर भी क्या सकता था। सब कुछ देखकर खून के घूंट पी लेता। उसके अपने कमरे की हालत खराब थी, जिन चीजों को वह जिन्दगी से अधिक प्यारी समझता था, उन चीजों को पांव की ठोकरें मारी जाती थीं। अनमोल पुस्तकों को फाड़-फाड़कर फेंक दिया जाता।

हालात का चक्कर इसी तरह चल रहा था। वह दिन-रात दिये की भाँति जलता रहता। वह अपने ही घर में अजनबी-सा बन गया था।

अब उसका सहारा फिर शराब बन गई थी। शराब पिये बिना वह घर में एक मिनट भी नहीं बैठ सकता था। वह कई बार सोचता मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए। दूर...बहुत...दूर...जहाँ यह सब लोग न हों...यह झगड़ न हों...।

वह आज भी यही सोच रहा था, सहमा उसके कमरे में मम्मी दाखिल हुई। वह आज मुस्करा रही थीं, शायद उसने अपने कमरे में पहली बार हँसते देखा था।

"महेश!" यह मम्मी की आवाज है।

"हाँ मम्मी!" वह बे दिल से उत्तर देता है।

"महेश तुम्हें क्या हो गया है मेरे बेटे, तुम कभी मुझसे नहीं बोलते। किसी से बात भी नहीं करते, हर समय उदास-उदास रहते हो।" मम्मी उसके करीब ही सोफे पर बैठ जाती है।

"नहीं मम्मी, ऐसी तो कोई बात नहीं।" वह अपनी आत्मा के दुःख को छुपाने का असफल यत्न करता है।

"बेटा महेश, अपनी मम्मी से कुछ छुपाने की मत कोशिश करो,

मैं तुम्हारी मां हूं, औलाद के दु:ख मां की आंखों से कभी ओझल नहीं रह सकते।" यह कहकर मम्मी उसे अपनी गोद में ले लेती है और सिर में उंगलियां फेरने लगती है।

इतनी बड़ी तबदीली पर वह स्वयं हैरान होता है। वह सोच रहा है यह पत्थर कैसे पिघल गया। इन शोलों ने शबनम का रूप कैसे धारण कर लिया है, इसमें अवश्य कोई भेद है।

"महेश!"

"हां मम्मी।"

"सुना है मरने से पहले तुम्हारे डैडी ने जायदाद के कुछ कागजात तुम्हें दिये थे।" मम्मी के अन्दर का स्वार्थ बोल पड़ता है।

"नहीं मम्मी, डैडी ने मुझे ऐसा कोई कागज नहीं दिया।"

"मुझे वकील ने बताया है कि उन्होंने मरने से पहले ही सारी जायदाद दो भागों में बांट दी है, उसके हिसाब से आधी तुम्हें मिलेगी आधी……।"

"मुझे डैडी ने नहीं बताया मम्मी, क्योंकि मेरे से पहले ही वह रुक-रुककर सांस ले रहे थे।" मम्मी की शैतानी आंखें उसे झूठ बोलने पर मजबूर कर देती हैं।

"तुम सच कहते हो महेश।"

"हां मम्मी।"

"फिर वे कागजात कहां गये, मैंने घर का एक-एक कोना छान मारा, मगर कहीं उनका नामानिशान नहीं मिलता।" मम्मी एक ठंडी आह भरती है और सोच में डूब जाती है।

"इन बातों का मुझे कोई पता नहीं?"

"मुझे ऐसा लगता है महेश कि वे कागजात किसी दुश्मन के हाथ लग गये हैं।"

"मम्मी, भला मेरा भी कोई दुश्मन हो सकता है।"

"तुम नहीं जानते बेटा महेश, करोड़ों की जायदाद है, तमाम दुश्मनों की नजरें इस जायदाद पर लगी हुई हैं। सब लोग जानते हैं कि इस सारी जायदाद के मालिक हम दोनों ही हैं और तुम्हारी मौत के पश्चात्···उफ मेरे भगवान मैं भी कैसी मनहूस बात कह गई······।"

मगर महेश मम्मी की आंखों में से सारी कहानी पढ़ लेता है। उसकी हर बात मे धोखे की बू आती है, उसकी हर अदा से धोखे की बू आती है। वह जो बात कहना चाहती थी कह चुकी, यानी यह जायदद मेरी मौत के पश्चात् सारी उसे मिल जाएगी।

तो क्या मम्मी उसकी मौत की बातें सोच रही है। वह दिल-ही-दिल में कांप उठा। मम्मी इस समय उसे जहरीली नागिन लग रही थी, जिसका फन उसे डसने के लिए आ रहा था।

वह घबराकर उसकी गोद में उठ खड़ा होता है।

"क्यो क्या हुआ महेश ?"

"कुछ नहीं मम्मी, कुछ नहीं।" वह घबराहट पर काबू पाने का यत्न करता है।

"बेटा महेश, मैंने तुम्हारे इन दुखों का इलाज सोच लिया है।"

"मेरे दुखों का इलाज ?"

"हां बेटा अब तुम जवान हो गए हो, जवानी में हर आदमी को तनहाई का साथी चाहिए।"

"मम्मी मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"यह तो मैं जानती हूं, इसलिए मैंने तुम्हारे लिए एक लड़की देख ली है। सुमन···सुमन···", वह आवाज देती है।

एक लड़की कमरे में आती है और आते ही उसके साथ लगकर बैठ जाती है, सुमन के आते ही मम्मी उठकर बाहर चली जाती है।

सुमन सरककर और उसके करीब आ जाती है, उसका उभरा हुआ सीना उससे टकरा रहा है।

"महेश, तुम कितने अच्छे हो—कितने सुन्दर···कितने जवान···मैं भी जवान हूँ। यह जवानी के क्षण दुबारा वापस नहीं आते। तुम मेरे जीवन साथी बनने जा रहे हो।"

वह चुप है, यह नाटक उसकी समझ से बाहर है। सुमन उससे प्यार की बातें कर रही है। पहली ही भेंट में वह प्यार भी कर बैठी।

यह अवश्य ही मम्मी की कोई चाल है?

"महेश···मेरे अच्छे महेश···मुझे अपना बना लो।" सुमन उसको अपनी बाँहों में भर लेती है।

"नहीं···नहीं···सुमन···नहीं···नहीं···।" वह एक झटके के साथ सुमन से अलग हो जाता है।

"महेश···मेरे प्यार को न ठुकराओ।"

"सुमन यह प्यार नहीं धोखा है, धोखा। तुम इस धोखे की एक कड़ी हो। मम्मी ने तुम्हें गलत मार्ग बताया है।"

सुमन की आँखें झुक जाती हैं औरत और सब कुछ सहन कर सकती है, अपनी जवानी की बेइज्जती नहीं।

"महेश तुम इतनी संगदिल न बनो।"

"मैं संगदिल नहीं सुमन एक इन्सान हूँ, मैं किसी लड़की की इज्जत लूटना नहीं चाहता। मैं किसी को धोखा नहीं देना चाहता। मैं चाहता तो तुम्हारे सुन्दर शरीर को रौंद सकता था, परन्तु इससे क्या लाभ होगा, तुम एक लड़की हो जो किसी की अमानत हो। किसी-न-किसी नौजवान से तुम्हारी शादी अवश्य होनी है। कम-से-कम अपने होने वाले पति से तो धोखा न करो।"

"लेकिन महेश मैं तुमसे शादी करना चाहती हूँ।"

"मुझसे नहीं, मेरी दौलत से।"

"महेश तुम गलत समझ रहे हो, वास्तव में मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"

"मैं तो अभागा हूँ सुमन, मुझे आज तक कोई प्यार नहीं मिला, मुझे केवल नफ़रत मिली है नफ़रत—और मैं इस नफ़रत को दुनिया भर में बाँटता फिर रहा हूँ।"

"मुझे तुम्हारी नफ़रत से भी प्यार है महेश! मैं इस नफ़रत को भी प्यार समझकर गले लगा लूंगी, केवल एक बार हाँ कह दो महेश, केवल एक बार......तुम्हारी हाँ में मेरी जिन्दगी है।"

"मैं किसी को धोखा नहीं देना चाहता सुमन—मजबूर हूं मजबूर... मेरे अपने वश में कुछ भी नहीं। डैडी की मृत्यु के पश्चात् मैं बिल्कुल थक गया हूँ...मेरा सब कुछ समाप्त हो चुका है। मुझे इस दुनिया में कोई भी अपना नजर नहीं आता...मैं इस दुनिया से दूर चला जाना चाहता हूँ बहुत दूर जहाँ कोई नहीं हो।

"जहाँ प्यार के नाम पर स्वार्थ के नाटक न रचाये जाते हों। जहाँ अपनेपन की आड़ में शिकार न खेले जाते हों। जहाँ धन के लोभी शरीर का व्यापार न करते हों। जहाँ इन्सान-इन्सान के खून का प्यासा न हो। जहाँ कोई माँ अपने बेटे के लिए तड़पती हो।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी महेश।"

"तुम मेरा साथ नहीं दे सकोगी सुमन, तुम मुझे नहीं चाहती हो, मेरी दौलत को चाहती हो। तुम्हें मुझसे प्यार,नहीं मेरे धन से प्यार है।"

"यह झूठ है महेश—झूठ...मैं तुमसे प्यार करती हूँ, यदि प्यार न करती होती तो इस समय तुम्हारे पास क्यों आती?"

"तुम नहीं आई हो सुमन तुम्हें मम्मी ने भेजा है, तुम मुझसे प्यार नहीं करती हो, तुम झूठ बोलती हो।"

"नहीं ! यह झूठ नहीं बोलती···तुम्हारी भूल है महेश", अचानक ही मम्मी कमरे में प्रवेश करती है।

"मम्मी आप !" महेश हैरानी से पूछता है।

"हाँ मैं ! क्यों मेरा आना बुरा लगा है ?"

"नहीं मम्मी, यह बात तो नहीं।"

"फिर हैरान क्यों हो गये ?"

"वैसे ही मम्मी······बस···यही···", उसकी आवाज़ गले में ही फँस जाती है।

"महेश ! मेरे बेटे···मुझे समझने का प्रयत्न करो, मैं तुम्हारी माँ हूँ। मैं तुम्हारा भला चाहती हूँ। मुझसे तुम्हारे ये दुःख नहीं देखे जाते, तुम्हारी उदासी नहीं देखी जाती, तुम्हारी आंखों में आँसू नहीं देखे जाते···मेरे बेटे······"

मम्मी उसे अपनी गोद में भर लेती है।

"धोखा···फरेब···चालबाजी···" महेश मन-ही-मन में बोलने लगता है। वह अनुभव करता है यह माँ की गोद नहीं। यह माँ कैसी है जिसकी गोद में सौम्यता ही नहीं। जिसके सीने में माँ प्यार ही नहीं, जिसके आँखों से सौम्यता के प्यार के सागर नहीं छलकते।

"यह माँ नहीं है स्वार्थी है।" उसके अन्दर का इन्सान चीखता। परन्तु वह चुप है, कुछ नहीं बोल सकता, उसकी आवाज़ गले में ही फंस कर रह जाती है। उसका दम घुटने लगता है, जैसे वह किसी कैदखाने में फंस गया हो, वह बेबस है मजबूर है···उसे अपने डैडी की याद आती है, सामने दीवार पर टँगी डैडी की तस्वीर को देखकर उसके आँसू निकल आते हैं।

"तुम रो रहे हो महेश !" मम्मी का झूठा प्यार बोलता है और वह जीवन में पहली बार उसे सीने से लगाकर आँसू पूछती है।

"तुम्हारे इन ही दुःखों को देखकर तो मैंने सुमन को तुम्हारा जीवन साथी बनाने का फैसला किया है।"

"सुमन !"

"हाँ जी···"

"जाओ महेश के साथ घूमने जाओ···इसके साथ जाकर कोई फ़िल्म देखो, क्लब में जाओ···ध्यान रखना महेश मेरा बहुत लाडला बेटा है। इसका दिल बहुत कोमल है।"

"नहीं मम्मी मैं कहीं नहीं जाऊँगा।"

"क्यों भूल कर रहे हो मेरे बेटे, सुमन का दिल न तोड़ो, यह बेचारी तो तुम्हें बहुत चाहती है, तुम्हारे लिए रातों को उठकर रोती रहती है, मैं तो इसे समझा-समझाकर थक गई हूँ। मगर यह कहती है यदि शादी करूँगी तो महेश से नहीं तो जीवन भर क्वारी रहूँगी, बस महेश के नाम की माला जप कर अपना जीवन व्यतीत कर दूंगी, अब तुम ही बताओ कि ऐसे समय में मैं क्या कर सकती हूँ ?"

"परन्तु मम्मी मैं तो अभी शादी नहीं करना चाहता, अभी तो डैडी की चिता की राख भी ठंडी नहीं हुई, मैं अभी से शादी के बारे में सोच-कर उनकी आत्मा को कष्ट नहीं देना चाहता।"

"महेश मरने वाले मर जाते हैं, पीछे वाले तड़पते रहते हैं, रोते रहते हैं, आँसू बहाते हैं, मगर इस सब के पश्चात् भी मरने वाले कभी वापस नहीं आते।"

"वह नहीं आते उनकी याद तो आती है।"

"मरने वालों की यादों में क्या रखा है ? फिर यह पागलपन नहीं तो और क्या है कि मरने वालों के साथ मरा जाए, देखो महाकवि काली-दास ने क्या कहा है।"

"जिन्दगी केवल आज का नाम है।"

"कल नाम की कोई चीज़ इस दुनिया में नहीं।"

"मम्मी वह कालीदास थे, कवि थे, मैं महेश हूँ, वह कल्पना में उड़ते

थे और अपनी कला के सहारे जीते थे. मेरे पास तो जीने का कोई साधन नहीं ।"

"तुम्हारा साधन सुमन जो है, तुम इसे पहचानो; इसे समझो, यह जिन्दगी है, यह औरत है, लड़की है, सुन्दर है, इसके शरीर में जवानी का रस है, वह रस जिसके सहारे तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो जाएँगे, सारे दुःख समाप्त हो जाएँगे ।"

"नहीं मम्मी—नहीं······मैं अभी कुछ नहीं चाहता ।"

"महेश तुम पत्थर क्यों बनते जा रहे हो ?" मम्मी एक बार चीखती हैं ।

"मैं पत्थर नहीं मम्मी मजबूर हूँ ।"

"तुम मजबूर नहीं धोखेबाज़ हो—धोखेबाज़ फरेबी···जैसा बाप था वैसा ही बेटा···" मम्मी क्रोध से भरी हुई बोलती हैं ।

"मम्मी·········"

"चुप रहो······"

"मम्मी डैडी को कुछ न कहो, उनकी चिता की राख को मत गन्दा करो । मुझे जो इच्छा हो कह लो लेकिन डैडी को कुछ न कहो······"

"क्यों डैडी का प्यार बहुत जाग पड़ा है ।"

"इसे प्यार कहो मम्मी अथवा कुछ और मगर मरने के पश्चात् हर इन्सान अपनी अच्छाई-बुराई साथ ही ले जाता है ।"

"वह साथ नहीं ले गये तुम्हें दे गये हैं ।"

"वह अपनी जगह थे मैं अपनी जगह हूँ, उनका और मेरा क्या जोड़, वह महान् थे ?

"मैं ही पतित हूँ न तुम्हारी नज़रों में ।"

"मैंने यह कब कहा मम्मी···?"

"महेश, तुमने क्या कहा क्या नहीं कहा, कान खोलकर सुन लो, तुम्हारी शादी यदि होगी तो सुमन से होगी···वर्ना याद रखो मैं बहुत बुरी हूँ···मैं तुम्हारी शादी कहीं नहीं होने दूंगी, आखिरी बार कहती हूँ···

तुम पछताओगे महेश······तुमने आज सुमन को नहीं ठुकराया मुझे ठुकराया है। मैं वह औरत हूँ जो किसी से हार नहीं मानती। तुम्हें इस घर में रहना है तो मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"क्षमा करना मम्मी मैं इस घर में रहने का मूल्य अपनी भावनाओं को बेचकर नहीं चुका सकता···"

"यह सोचना अब मेरा काम है, यह कहते हुए वह बाहर निकल गई।"

: १६ :

एक अनजाना-सा भय उसकी आत्मा पर सवार होता जा रहा है, घर का सारा वातावरण बदलता जा रहा है। उस दिन के पश्चात् से मम्मी की नज़रें बिल्कुल ही बदल गई हैं; मम्मी के रिश्तेदारों में से उसका भाई मानसिंह घर की हर चीज का प्रधान बन गया है। सुना है इससे पहले वह किसी गांव में रहता था, जब उसे यह सूचना मिली कि उसकी करोड़पति बहन विधवा हो गई है, तो वह भागा हुआ आया।

मानसिंह बहुत ही निर्दयी प्रकार का आदमी था। उसकी आँखें बड़ी ही भयंकर और कातिलों जैसी थीं। महेश ने कई बार नोट किया कि वह उसे बुरी तरह घूरता रहता है। जब भी कभी शारदा उससे मिलने आती तो वह कमरे के चक्कर काटता रहता है।

इसके साथ ही जो तब्दीली इस घर में आयी वह उर्वशी का रोज का आना-जाना था। फिर सुमन के साथ उसकी मित्रता इन सब चीजों ने घर का सारा वातावरण भयानक कर दिया था। यह घर नहीं शीत युद्ध का मैदान बन गया था। एक ओर शत्रु की सारी फौजें उस पर हमला करने के लिए तैयार खड़ी थीं, दूसरी ओर वह अकेला था। अब तो घर में उससे कोई बात भी नहीं करता। शारदा···केवल शारदा ही इस भयानक अंधेरे में एक रोशनी की किरण नजर आती, वह कुर्सी पर बैठा महाकवि

कालीदास के चित्र को घूर रहा है, उसके साथ ही रविन्द्रनाथ टैगोर का चित्र जो गीतांजलि का सारा ज्ञान अपने होंठों पर लिये बैठे हैं। जब शारदा नहीं होती तो यह तस्वीरें उसका साथ देती हैं। इन तस्वीरों के साथ ही एक नई तस्वीर और लग गई है, वह उसके डैडी की है, मौत के पश्चात् इन्सान एक तस्वीर ही तो रह जाता है, तस्वीर ही उसकी याद है।

मौत···इसकी कल्पना से ही उसकी आत्मा कांप उठती है, उसकी आत्मा पर मौत का डर सवार हो जाता है, वह मौत से नहीं डरता, जिन्दगी को उसने सदा खेल समझा- परन्तु आज मौत की परछाइयाँ उसकी जिन्दगी पर कैसे पड़ने लगीं। अपने आप यह ख्याल उसे कैसे आ गया, वह आज डर कैसे गया, उसे मौत के नाम से ठंडे पसीने कैसे आ गये। उसे अपने आपसे ही डर-सा लगने लगा है।

इतने में दरवाजे पर आहट होती है, वह और भी डर जाता है। परन्तु जब वह शारदा को देखता है तो उसकी आत्मा के कमल खिल उठते हैं, जैसे मौत ने जिन्दगी का रूप धारण कर लिया हो। उसके उदास होंठों पर खुशी की लहर दौड़ जाती है।

"ओह—शारदा···मेरी शारदा···मुझे बचा लो शारदा···अपने महेश को बचा लो," वह उससे बच्चों की भांति लिपट जाता है।

"क्या हुआ महेश तुम इतने घबराये हुए क्यों हो ?"

"शारदा यहां मेरा दम घुटता है, चलो यहां से भाग चलें।"

"यह तुम्हें आज क्या सूझ रहा है ?"

"यही, जो मेरी आत्मा की आवाज है।"

"मगर हमें भागने की क्या जरूरत है ?"

"समय और जीवन की पुकार यही है।"

"मगर तुम उस घर से ही डर रहे हो जहां तुम्हारी मम्मी है, मामू हैं और रिश्तेदार हैं।"

"शारदा···तुम नहीं जानतीं···यह मम्मी ही तो मेरी जान की

शत्रु है।"

"महेश ! मुझे तुम्हारी कोई बात भी तो समझ नहीं आ रही।

"शारदा ! मरने से पहले डैडी मुझे सात करोड़ की सम्पति दे गये हैं, जो मुझे कुछ ही दिनों में मिलने वाली है। मम्मी वह सब कागजात प्राप्त करना चाहती है ताकि वह किसी तरह भी इस सारी सम्पति की मालिक बन जाय। वह मम्मी···और मेरी माँ···यह मम्मी जो धोखा है, फरेब है···वह केवल इस जायदाद को पाने के लिए मेरा खून करेगी क्योंकि मैं डैडी की एक दासता का लड़का हूँ, जो अकेला इस सारी जायदाद का मालिक बनूंगा···"

"तो यह सब जायदाद के झगड़े हैं ?"

"हां, यह धन के पुजारी हैं, यहां इन्सान की कोई कदर नहीं। यहां इन्सान नहीं बसते, शैतान बसते हैं। मुझे ऐसी दुनिया में ले चलो शारदा जहां धन के पुजारी न रहते हों, जहां प्रेम हो खाली प्रेम।"

"महेश ! तुम इतना डरे हुए क्यों हो ?"

"शारदा, मेरी आत्मा कांप रही है। मुझे ऐसे लगता है, जैसे मैं इस दुनियां में कुछ दिनों का ही मेहमान हूं।"

"नहीं···नहीं···महेश, भगवान के लिए, मौत का नाम न लो, दिल छोटा न करो।'

"दिल तो अब रहा ही नहीं, अब तो एक ही अंतिम इच्छा है कि मरने से पहले तुमसे शादी कर लूं।"

"यदि तुम्हारी यह इच्छा है तो मुझे इन्कार नहीं, परन्तु इसके लिए पिताजी से आशीर्वाद तो लेना होगा।"

"लेकिन मैं तो आज ही शादी करना चाहता हूं।"

"यह कैसे हो सकता है।"

"मेरे जिन्दगी के लिए क्या तुम इतना भी नहीं कर सकती हो ?"

"तुम्हारे ऊपर मैं अपनी जिन्दगी तक न्योछावर कर सकती हूं। मैं भारतीय नारी हूं। मेरा पति ही मेरा भगवान् है, और मैं हृदय में तुम्हें अपना पति धारणा कर चुकी हूं।"

"महेश !" एक कड़कती हुई आज उसके कानों से टकराती है। इसके साथ ही वह अपने मामू मानसिंह को खड़े देखता है।

"क्या है मामाजी—" वह शारदा से दूर हट जाता है।

"यह घर है या कोई वेश्याओं का बाजार ?"

"आपकी जबान से ये शब्द शोभा नहीं देते।"

"अब इस घर का मालिक मैं हूं, और मैं नहीं चाहता कि इस घर में प्रेम के झूठे-सच्चे नाटक रचाये जाएं।"

"इस घर के मालिक आप नहीं, मैं हूं मामाजी।"

"जबान बन्द करो।" वह क्रोध से कड़क उठते हैं।

"मामाजी, आपको इस भांति बोलने का कोई अधिकार नहीं।"

"मुझे पूरा अधिकार है, यह मेरी बहन का घर है।"

"बहन का ही घर है, आपका तो नहीं ?"

"मैं बहन की ओर से सारी जायदाद का मालिक बना दिया गया हूं।"

"मैं डैडी की ओर से आधी जायदाद का कानूनी मालिक हूं।"

"कहां हैं वे कागजात, जो आपको मालिक सिद्ध करते हैं ?"

"मेरे वकील के पास।"

"वकील के पास नहीं हैं।"

"समय आने पर सब कुछ मिल जायेगा।"

"वह समय नहीं आयेगा।" वह क्रोध से दांत पीसते हुये कमरे से बाहर चले जाते हैं।

महेश उनका वह इशारा बड़ी अच्छी तरह समझ जाता है, शारदा भी हैरानी से एक-एक बात पर ध्यान कर रही है, वह समझ गई है, कि महेश ने जो भी कहा था वह गलत नहीं है, इस घर में अब इसका कोई

नहीं रहा। इसे एक सच्चे साथी की जरूरत है।

"देख लिया यह सारा नाटक!" वह शारदा से पूछता है।

"सब कुछ देख लिया।"

"अब क्या ख्याल है?"

"काश! मेरे अपने वस में यह सब कुछ होता, परन्तु फिर भी मैं प्रयत्न करूंगी, कि हम बहुत जल्द एक हो जाएं, तुम्हारा यहां अकेला रहना खतरा से खाली नहीं।"

"लेकिन कब शारदा?"

"बहुत जल्द, महेश···बहुत जल्द···मगर यह बात याद रखना यदि कोई ऐसी-वैसी बात हो भी जाये तो शारदा का दरवाजा तुम्हारे लिए सदा खुला रहेगा।"

"शारदा!"

"महेश! शारदा···सदा तुम्हारी है, तुम्हारी रहेगी, अच्छा मुझे आज्ञा दो काफी देर हो गई है।"

"नहीं शारदा मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।"

"महेश मुझे जाना ही होगा। तुम्हारी हालत देखकर तो मुझे भी डर लगता है, कैसी यह जिन्दगी है···यहां मौत···।"

"शारदा जीने-मरने की बातों से कुछ नहीं होगा, मुझे तो ऐसे लगता है कि इस घर में बहुत बड़ा नाटक होने वाला है, भयंकर नाटक जो इस घर का अन्तिम नाटक होगा, जैसे महाभारत का युद्ध हुआ था।"

"यह तुम कैसी बातें कर रहे हो महेश! कैसा युद्ध, क्या ऐसे घरों में कभी युद्ध हुआ करते हैं?"

"शारदा तुम नहीं जानती हो,तुम्हें इस बात का शायद ज्ञान नहीं कि इस संसार में युद्ध सदा तीन ही चीजों के लिए होते रहे हैं।"

"वे कौन-सी चीजें हैं?"

दौलत—औरत—धरती और कमाल तो यह है कि इस घर में

तीनों चीजें इकट्ठी हो चुकी हैं। अब युद्ध की तैयारियां पूर्ण रूप से हो चुकी हैं···एक ओर सब हैं दूसरी ओर हम दोनों।"

"महेश अन्त में विजय हमारी होगी।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो शारदा ?"

"इसलिए कि हम अपने धर्म पर हैं, जीत धर्म की होती है, पापियों का सर्वनाश होता है।"

"शारदा यह सब कहने की बातें हैं, यह कलयुग है, यहां अब हर चीज उलटी होती है, यहां अधर्म ही का राज है, पापी फल-फूल रहे हैं, धर्म वाले मिट रहे हैं।"

"परन्तु यह सब कुछ कब तक रहेगा ?"

"इसके बारे में क्या बता सकता हूं ?" मेरी तो एक ही इच्छा है। हां शारदा···केवल एक ही इच्छा यही कि तुम्हें सदा के लिए अपना बना लूं। तुम्हारे घर के दुःख देखकर मेरा मन दुखी हो रहा है, मैं तो यही चाहता हूं कि तुम सब लोग यहीं आ जाओ। मैंने अपने जीवन में कोई अच्छा काम तो नहीं किया शायद यही अच्छा कार्य अन्तिम बार मेरे हाथ से हो जाए।"

"क्या कह रहे हो महेश तुम···तुम्हें क्या हो गया है, ऐसे बात तुम क्यों कहते हो जिससे दूसरे का दिल टूट जाए, यदि तुम ही ऐसी बातें करोगे तो मेरा क्या होगा ?"

"शारदा—ह चीज दिल के साथ-पलती है, और मुझे नजर आ रहा है मेरा सब कुछ समाप्त हो चुका है। अंधेरी रातों में मेरी आत्मा अपने-आप पुकारने लगती है। महेश तुम पर दुःखों के पहाड़ टूटने वाले हैं। तुम बचा लो अपने-आपको···भाग जाओ यहां से नहीं तो," उसकी आवाज गले में फंसकर रह गई।

"तुम्हें वहम हो गया है महेश।"

यह वहम नहीं शारदा मेरी आत्मा की आवाज है और इन्सान की आत्मा कभी झूठ नहीं बोलती, यह तो वह ज्ञान है जो इन्सान को भविष्य का पता देता है।

"महेश ! मैं तुम्हें कैसे समझाऊं, तुम्हारी हालत देखकर मेरा-अपना दिल डूब रहा है यदि मेरे बस में हो तो मैं तुम्हें कभी अकेला छोड़कर न जाऊं मगर मैं मजबूर हूं महेश···।"

"शारदा।"

"हां महेश।"

"क्या तुम कुछ दिनों के लिए मेरे यहां नहीं रह सकती हो—"

"हा···हा···हा," शारदा जोर से हंसती है।

"क्या बात तुम हंस क्यों रही शारदा ?"

"तुम्हारे अनाड़ीपन पर।"

"मैंने कोई बुरी बात कह दी है—"

"बुरी तो नहीं अनहोनी जरूर है।"

"क्या यह अनहोनी है ?"

"हां !"

"यह अनहोनी कैसे है ?"

"कभी कोई कुंवारी लड़की, कुंवारे लड़के के साथ शादी से पहले एक ही स्थान पर रातों को रह सकती है क्या ?"

"क्या, सुमन···नीलम लड़कियां नहीं हैं ?"

"ये बड़े घरों की लड़कियां हैं महेश।"

"क्या बड़े घरों की लड़कियां-लड़कियां नहीं होती ?"

"यदि वह लड़कियां-लड़कियां बन सकतीं तो फिर तुम मुझसे ही प्यार क्यों करते"—यह कहकर शारदा महेश की आंखों में झांकने लगती है।

महेश के दिल की धड़कनें एक दम तेज हो जाती हैं, उसके हाथ

बेकाबू हो जाते हैं··· ।

शारदा, वास्तव में एक लड़की है, उसके पास पवित्र प्यार है, ऐसा प्यार जो नीलम के पास नहीं, सुमन के पास नहीं, उर्वशी के पास नहीं ···सच्चा प्यार··· ।

वह शारदा को अपनी बाहों भर लेता है ।

शारदा उससे लिपट जाती···।

Library
Pratap College
SRINAGAR

: २० :

रात के दूसरे पहर में निहाल चाचा घबराया हुआ कमरे में दाखिल होता है—

"छोटे सरकार··· छोटे सरकार !" वह उसे झंझोड़ रहा है।

"उठो···उठो···जल्दी उठो···इस घर में एक तूफान उठने वाला है,···भयंकर तूफान है।"

"कैसा तूफान···" निहाल चाचा···वह घबराकर उठता है।

"भयंकर तूफान, जो केवल आपके खून का प्यासा है, साथ ही आपकी मौत के सारे सामान पूरे हो चुके हैं। इस घर की हर चीज आपकी दुश्मन है। छोटे सरकार···यहां से भाग चलें···छोटे सरकार···भाग चलें।"

"लेकिन कहां ?"

"इतनी बड़ी दुनिया में क्या कोई जगह नहीं छोटे सरकार···?"

"जिन अभागों को अपने घर में जगह नही मिली उन्हें बाहर कहां जगह मिलेगी ?" उसके दिल से ठंडी आह निकलती है।

"महेश इन बातों का समय नहीं रहा।"

"जो भी है, मैं क्या कर सकता हूं ?"

"छोटे सरकार मान जाओ।"

"क्या मानूं, क्या न मानूं मेरा तो दिमाग काम नहीं करता, निहाल चाचा, मैं थक गया हूं। ऐसा लगता है कि मेरी मौत इस घर में होनी है। इस मौत को अब कौन टाल सकता ?"

"आप टाल सकते हैं छोटे सरकार।"

"वह कैसे?"

"जायदाद के जो कागजात बड़े सरकार तुम्हारे नाम करके दे गए हैं, वे इन लोगों को दे दो।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"यह नहीं हो सकता तो ये लोग आपको नहीं छोड़ेंगे।"

"वे कागजात इनको देने के पश्चात् तो मैं वैसे ही मर जाऊँगा। क्यों न फिर बहादुरों की मौत मरूं?"

"छोटे सरकार भगवान् जाने इस घर का क्या अन्त होने वाला है?"

"अन्त कुछ भी नहीं निहाल चाचा इस घर को अपने ही गुनाहों की सजा मिलने वाली है।"

"वह सजा आपको ही क्यों मिले?"

"मैं भी तो इसी घर का एक व्यक्ति हूँ।"

"नहीं! नहीं···छोटे सरकार, आप इन लोगों में से नहीं हैं। आप इनके साथ नहीं मिल सकते।"

"हूँ, तो इन्हीं का एक साथी, इन्हीं के साये में पला हूँ।"

"छोटे सरकार! आप क्यों नहीं समझ रहे, क्यों नहीं चले जाते?"

"मैं इस घर का अन्त अपनी आँखों के सामने देखना चाहता हूँ।"

"भगवान जाने आप इस घर का अन्त देखना चाहते हैं, या यह घर आपका अन्त देखना चाहता है।"

"बात दोनों ओर से एक-सी है।"

"आप गलत समझ रहे हैं छोटे सरकार, ये सब लोग संगदिल हैं, ये आपको जीवित नहीं छोड़ेंगे। वे केवल आपके सोने का ही इन्तजार कर रहे हैं।"

"मेरी मौत यदि ऐसे ही लिखी है, तो उसे कौन टाल सकता है? तुम जाकर सो जाओ निहाल चाचा।"

"मैं नहीं सो सकता छोटे सरकार ! मैंने तुम्हें अपने हाथों से पाला है। मैं नहीं चाहता मेरे बच्चे का खून मेरी आँखों के सामने हो।"

"यह खून कौन करेगा ?"

"मानसिंह, जो कंस है, उसके साथ सुमन, उर्वशी, तुम्हारी मम्मी, यह सब मिलकर तुम्हारा खून करेंगे, और इसके पश्चात् पुलिस को यह कहा जाएगा, तुम बचपन से विलासी, शराबी थे। इसके कारण तुमने आत्म-हत्या कर ली है। इस चीज की गवाही, सुमन और उर्वशी, बहुत अच्छी तरह दे सकती हैं।"

"निहाल चाचा क्या यह सच है ?"

"मैं अपने कानों से सब कुछ सुन आया हूँ। मेरे कान धोखा नहीं खा सकते और सुनो तुम्हारी आत्म-हत्या को पक्का करने के लिए सुमन, उर्वशी से प्रेम-पत्र भी लिखवा लिए गए हैं।"

"इसका अर्थ है, कहानी का पूरा पलाट बन चुका है।"

"इसमें भी अब कोई सन्देह है।"

"मौत…मेरे सामने मौत खड़ी है…यह दौलत ही मेरी मौत होगी …ये लोग मुझे नहीं छोड़ेंगे…इन संगदिल लोगों के हाथों बचकर मैं अब कहीं नहीं जा सकता।" वह डैडी की तस्वीर के आगे रुककर रोने लगता है।

इन्सान चाहे कितना भी दिलेर क्यों न हो, अपनी मौत को सामने देखकर एक बार तो काँप जाता है। उसकी मौत तो अब सामने खड़ी थी, लेकिन अब वह कर क्या सकता था।

"मुझे बचा ले भगवान…बचा ले और नहीं तो मेरी शारदा के लिए बचा ले…उस बेचारी का इस दुनिया में कोई नहीं…तू उसी के सच्चे प्यार की लाज रख ले भगवान। मैंने जीवन भर तुमसे कुछ नहीं माँगा केवल अपनी शारदा को ही माँगा है,…बस आज एक बार फिर उसे माँग रहा हूँ—शारदा…बस इसके सिवाय मुझे कुछ नहीं चाहिए…"

"मेरे भगवान् उसके दोनों हाथ प्रार्थना के लिए उठे हुये हैं, और आंखों से गर्म-गर्म आंसू निकल कर गालों पर लगने लगते हैं।

आज जीवन में वह पहली बार वह पूजा के रूप में बैठा है, पूजा करते-करते न जाने कब उसकी आंख लग गई।

× × ×

सोये हुये अचानक जैसे वह भयानक स्वप्न देखता है, जैसे किसी ने उनके सीने में गोली मार दी हो। वह चीख मारकर उठ खड़ा होता है। यह चीख जैसे उसके गले में ही फंस कर रह गई हो।

जब वह आंखें खोलकर देखता है, तो यह स्वप्न नहीं बल्कि सत्य था, वह भागकर कमरे की बत्ती जलाता है।

सामने मौत का दृश्य देखकर वह कांप उठता है। उसके होश भी गुम हो जाते है।

मौत उसके सामने खड़ी मुस्करा रही है।

"हा······हा······हा······हा······हा······डर गये मौत से।" सुमन बड़े जोर से मुस्कराती है।

वह खामोश है। उसकी जबान दिल का साथ नहीं दे रही। वह यह जानता है, यह सोची समझ साजिश है।

सहसा उसे सुमन के साथ उर्वशी भी दिखाई देती है।

बदला···बदला···बदला···

"महेश ! तुमने हमारे प्रेम को ठुकराया था न, आज हम तुम्हें ठुकराने आई हैं। आज हमारा दिन है।"

"बुला लो अपनी शारदा को।" सुमन कहती है।

"शारदा नहीं तो उस वेश्या नीलम को बुला लो।" उर्वशी बोली।

वह उसी तरह चुप है।

"खामोश क्यों हो रंडी की औलाद बोलो ! आज तो तुम्हारा अंतिम समय आ गया है। आज तुम्हारा वास्तव रूप भी हमारे सामने आ गया

है। आज तुम्हारी मौत सामने खड़ी है, बुला लो यदि कोई तुम्हारी सहायता करने वाला है।"

"मेरा साथी, मेरा, सहारा केवल मेरा भगवान है।"

"भगवान···यह नास्तिक आज आस्तिक कैसे बन गया? आज मौत को देखकर भगवान् तो याद आया!"

"जिसका इस दुनिया में कोई न हो उसका भगवान् ही होता है," वह पूरी शक्ति से बोलता है।

"भगवान्···हा···हा···अब तुम्हारा भगवान् भी तुम्हें नहीं बचा सकता···वह पत्थर का भगवान् तुम्हें क्या बचायेगा जो अपनी इच्छा से चल भी नहीं सकता।"

"तो फिर देख क्या रही हो चला दो गोली?"

"सोच रही थी, कि अंतिम बार तुम्हारी भोली-भाली सूरत के दर्शन कर लें, और यदि कोई तुम्हारी अंतिम इच्छा हो उसे भी सुन लें।"

"मेरी अंतिम इच्छा अब कोई नहीं रही।"

तड़ा···तड़ा···तड़ा···दोनों पिस्तौलें से गोलियां निकालती हैं, कमरा धुएँ से भर जाता है।

एक चीख कमरे में सुनाई देती है।

इसके साथ ही दूसरी चीख···

"महेश भाग जाओ···भाग जाओ।"

हाय यह तो नीलम की आवाज है, वह खून में लत-पत फर्श पर पड़ी तड़प रही है।

इसके साथ ही निहाल चाचा की लाश पड़ी है।

खून···खून···चारों ओर खून···

"महेश! भाग जाओ···पिछली खिड़की से कूद जाओ।"

नीलम की सिसकती आवाज फिर सुनाई देती है।

"मैं दूसरी दुनिया में तुम्हारा इन्तजार करूंगी महेश।"

वह पिछली खिड़की से कूद कर तेजी से भागता है, उसने महसूस किया कि उसके पीछे भी कोई भागा आ रहा है।

यह उसका मामा मानसिंह है।

वह और तेज भागना शुरू कर देता है।

पीछे से एक गोली चलने की आवाज आती है। यह गोली उसके बाजू को चीर कर पार निकल जाती है। बाजू से खून के फवारे छूट पड़े, परन्तु वह और तेजी से भागने लगा।

भागते…भागते…वह शारदा के दरवाजे पर पहुँच गया…शारदा जो उसके इन्तजार में दरवाजे पर अपनी बाहें फैलाये खड़ी है। वह उसकी गोद में बेहोश होकर गिर पड़ा है।

"मेरे महेश ! शारदा प्यार से बोलती है……?"

"शारदा………।"